निसि जागत है प्रीति की रहै इतनी सकुच नाहिने तोहि ॥ १ ॥ अब कहा आयुस होतु है मोकों तुम ही तो सुहाग के बर आवेस बसोहि। मोहि कहा तेरोई प्रवीन प्रीतम सुख पावे सोई करो 'गोविंद' प्रभु अपने कंठ राखि तू पोहि ॥ २ ॥ ❀ ४४८ ❀ राग केदारा ❀ आज बनी कुंजेस्वर रानी। चिकुर चारु सिर सिथिल सगबगी अरु विविध कुसुम बेनी बानी ॥ १ ॥ नैन सुरङ्ग गिरिधर रसमाते कमल खंजन सोभा बिलखानी। 'गोविंद' प्रभु तू न्याय बस करे धनि-धनि विधाता सो अपुनी चातुरी सकल तोमे आनी ॥ २ ॥ ❀ ४४९ ❀ राग केदारा ❀ स्याम कपोलनि में कनक कुंडल झांई। कुंचित कच बीच राखी जु चंपकली अरुझाई ॥ १ ॥ विस्वमोहन तिलक देखत मनमथ रह्यो लुभाई। 'गोविंद' प्रभु पर कोटि चंद वारों हो कीरती जुन्हाई ॥ २ ॥ ❀ ४५० ❀ राग विहाग ❀ मिले पिय सांकरी गली। मदनमोहन पिय हँसि गहि डारी मोतिन चंपकली ॥ १ ॥ वारिज वदन देखि उमगि चली री घूंघट में न समात नैन अली। 'गोविंद' प्रभु दंपती परस्पर रहे रसमत्त रली ॥ २ ॥ ❀ ४५१ ❀ राग विहाग ❀ सिखवत केतिक रात गई। चंद उदे बरु दीसन लाग्यो तू नहिं और भई ॥ १ ॥ सुनि हो मुग्ध कह्यो नहिं मानत जोभी हिरदै कई। 'परमानंद' प्रभु कों तू नहिं मिलत तो प्रतिकूल दई ॥ २ ॥ ❀ ४५२ ❀ राग बिहाग ❀ तेरे सिर कुसुम बिथुर रहे भामिनी सोभा देत मानों नभ-घन तारे। स्याम अलक छूटि रही री बदन पर चंद छिप्यो मानो बादर कारे ॥ १ ॥ मोतिन माल मानों मानसरोवर कुच चकवा दोऊ न्यारे। 'धोंधी' के प्रभु तीनलोक बस कीने तैं बसि किये आली नंददुलारे ॥ २ ॥ ❀ ४५३ ❀ राग बिहाग ❀ विधाता विधी हू न जानी। सुन्दर बदन पान करन कों रोम-रोम प्रति नैनां दिये क्यों न करी यह बात अयानी ॥१॥ श्रवन सकल वपु जो होत री कबहीं जब सुनत पिय मुख अमृत मधुरी बानी। भुजा कोटि-कोटि होती तो भेटति

‘गोविन्द’ प्रभु तऊ न मन अघाय सयानी ॥ २ ॥ ❀ ४५४ ❀

❀ राग बिहाग ❀ वदनकमल पर बैठे मानों युगल खंजरी । ता ऊपर मानों मीन चपल अरु तापर अलकावली गुंजरी ॥ १ ॥ अरु ऐसी छबि लागे मानों उदित रवि निकर फूली किरनि कदंब मंजरी । ‘गोविन्द’ बलि-बलि सोभा कहांलों बरनौं मदन कोटि दल गंजरी ॥ २ ॥ ❀ ४५५ ❀

❀ तीसरी आरती ❀ राग बिहाग ❀ मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटिक वारों री माई । जिहिं जिहिं अंगनि दृष्टि परत है तहिं तहिं रहत लुभाई ॥ १ ॥ अलक तिलक कुंडल कपोल छबि एक रसना मोपै बरनी न जाई । ‘गोविंद’ प्रभु की या बानिक पर बलि-बलि रसिक-चूडामनिराई ॥ २ ॥ ❀ ४५६ ❀

❀ राग बिहाग ❀ लाडिली न माने लाल आपु पाउं धारो । जैसे हठ तजे प्यारी जतन बिचारो ॥ १ ॥ बातें तो बनाय कही जेती मति मेरी । कैसे हू न माने लाल ऐसी त्रिया तेरी ॥ २ ॥ अपुनी चोंप के काजे सखी भेख कीनो । भूखन बसन साजे बीना कर लीनो ॥ ३ ॥ ठाडी स्यामा कुंजद्वार चकित निहारी । कोन गांव बसति हो रूप उजियारी ॥ ४ ॥ गाम तो है नंदगाम तहां की हों प्यारी । नाम तो है स्यामा सखी तेरे हितकारी ॥५॥ कर सों कर जोरि स्यामा निकट बैठाई । सप्त सुरनि मिलि सुलप बजाई ॥ ६ ॥ रीझि मोतिहार चारु उर पहिरावे । हमारो सांवरो भटू ऐसें ही बजावे ॥ ७ ॥ जोई जोई चाहो बलि सोई मांगि लीजे । यह दान मांगू सांवरे सोई दान कीजे ॥ ८ ॥ मुख सों मुख जोरि स्यामा दर्पुन दिखायो । निरखि छबीली छबि प्रतिबिंब लजायो ॥ ९ ॥ छल तो उघरि आयो हँसि पीठ दीनो । ‘नंददास’ प्रभु प्यारी आंकों भरि लीनो ॥ १० ॥ ❀ ४५७ ❀

❀ कार्तिक सुदी १२ ❀ मंगल भोग आये ❀ राग ललित ❀ सखी मोहि सोनो सीतल लाग्यो । मिलि रस रंग प्रेम आतुर ह्वै चार जाम जुग जाग्यो ॥१॥ करि मनुहारि बहोरि हों पठई अधर सुधारस मांग्यो । ‘रसिक’ प्रीतम पिय वे

बहुनायक तेरे प्रेम-रस पाग्यो ॥ २ ॥ ❀ ४५८ ❀ राग ललित ❀ रेन विदा होंन लागी । घट गई जोति मंद भये तारे फूल वासना पागी ॥ १ ॥ सोने सजि सिंगार किये हैं अपुने प्रीतम संग जागी । 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों नंदनन्दन अनुरागी ॥ २ ॥ ❀ ४५९ ❀ राग खट ❀ पाछली रात परछांहि पातन की रंग भीने कृष्ण जू डोलत द्रुम-द्रुम तरनि । बने देखत बने लागि अद्भुत मने जोति की सोति सों निकसि रहे सब धरनि ॥१॥ कृष्ण के दरस कों अंग के परस कों महा आरति भरी चली मज्जन करन । नूपुरनि धुनि सुनत थकित सी व्है रही परि गयो दृष्टि गोपाल सांवरे वरन ॥ २ ॥ जरकसी पाग पर मोर चंद्रिका बनी कमलदल नैंन भुव बंक छबि मनहरन । धाई धमि भरन कों रस वचन कहन कों आवनी बताय छबि सों धारत चरन ॥ ३ ॥ रोम रोम रमि रह्यौ मेरो मन हरि लियो नांहि बिसरत वाकी झुकनि मे भुज भरनि । कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु रंग रंगीली लाज तजि परी परवस परनि ॥ ४ ॥ ❀ ४६० ❀ राग खट ❀ आज नन्दलाल मुखचंद नैनन निरखि परम मंगल भयो भवन मेरे । कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र करि वारों तब ही जबै नेकु हेरे ॥ १ ॥ सकल सुख सदन हरखित बदन गोपवर प्रबलदल मदनदल संग घेरे । कहो कोऊ कैसे हू नांहि सुधि बुधि बने 'गदाधर मिश्र' गिरिधरन टेरे ॥२॥ ❀४६१❀ ❀ राग पंचम ❀ जागे हो रैन तुम सब नैना अरुन हमारे । तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन काहे ते जु नन्ददुलारे ॥ १ ॥ नख-छत पिया उर पीर हमारे उर कारन कोन पियारे । 'नन्ददास' प्रभु न्याय स्याम घन बरसे अनत जाय हम पर झूम झुमारे ॥२॥ ❀ ४६२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ मंगल आरती गोपाल की, माई । नित प्रति मंगल होति निरखि मुख चितवनि नैन बिसाल की ॥ १ ॥ मंगल रूप स्यामसुन्दर को मंगल भृकुटी सुभाल की । 'चत्रुभुज' प्रभु सदा मंगलनिधि बानिक गिरिधरलाल की

॥ २ ॥ ❀ ४६३ ❀ दर्शन मंगल भये पीछे ❀ राग बिलावल ❀ लालन तहिं जाहु जाके रस लंपट अति । अति अलसाने नैन देखियत प्रगट करत प्यारी-रति ॥ १ ॥ अधर दसन छत वसन पीक सह अरु कपोल श्रमबिंदु देखियति । नख लेखनि तन लखी स्याम पट जय पताक रन जीतिय रतिपति ॥ २ ॥ कितव वाद तजो पिय हम सों जैसो तन स्याम तेसोई मन अति । 'गोविंद' प्रभु पिय पाग संवारहु गिरत कुसुम सिर मालति ॥३॥ ❀ ४६४ ❀ राग बिलावल ❀ जानि पाये हो ललना बलि-बलि ब्रजनृप-कुंवर जाके विविसन सब निस जागे अब तहीं अनुसर ॥ १ ॥ अपनी प्यारी के रति चिन्ह हमहिं दिखावन आये देत लोंन दाधे पर । 'गोविंद' प्रभु स्यामल तन तैसेई हो मन जनम हि ते जुवतिन प्रान हर ॥ २ ॥ ❀ ४६५ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ मोहन घूमत रतनारे नैन सकुचत कछु कहत बैन सैन ही सैन ऊतर देत नंद के दुलारे । भूषन बसन अटपटे और सीस पाग लटपटी रति रन ले झटपटी अति सुभग स्याम प्यारे ॥१॥ सुबस कियो कुंजसदन भोर आये जीति मदन पलटि पहिरे बसन अजहुँ नहिं संवारे । 'चत्रभुज' प्रभु गिरिवरधर दर्पन लै देखिये जू सेंदुर को तिलक भाल अधरन मसि कारे ॥२॥❀४६६❀राग बिलावल❀ साँझ के साँचे बोल तिहारे । रजनी अनत जागे नंदनंदन आये निपट सवारे ॥१॥ अति आतुर जु नीलपट ओढ़े पीरे बसन बिसारे । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर भले वचन प्रतिपारे ॥२॥❀ ४६७ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग जैतश्री ❀ न्याय दीन दूलहे हो नंदलाल । रीझि बिकाय जहाँ बसे तहां नव दुलही ब्रजबाल ॥१॥ सिथिल चाल अति डगमगी हो बसन मरगजे गात । सोभित हैं अति रसमसे मानों ब्याह भयो जागे रात ॥२॥ नैन ललोहे घूमि रहे हैं चितवनि चित हरि लेत । कहि भगवान हि 'रामराय' प्रभु बसन बधाई देत ॥ ३ ॥ ❀ ४६७ ❀ ❀ कार्तिक सुदी १३ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ चिरियन की चिहुचान सुनि

प्रात उठी दुलही । फूलन की सेज सुख लूटयो कनक बेली उलही ॥ १ ॥ सास ननद की कान मानि बड़ी भोर जागी । रमकि झमकि आय जसुधा के पाँय लागी ॥२॥ तब रानी दियो असीस अचल सुहाग तेरो । सुंदर जोरी निरखि-निरखि हियो सिरात मेरो ॥३॥ सुख की करन दुख की हरन कीरति की जाई । 'रामराय' प्रभु ऐसी वधू पूरे पुन्यन पाई ॥४॥ ❀ ४६९ ❀

❀ शृङ्गार समय ❀ राग बिलावल ❀ ललिता जू के आज बधायो । श्रीवृंदाबन व्याह रचायो । आली सब न्योति बुलाई । वे मंगलनिधि न्योतो लाई । छंद—मंगल न्योतो लाई सखियन मंडली अद्भुत रची । बांधि बंदनवार चहुँदिस मध्य निधि वेदी सची । संकेत देवी पूजि ललिता हरखि अति आनन्द भरी । मेरी नवल राधा दुलहिनी मिले कुंवर दूल्हे हरी ॥१॥ देवी बहुभांति पुजाई । सो विधिना विधि आन मिलाई । जो राधे जिन हरि आराधे । आज लगन सोई अनुपम साधे । छंद—सोई लग्न परम अनूप साधे हरखि मंगल गाइये । महा मंगल रूप अद्भुत भांति मंडप छाइये । मेरी उबटि राधा दुलहिनी जब स्याम कों उबटन कियो । स्नान करि सिर गूंथि मौरी मुकुट मोहन के दियो ॥ २ ॥ करसों कर जोरि फिराई । भांवरि दे कें ढिंग बैठाई । हँस करि दई है बधाई । ललिता फूली अंग न समाई । छन्द—फूली तो अंग न समाय ललिता रंग के बल भरि रही । आज भाग सुहाग की कछु जात नहि मोपे कही । धन्य यह दिन रात यह धन धन्य यह पल सुभ घरी । धनि धन्य नवलकिसोर दूल्हे दुलहिनी राधा वरी ॥३॥ यह दूलह है निपट सयानो । या दुलहिन के रूप लुभानो । आली छिन छिन बिलम न कीजे । अञ्चल जोरि वारनो लीजै । छंद—अञ्चल जोरि दियो जु सखियन विचार गौने को कियो । करि दिये कुंज प्रवेस दोऊ धन्य 'ललिता' को हियो । जहां नवल सखी अनेक छबि पर वारने बलि बलि गई । या ब्याह की रस रीति सखियन जात नहिं मोपै कही ॥ ४ ॥

❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ श्रीवृषभान सदन भोजन कों नंदादिक मिलि आये हो। तिनके चरन कमल धरिवे कों पट पांवड़े बिछाये हो ॥१॥ राम कृष्ण दोउ वीर बिराजत गौर स्याम दोउ चंदा हो। तिनके रूप कहत नहिं आवैं मुनिजन के मन फंदा हो ॥२॥ चंदन घसि मृगमद मिलाय के भोजन भवन लिपाये। विविध सुगंध कपूर आदि दे रचना चौक पुराये ॥३॥ मंडप छायो कमल कोमल दल सीतल छांह सुहाई। आसपास परदा फूलन के माला जाल गुहाई ॥४॥ सीतल जल कुमकुम के जलसों सबके चरन पखारे। करि बिनती कर जोरि सबन सो कनक पटा बैठारे ॥ ५ ॥ राजत राज गोप भुवपति संग विमल वेस अहीरा हो। मनहुं समाज राजहंसन को जुरे सरोवर तीरा हो ॥६॥ धरे अनेक जटित कटोरा और कंचन की थारी। ढिंग ढिंग धरी सबन के सुंदर सीतल जल भरि झारी ॥७॥ गावन लागी गीत व्याह के सुकुमारी व्रजनारी। अति हुलास परिहास परस्पर यह सुख सोभा भारी ॥८॥ परोसन लागे पुरोहित हितसों जिनकी वदन बड़ाई। तिनके दरस परस संभाषन मनों सुरसरिता आई ॥९॥ ओदन की उज्वलता मानों सहज रूप धरि आये। यह हित प्रीति प्रीतम जन हितसों प्रकटहि आप जनाये ॥१०॥ बरी बरा अरु वरन बिजोरा पापर पीत बनाये। कनक बरन बेसन बहुतेरे प्रकार न जात गिनाये ॥११॥ आमल वेल आम अदरक रस नींबू मिले संधाने। सद सीरा और सुरभी घृत सों सौरभ घ्राण बखाने ॥१२॥ बासोंधी सिखरन अरु खोवा अमृत रसना तोषे। अमल कषाय कटुक तीक्षन रस लोंन मधुर रस पोषे ॥१३॥ कन्द मूल फल फूल पत्र जो व्यंजन सबै प्रकारा। ये हैं मनो प्रगट भूतल में अमृत के अवतारा ॥१४॥ और बहुत विधि खटरस व्यंजन परोसनवारे हारे। यद्यपि होय सारदा की मति तदपि न जात संमारे ॥१५॥ सीतल सुगंध चारु सुकोमल विविध भाँति पकवान। तेऊ प्रकार परे नहिं कबहू सुरपति हूँ के कान ॥१६॥ करि

आचमन उठे सब ब्रजजन मनमें अति सुख पाये । पट भूषन बीरा सोंधेसों पूजि सदन पधराये ॥१७॥ यह सुख संपति यह रस सोभा कापै जात बखाने । जूठिन जाय उठाय 'गदाधर' भाग्य आपुने माने॥१८॥❀४७१❀राजभोग दर्शन❀ ❀ राग जैत श्री ❀ राधे जू नव दुलही, दूल्हे हो मदनगोपाल । मानों तरुन तमाल मूल मिलि नौतन कनक बेल उलही ॥१॥ रूप-भूप युवराज बिराजत बैस किसोर एक सुलही । 'मदनमोहन' पिय स्याम सुदंपति जो जिय चाह हुती सो लही ॥ २ ॥ ❀ ४७२ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ राधा प्यारी दुलहिन जू को दुलहा देखिरी आवत है ब्रज लटकत । ग्वाल संग ऊंचे सुर गावत श्रवन सुनत मन अटकत ॥१॥ देखत ही जु समात हृदै में अंखियाँ हू नहिं खटकत । प्रभु 'कल्यान' गिरिधर मुख निरखत समर-सरन गहि सटकत ॥ २ ॥ ❀ ४७३ ❀ सेन दर्शन ❀ राग विहाग ❀ जुगल वर आवत हैं गठ जोरे । संग सोभित वृषभान नंदिनी ललितादिक तृन तोरें ॥ १ ॥ सीस सेहरो बन्यो लाल के निरखि हँसत मुखमोरे । निरखि-निरखि बलि जाय 'गदाधर' छबि न बढ़ी कछु थोरैं ॥ २ ॥ ❀ ४७४ ❀

उत्सव श्री ब्रजभूषणजी को (मार्गशीर्ष सुदी २)

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारङ्ग ❀ श्रीवल्लभ श्रीलक्ष्मन गृह प्रगट भये माई । काहे कों सोच करत कर्मन निधि पाई ॥ १ ॥ ब्रजजन की रास मूरति भाग्यन दई है दिखाई । सृष्टि आपुनी करि आसुर तें बचाई ॥२॥ लीला सब प्रगट करी सेवक जनन बताई । हरि सों हठि करि श्री भागवत की टीका प्रगटाई ॥ ३ ॥ भाग्यन के पूरे जे तिन कीरति गाई । 'रसिक' सदा लक्ष्मन सुत सेवो सुखदाई ॥ ४ ॥ ❀ ४७५ ❀

श्री द्वारिकाधीश और श्री मथुराधीश कांकरोली में एक सिंहासन पर बिराजे

(मार्गशीर्ष सुदी ४)

❀ मङ्गला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ आज गृह नंद महर के बधाई । प्रात

समय मोहन मुख निरखत कोटि चंद छबि छाई ॥ १ ॥ मिलि ब्रजनारी मङ्गल गावत नंद भवन में आई । देत असीस जियो जसुमति-सुत कोटिक बरस कन्हाई ॥ २ ॥ नित आनंद बढ़त वृंदावन उपमा कही न जाई । 'सूरदास' धनि-धनि नंदरानी देखत हियो सिराई ॥ ३ ॥ ❀ ४७६ ❀ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग देवगंधार ❀ नंदराय के नव निधि आई । माथे मुकुट श्रवन मनिकुंडल पीत बसन अरु चार भुजाई ॥ १ ॥ बाजत बीन मृदंग संख धुनि घसी अरगजा अङ्ग चढ़ाई । दधि पीवत और चंदन छिरकत रपटि परत हैं लेत उठाई ॥ २ ॥ अच्छत दूब लिये चढि ठाडे द्वारन बंदनवार बंधाई । 'सूरदास' सब मिले परस्पर दान जु देत नंद न अघाई ॥३॥ ❀ ४७७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग ❀ धनि गोकुल जहाँ गोविंद आये । धनि दिन नंद सुमंगल निसदिन धनि जसोमति जिन गोद खिलाये ॥१॥ धनि वे बालकेलि जमुनातट धनि बन सुरभीवृंद चराये । धनि वह समय धनि वह लीला धनि वह बेनु अधर धरि गाये ॥ २ ॥ धनि वे चरन सदा सुखदायक भक्त जनन के हृदै रहाये । धन्य 'सूर' ऊखल धनि गोपी जिनके हित गोपाल बंधाये ॥ ३ ॥ ❀ ४७८ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ बसो मेरे नैनन में यह जोरी । नव दूल्है ब्रजराज लाडिलो दुलहिन नवल किसोरी ॥ १ ॥ नवल पाग सिर नवल सेहरो नवल छबी बरने ऐसो कोरी । 'हित हरिवंस' करत नौछावरि देत पीतपट छोरी ॥२॥ ❀ ४७९ ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ दिन दूल्है मेरो कुंवर कन्हैया । नित उठि सखा सिंगार बनावत नित ही आरती उतारति मैया ॥ १ ॥ नित-प्रति मोतिन चौक पुरावत नित-प्रति विप्रन वेद पढैया । नित ही राई नोंन उतारति नित ही 'गदाधर' लेत बलैया ॥ २ ॥ ❀ ४८० ❀ संध्या भोग आये ❀ राग नट ❀ तू बनरा रे बनि-बनि आया मो मन भाया सुख उपजाया । अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि धरि सिर सेहरा अति सुंदर अङ्ग सुगन्ध लगाया ॥ १ ॥ अपने

संग सकल जन सोहैं तिलक ललाट बनाया। 'रसिक' प्रीतम बलिहारी तेरी उठि के अङ्ग लगाया ॥ २ ॥ ❀ ४८१ ❀ सेन दर्शन ❀ राग बिहाग ❀ लालन की बातन पर बलि जैये। हँसि तुतराय कहत माता सों दुलहिन मोकों चैये ॥ १ ॥ गातन गोरी बैंसन थोरी दुलहिन को कर गहिये। अब ही सांझ समे करि गौना मंदिर में पधरैये ॥ २ ॥ नंदराय नंदरानी हिलि मिलि सुख सों मोद बढैये । 'सूर' स्याम के रूप सील गुन ब्रज में कहाँ ते पैये ॥ ३ ॥ ❀ ४८२ ❀

श्री गुसांईंजी के उत्सव की बधाई [मार्गशीर्ष सुदी ७]

❀ सेहरा धरे तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री विट्ठलेस चलो जहां जाइ मेरे नैनन को सिंगार दूल्है कर पाइ ॥ ध्रु० ॥ गावत निकसी बाल सबै श्री गोकुल आई। नखसिख साज सिंगार साज तब बिविध बजाई ॥ भेट साज अब कहा कहों भरि लिये कंचन थाल। मानों बहु विधि राज ही हो बहु बिधि बचन रसाल ॥ १ ॥ गावत मंगलचार द्वार श्रीवल्लभ ठाढ़े। लै लै सुत को नाम वाम रुचि दूनी बाढ़े ॥ बोलि लई सब भवन में सब सखियन के वृंद। अरुन वसन बडलोचनी मृगी कहूँ के चंद ॥ २ ॥ आलिंगन सब धाई पांय सब युवतिन लागी। निरखि लाल मुख बाल अक्काजू तुम बड़भागी ॥ मनि मानिक मुक्ता सबै हो नाना दान दिवाय। मानों मन्मथ मन बढ्यो हो फूले अङ्ग न माय ॥ ३ ॥ सब मिल देत असीस ईस ब्रह्मादिक नायक। चिरजियो श्रीविट्ठलेस घोख के सब सुखदायक ॥ राज करो निज भवन में हो कहत है वारंवार। श्रीगिरिधर यस गावहीं हो 'रामदास' बलिहार ॥ ४ ॥ ❀ ४८३ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ जयति रुक्मिनीनाथ पद्मावती-प्रानपति विप्रकुलछत्र आनंदकारी। दिव्य वल्लभवंस जगत निस्तार-करन कोटि उडुराज सम तापहारी ॥ १ ॥ जयति भक्तजनपती

पतित-पावन करन कामीजन कामना सब निवारी । मुक्तिकांक्षीय जन भक्ति दायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुन गनन भारी ॥ २ ॥ जयति सकल तीरथ फलित नाम स्मरन मात्र ब्रज नित्य गोकुलबिहारी । 'नंददासनिनाथ' गिरिधर आदि प्रगट अवतार गिरिराज धारी ॥ ३ ॥ ❁ ४८४ ❁ टिपारा धरे जब ❁ सैन दर्शन ❁राग केदारा❁ श्रीविट्ठलनाथ आनंदकंद। प्रगट पुरुषोत्तम श्रीब्रज में देखि द्विजवर चंद ॥ १ ॥ तब यसोदानंद कहियतु अब श्री वल्लभनंद । तब धरयो नट भेख गिरिधर अब जु श्रुतिपथ छंद ॥ २ ॥ तब बकी आदि अनेक आरति मेटि सब दुख द्वंद । अब कृपा करि के हरे प्रभु पाप 'मानिकचंद' ॥ ३ ॥ ❁ ४८५ ❁

उत्सव श्री गुसाईंजी को* [पौष बदी ६]

❁ कलेऊ को पद ❁ राग भैरव ❁ हौं बलि जाऊं कलेऊ कीजे। खीर खांड घृत अति मीठो है अब को कोर बछ लीजे ॥ १ ॥ बेनी बढ़े सुनो मनमोहन मेरो कह्यो जो पतीजे । औट्यो दूध सद्य धौरी को सात घूंट भरि पीजे ॥ २ ॥ वारने जाऊं कमलमुख ऊपर अचरा प्रेम जल भीजे । बहुरयो जाइ खेलो जमुना तट 'गोविंद' संग करि लीजे ॥३ ❁४८६❁

मकर संक्रांति

❁ एक दिन पहिले भोगी संक्रांति ❁ शृंगार दर्शन ❁ राग मालकोस ❁ बनठनि भोगी रस बिलसनि कों भोर भवन ठाडे पिय प्यारी । ओढि कबा फरगुल जु परस्पर सीत समे सुंदर सुखकारी ॥ १ ॥ रितु हेमंत सिसिर दोऊ ठाडी ले करि सौंफ विविध रुचिकारी। 'कृष्णदास' प्रभु को मुख निरखत अति आतुर ब्रजनारी ॥१॥ ❁ ४८७ ❁ राजभोग दर्शन ❁ भोगी भोग करत सब रस को । नन्दनन्दन जसुधा को जीवन गोपिन प्रानपती सरवसु को ॥ १ ॥ तिल भर संग तजति नहीं निजजन गान करत मनमोहन जस को । तिलवा भोग धरत मन भावत 'परमानंद' सुख देन दरस

---

*शंखनाद सूं झांझ पखावज बजे ।

को ॥२॥ ❀ ४८८ ❀ भोग राग नट ❀ भोगी भोग करत सब रस को । आस पास प्रफुलित मन फूले गावत भक्त सुजस को ॥ १ ॥ करत टहेल निज महेल निरंतर कहत श्रीराधा बस को । 'कृष्णदास' ठाडो सिंहद्वारे पीवत प्रेम पियूष को ॥२॥ ❀ ४८९ ❀ संध्या राग गोरी ❀ भोगी को रस बिलसत आवत देखो बन ते नंदकुमार । सीस कुलहि अंग वसन आभूखन उर पहिरे कुसुमन के हार ॥ १ ॥ अति आनंद प्रेमरस माते नाचत गावत दे कर तार । 'कृष्णदास' प्रभु मुख अवलोकत ब्रजजन ठाडे सब सिंहद्वार ॥ २ ॥ ❀ ४९० ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ तेरी हों बलि-बलि जाऊं गिरिधरन छबीले । कुलहि छबीली अरु पाग छबीली अलक छबीली तिलक छबीलो माई री नैन छबीले प्यारी जू के रंग रंगीले ॥ १ ॥ अधर छबीले बसन छबीले बेन छबीले हो अति सरस सु ढीले । 'गोविंद' प्रभु नखसिख अंग अंगन लालन अति ही रसीले ॥ २ ॥ ❀ ४९१ ❀ राग कान्हरा ❀ कहा री कहों मनमोहन को सुख बरनत मोपै बरन्यो न जाय । आलिंगन परिरंभन चुंबन अर्धरामृत रस पीवत पिवाय ॥ १ ॥ निस वासर संग तजत न तिल भर राखत अपुने हृदय लगाय । 'कृष्णदास' ढिंग ठाडी ललिता कर लै बीन बजावत गाय ॥२॥ ❀ ४९२ ❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ नीकी रितु लागे सीत की । अंसन दे पिय प्यारी जु पोढे बात करत रस रीत की ॥१॥ बन गई एक रजाई भीतर होत परस्पर जीत की । 'गदाधर' प्रभु हेमन्त मनावत चाह बढी नव प्रीत की ॥२॥ ❀ ४९३ ❀ मकर संक्रांति ❀ जागवे मे ❀ ❀ राग भैरव ❀ भोर भये भोगी रस बिलस भये ठाडे । जागे जामिनी जगाय भामिनी अंग-अंग समाय स्वास सिथिल निडर देत आलिंगन गाढे ॥ १ ॥ घूमत रसमत्त मगन सूधे हु डग परत पग न छिन-छिन चित चोंप चोजन मोजन मनों बाढे । अति रस मे रसिक राय सोभा बरनी न जाय बलि 'बिहारीदास' प्रेम रंग रंगि काढे ॥ २ ॥ ❀ ४९४ ❀ मंगला दर्शन ❀

❀ राग खट ❀ तरनि-तनया तीर आवत ही प्रात समै गेंदुक खेलत देख्यो आनंद को कंदवा । काछिनी किंकिनी कटि पीतांबर कसि बांधे लाल उपरना सिर मोरन के चंदवा ।। १ ।। पंकज नैन सलोने बोलत मधुरे बोल गोकुल की सुंदरी संग आनन्द सुछंदवा । 'कृष्णदास'प्रभु गिरिगोवर्धनधारी लाल चारु चितवनि खोलत कंचुकी के बंदवा ।। २ ।। ❀ ४९५ ❀

❀ शृंगार समय ❀ राग आसावरी ❀ जानि परव संक्रांति नंद-घर गर्गादिक मिलि आये हो । देखि तहां ब्रजराज मुदित मन भीतर भवन बुलाये हो ।। १ ।। दोऊ कर जोरि किये पद बंदन करि सनमान बैठाये हो । सब ही विप्र मिलि वेद-मंत्र पढि सब आसीस सुनाये हो ।। २ ।। महरि जसोदा अति हरखित मन लालन उबटि न्हवाये हो । करि सिंगार दे विविध सामग्री मेवा गोद भराये हो ।। ३ ।। कहति जसोदा दोऊ भैया मिलि दान देहो मन भाये हो । आज परव संक्रांती को दिन खेलो सखन बुलाये हो ।।४।। यह सुनि बचन हरखि बल-मोहन धाय महर पै आये हो । देखि मुदित 'ब्रजराज' हुलसि के लीने कंठ लगाये हो ।। ५ ।। ❀ ४९६❀ राग. पंचम ❀

बोलि पठाई स्याम पै जसुमति रोहिनी कियो सनमान । अपुनो परिकर सबै बुलावो मकर परव संक्रम बडो जान ।। १ ।। रीझि गोपाल पे दान करावो तुम हो चतुर सुजान । मनमान्यो सब सौंज करावो भरि-भरि तिल गुड़ दान ।। २ ।। सब सखियन मिलि मंगल गावो अपुने भवन निधान । 'सूर' स्याम कों अंक मध्य लै विप्र पै असीस पढ़ाय दीजेबहु विधिदान ।।३।।❀४९७❀

❀ राग पंचग ❀ कहत नंदरानी गोपाल सों तात कों बुलाय लाओ बडो परव उत्तरायन । द्विजन कों दान दैहों असीस वचन पढैहों खेलन न जाओ लालन बैठ रहो आंगन ।। १ ।। यह सुनि मोहन कियो सिंगार सखा संग लै चले खिरक गोदोहन जाहि देखे बिन परत नहीं चैन । 'सूर'स्याम बाबा सों कहत हैं जु आज कहा तिहारे मैया कहो मोसों यह सुनि मोदक ले

आये भवन ॥ २ ॥ ❀ ४९८ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग पंचम ❀ खेले सांवरो गोपाल गोप कुंवर के साथ गेंदुक चलाय अवनी लिये सुहाग। लीजो रे लीजो रे बोलत भांवते अनुराग ॥ १ ॥ कुंडल हलन चूडामनि नूपुर झनकार। झुकी पाग सुंदर मुख पर सोभित श्रमवार ॥ २ ॥ ऐसे ही मे मो तन चितवन कीनी मुसिकान। 'रामराय' गिरिधर 'भगवान' जीवन प्रान ॥३॥ ❀ ४९९ ❀ तिलवा भोग आये ❀ सवेरे होय तो पंचम इत्यादि कोई भी राग ❀ ❀ सांझ कूं राग कान्हरा ❀ आज भलो संक्रांति पुन्य दिन ताते मोदक लेहो मेरे लाल। बरसाने ते न्योति बुलाई संग लिये ब्रजबाल ॥ १ ॥ नीके धोय मधुर रस बांध्यो भरि-भरि राखे कंचन थाल। बैठो रतन जटित सिंहासन सखा संग लै अपुने ग्वाल ॥ २ ॥ खेलो बैठो आय परस्पर सखा मंडली जोरि गोपाल। आपुन खाओ देहो सबन कों करो परस्पर ख्याल ॥ ३ ॥ देखत फूलत मात-बबा दोऊ वारत हैं मोतिन की माल। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर प्रेम प्रीति प्रतिपाल ॥४॥ ❀५०० ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ बैठे ब्रजराज गोद मोद सों गोपाललाल देत द्विजजन कों दान। ब्रजवधू मङ्गल थाल साजि कर मे लिये गावत सुघर सुजान तरंग तान ॥ १ ॥ आये निकट जसुमति के आंगन लाई भीतर भवन मांझ विविध भांति सों कियो सनमान। 'सूरज' प्रभु की महिमा सारी सुरत मंगाये ब्रज-तरुनी पहिराये सब पठाई भवन कीन दान ॥ २ ॥ ❀ ५०१ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग आसावरी ❀ ग्वालिन तें मेरी गेंद चुराई। अब ही आन परी पलका पर अपनी ओट दुराई ॥ १ ॥ रहो रहो लाडिले झूंठ न बोलो छतियां छूओ न पराई। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर कहां सीखे चतुराई ॥ २ ॥ ❀ ५०२ ❀ राग आसावरी ❀ खेलत मे को कहां को गुसइयां। श्रीदामा जीते तुम हारे बरबट ही कहा करत बडैयां ॥ १ ॥ जाति पांति कुल ते न बड़े हो कछु एक अधिक तिहारे गैयां। याही ते जु देत अधिकाई हम सब

बसत तिहारी छैयां ॥ २ ॥ रुगट करे तासों को खेले सखा रहे ठकठैयां । 'परमानंद' प्रभु खेल्यो चाहो तो पोत देहो करि नन्द दुहैया ॥३॥ ❀५०३❀ ❀ राग आसावरी ❀ देखो सखी मोहन मदन गोपाल । बागो घेरदार सिर टोपा पहिरे मोजा लाल ॥ १ ॥ पचरंग कबा छींट की फरगुल ओढि धरे वनमाल । ले चोगान गैंद खेलन चले संग लिये ब्रजबाल ॥ २ ॥ करति आरती मात जसोदा गावत गीत रसाल । 'कृष्णदास' प्रभु पर न्योछावरि वारत मुक्तामाल ॥ ३ ॥ ❀ ५०४ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ तुम मेरी मोतिन लर क्यों तोरी । रहि ढोटा तू नंद-महर को करन चहति कहा जोरी ॥ १ ॥ मैं जान्यो मेरी गैंद चुराई ले कंचुकी बिच होरी । 'परमानंद' मुसिकाय चली तब पूरनचंद चकोरी ॥२॥ ❀५०५❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ गहे रहे भामिनी की बांह । मदनगोपाल मनोहर मूरति जानत हो सब मन मांह ॥ १ ॥ ठाडे बात करत राधा सों तहां जसोधा आई । झूठे ही मिस करि झगरन लागे तैं मेरी गैंद चुराई ॥ २ ॥ कोन टेव तिहारे ढोटा की बरजति काहे न माई । या गोकुल मे स्याम मनोहर उलटी चाल चलाई ॥ ३ ॥ सुनि मृदु वचन स्याम स्यामा के महरि चली मुसिकाई । 'परमानन्द' अटपटी हरि की सबै बात मन भाई ॥ ४ ॥ ❀ ५०६ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ कान्ह अटा चढि चंग उडावत हों अपुने आंगन हू ते हेरो । लोचन चार भये नन्दनन्दन काम-कटाच्छ भयो भटु मेरो ॥ १ ॥ कितो रही समुझाय सखी री हटक्यो न मानत री बहु तेरो । 'नन्ददास' प्रभु अबधों मिले हैं एंचत डोर किधों मन मेरो ॥ २ ॥ ❀ ५०७ ❀ राग अडाना ❀ कान्ह अटा पर चंग उडावत मैं इतते उत आंगन हेर्यो । नैंन भये विभिचारी नारायन भाजत लाज किधों भटभेरो ॥ १ ॥ मोहि तो यह जक लगी रहत है क्यों हू क्यों हू फिरत न फेर्यो । 'परमानन्द' प्रभु यह अचंभो एंचत डोर किधों मन मेरो ॥२॥ ❀५०८❀

❀ राग विहाग ❀ खेलत गेंद राय-आंगन में हरि-हलधर दोऊ भैया । किलकत हँसत करत कोलाहल सो छबि निरखि जसोधा मैया ॥ १ ॥ सुबल श्रीदामा सखा संग लै और सकल ब्रज के लरकैया । 'कृष्णदास' प्रभु की छबि निरखत तन मन वारत लेत बलैया ॥ २ ॥ ❀ ५०९ ❀

❀ मान पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀ आवत जात हों हार परी री । ज्यों-ज्यों प्यारो बिनती करि पठवत त्यों-त्यों तू गढ मान चढी री ॥ १ ॥ तिहारे बीच परे सो बावरी हों चोगान की गेंद भई री । 'गोविंद' प्रभु कों बेग मिलि भामिनी सुभग यामिनी जात बही री ॥२॥ ❀५१०❀ राग विहाग ❀ गिरिधर सेन कीजे आय । चांदनी यह घटत नाहीं कहत जसोदा माय ॥१॥ खेल सोई खेलिये बलि जो हमहि सुहाय । जा खेलते तेरे चोट लागे सो खेल देहो बहाय ॥ २ ॥ खेलि मदनगोपाल आये जननी लेत बलाय । पीओ पय तुम धोरी धेनु को सुख करहु माखन खाय ॥ ३ ॥ स्वच्छ सेज सुगंध बहु विधि लाल पोढे आय । 'मदनमोहन' लाल के सखि चरन चांपति माय ॥४ ॥ ❀ ५११ ❀

श्रीविट्ठलनाथ जी को जन्मादिन (माघ वदी ९)

❀ शृंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ आज नंद जू के द्वारे भीर । गावत मंगल गीत सबै मिलि प्रगटे हैं सुंदर बलवीर ॥ १ ॥ एक आवत एक जात बिदा ह्वै एक ठाडे मन्दिर के तीर । एकन कों गौ दान देत हैं एकन कों पहिरावत चीर ॥ २ ॥ एकन कों फूलमाल देत हैं एकन कों घसि चंदन नीर । 'सूरदास' ने नव निधि पाई धन्य जसोदा पुन्य सरीर ॥ ३ ॥ ❀ ५१२ ❀ राग बिलावल ❀ आनन्द आज नन्द जू के द्वार ।दास अनन्य भजन रस कारन प्रगटे स्याम मनोहर ग्वार ॥ १ ॥ चन्दन सकल धेनु तन मंडित कुसुम दाम सोभित आगार । पूरन कुंभ बने कंचन के बीच रुचिर पीपल की डार ॥ २ ॥ युवति-यूथ मिलि गोप बिराजत बाजत प्रनव मृदंग

सुतार । 'हित हरिवंश' अजर ब्रज-बीथिन दूध दही मधु घृत के खार ।।३।। ❀ ५१३ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ मोद विनोद आज घर नन्द । कृष्णपक्ष आठैं निसि प्रगटे या गोकुल के चंद ।। १ ।। बंदनवार अरविंद मनोहर बीच बने पट कीर सुछंद । गोपी ग्वाल परस्पर छिरकत पुलकित विहरत मत्त गयंद ।। २ ।। भवन द्वार गोमय वर मन्डित बरखत कुसुम उमापति इन्द्र । 'विट्ठलदास' हरद दधि मधु घृत रंजित पान करत मकरंद ।। ३ ।। ❀ ५१४ ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ धन्य जसोदा भाग्य तिहारो जिन ऐसो सुत जायो हो । जाके दरस परस सुख उपजत कुल को तिमिर नसायो हो ।। १ ।। विप्र सुजन चारन बंदीजन सबै नंदघर आये हो । नौतन हरद दूब दधि अक्षत हरखित सीस बंधाये हो ।। २ ।। गर्ग सरूप कहे बहु लच्छिन अवगति हैं अविनासी हो । 'सूरदास' प्रभु को जसु सुनिकै आनन्दे ब्रजवासी हो ।। ३ ।। ❀ ५१५ ❀ राग आसावरी ❀ गाओ गाओ मङ्गलचार बधावो नन्द के । आओ आंगन कलस साजि के दधि फल नूतन डार ।। १ ।। उर सों उर मिलि नन्दराय जू गोपन सबै निहार । मागध सूत बंदीजन मिलि के द्वारे करत उचार ।। २ ।। पायो पूरन आस करि हो सब मिलि देत असीस । नन्दराय को कुंवर लाडिलो जीयो कोटि बरीस ।। ३ ।। तब ब्रजराज आनन्द मगन मन दीने बसन मगाय । ऐसी सोभा देखि के जन 'सूरदास' बलि जाय ।। ।। ४ ।। ❀ ५१६ ❀ राग आसावरी ❀ देखो अद्भुत अवगति की गति कैसो रूप धरयो है हो । तीन लोक जाके उदर बसति हैं सो सूप के कोने परयो है हो ।। १ ।। नारदादि ब्रह्मादिक जाको सकल विस्व सर साधे । ताकी नार छेदत ब्रज-जुवती बांटि तगा सों बांधे ।। २ ।। जा मुख कों सनकादिक सोचत सकल चातुरी ठाने । सोइ मुख निरखत महरि जसोदा दूध लार लपटाने ।। ३ ।। जिन श्रवनन सुनि गज की आपदा गरुडासन बिसराये । तिन श्रवनन के

निकट जसोदा गाये और हुलराये ॥ ४ ॥ जिन भुजान प्रहलाद उबारयो हरनाकुस उर फारे । तेई भुज पकरि कहत ब्रजगोपी नाचो नैकु पियारे ॥ ५ ॥ अखिल लोक जाकी आस करत है सो माखन देखि अरे हैं । सोई अद्‌भुत गिरिवर हू ते भारी पलना मांझ परे हैं ॥ ६ ॥ सुन नर मुनि जाको ध्यान धरत है संभु समाधि न टारी । सोई प्रभु 'सूरदास' को ठाकुर गोकुल गोप-बिहारी ॥ ७ ॥ ❀ ५१७ ❀ राग आसावरी ❀ देवक उदधि देवकी सीप वसुदेव स्वाति जल बरख्यो हो । उपज्यो सुवन विमल मुक्ताफल सुनि-सुनि सब जग हरख्यो हो ॥१॥ निर्मोलक नग हाथ जसोदा नंद जू को चित आकरख्यो । विधि नारद सिव सेष जवेरी तिन पै जात न परख्यो ॥ २ ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत हैं सो ब्रज-युवतिन निरख्यो । सोई स्यामा उर हार बिराजत 'कल्यान' श्रीगिरिधर सरख्यो ॥३॥ ❀ ५१८ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ सबन सों कहति जसोदा माय जनम दिन लाल को फिर आयो ॥ ध्रु० ॥ जब बीते सब मास बहुरि आयो जब भादों । दिन आठे बुधवार होत गोकुल दधिकादो ॥ बोलि लई ब्रजसुंदरी हो हिलि-मिलि मंगल गाय । बांधति बंदनवार मनोहर मोतिन चोक पुराय ॥ १ ॥ केसर चंदन घोरि लाल बलि प्रथम न्हवाये । नाना वसन अनूप कनक भूषन पहराये ॥ रोरी को टीको दियो हो अंजन नैन लगाय । देत नोछावर रोहिनी हो फूली अंग न माय ॥ २ ॥ बजत बधाई द्वार नगारे भेरी ढोला । ब्रज कौतूहल होय उमग्यो मानो सिंधु कलोला ॥ भई दुंदुभी की गरजना हो सुर विमान चढि आये । सिव विरंचि स्तुति करैं हो सुर सुमनन बरखाये ॥ ३ ॥ गाम-गाम ते विप्र भाट गंधर्व जु आये । जाको जैसो चाव दान तिन तैसो पाये ॥ भलीभांति पूजा करी हो नीके नंद जिमाय । दै असीस घर कों चले हो सोंधे सों लपटाय ॥ ४ ॥ ऐसी लीला देखि फिरत फूले ब्रजवासी । फूली धेनु और वच्छ फूले द्रुम कंज पलासी ॥

गोवर्धन फूल्यो सदा हो फूली श्रीयमुना बहाय । 'रामदास' मन फूल भई श्री गिरिधर को जस गाय ॥ ५ ॥ ❀ ५१९ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ सांवरो मंगल रूप-निधान । जा दिन ते हरि गोकुल प्रगटे दिन-दिन होत कल्यान ॥ १ ॥ बैठि रहो स्याम गुन सुमरो रेन दिना सब याम । 'श्रीभट' के प्रभु नैन भरि देखो पीताम्बर घनस्याम ॥२॥ ❀ ५२० ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ अहो पिय सो उपाय कछु कीजे । जा उपाय ते या बालक कों राखि कंस ते लीजे ॥ १ ॥ मनसा वाचा और कर्मणा नृप कों कोन पतीजे । छल-बल करि उपाय कैसे हू काढि अनत ही दीजे ॥ २ ॥ नाहिन ऐसो भागि हमारो सुख लोचन पुट पीजे । 'सूरदास' ऐसे सुत को यस श्रवनन सुनि सुनि जीजे ॥३॥ ❀५२१❀ ❀ राग कान्हरा ❀ रानी तेरो भाग्य सबनते न्यारो । जायो पूत सुपूत सुलच्छन कुलदीपक उजियारो ॥१॥ गोद लिये हुलरावत गावत उर लावत अति प्यारो । 'परमानंददास' को ठाकुर गोकुल अखियन तारो ॥ २ ॥ ❀ ५२२ ❀ माघ सुदी ४ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ सिसिर ऋतु को आगम भयो प्यारी बिदा भयो हेमंत । बिरहिन के भागिन ते आली आवत चल्यो बसंत ॥ १ ॥ जाहि दूतिका के भवन बसे हो भांवरि लीने कंत । 'कुंभनदास' प्रभु या जाड़े को आय गयो है अंत ॥२॥ ❀ ५२३ ❀ ❀ शृंगार समय ❀ राग मालकोस ❀ मदन मत कीनो री मतवारो । नागरी नवल प्रेम रस बसि कीनो नंददुलारो ॥ १ ॥ केधों प्रीतम पराये भवन मे करत हैं नित टारो । आज रेन अकिली सोय रहीहूं सीत दहत तन भारो ॥ २ ॥ प्रथम कियो कर जोरि मिलन हित पायो प्रान-पियारो । 'परमानंद' प्रभु या जाड़े कों दीजे देस निकारो ॥ ३ ॥ ❀ ५२४ ❀ ❀ राग मालकोस ❀ विधाता अबलन कों सुख दीजे । जोपै प्रीतम पर घर जैहैं यह दुख तुम सुन लीजे ॥ १ ॥ बैरी मनोज उठति अंग-अंग मे

सीत लगे तन छीजे। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर या जाड़े कों बिदा करि दीजे ॥ २ ॥ ५२५ ॥ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग ललित ❀ बसंत ऋतु आई आये पिय घर वन फूले उपवन हों फूली सब तन। बिरह बिथा बह गई पतझर भई नई कोंपल उनये आनंद घन ॥ १ ॥ मत्त मधुपगन गुंजत कोकिल धुनि अलापत गावत सब ब्रजजन। 'हरिवल्लभ' प्रभु की बलि जैये कैसे कै रिझैये उनही को मन ॥२॥ ❀ ५२६ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ महल मेरे आये भवन मेरे आये अति मन भाये सुहाये लाल सिसिर हेमंत ऋतु सुखद जान। मानो मनमथ के मन मथवे कों रतिपति पियपति गोपीस कान ॥ १ । हों फूली अंग-अंग छबि निरखत मूर्तिवंत मानो वसंतराज फूल फूल्यो सुंदर सुजान। कामना द्योस जान अगम दिन अमित मान उरज श्रीफल भेट अंकसों प्रति अंक देत 'गोविंद' प्रभु रसबस करि देत दान ॥ २ ॥ ❀ ५२७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग माला ❀ सारंग नैनी री काहेकों करत है री तू मान। गोरी गर्व छांडि दे ताते होत कल्यान ॥१॥ जिनि हठ कर री तू नट नागर सों मोहे देव गंधार। रंग रंगीली सुघरनायकी यह अडानो जानि ॥ २ ॥ कान्हर मुरली बजावे गावे सरद रेनि काननि। 'नंददास' केदारो करि के योंही बिहाय गयो मान ॥३॥ ❀५२८❀ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ हरि जू राग अलापत गौरी। हौंय बाट घाट घर तजिके सुनत बेनु धुन दौरी ॥ १ ॥ गई हों तहां जहां निकुंजबन अरु बैठे किसलय की चोरी। देखी मैं पीठ दीठ द्रुम फरकत पीत पिछोरी ॥२॥ लीनी हों बोलि हो मेरी सखी री देखि बदन भई बौरी। 'परमानन्द' नंद के नंदन मोहि मिले भरि कौरी ॥३॥ ❀५२९❀ सेनभोग आये ❀राग कल्यान ❀ हिम ऋतु अति हितकारी री सजनी रंग महल बैठे दोऊ तन गसे। फबि रहे बसन विचित्र जुगल अंग फूल गुलाब की छबि रही पिय दृग से ॥१॥ सीत मीत व्है अंक लगे दुरि मृदु बतियन चित चोरत हँसहँसे। 'वृंदावन

हित रूप' जाय बलि झलकत बदन विधु हिये परम लसै ॥२॥ ❀ ५३० ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ हिमऋतु सिसिरऋतु अति सुखदाई। प्यारी जू के फरगुल सोहे प्रीतम ओढे सरस कवाई ॥ १ ॥ पर गये परदा ललित तिवारी धरी अंगीठी अति सुखदाई। जरत अंगार धूम अंबर लौं सरस सुगंध रह्यो तहां छाई ॥ २ ॥ जब-जब मधुर सीत तन व्यापत बैठत अंग सों अंग मिलाई। श्रीवल्लभ पद रज प्रताप ते'रसिक'सदा बलि जाई ॥३॥ ❀ ५३१ ❀ ❀ रागमाला ❀ ए मन मान मेरो कह्यो काहे कों रिसानी प्यारी तू। प्रथम री भैरो गुन जन गाइये याही ते सुघराई होतु ॥ १ ॥ मालकोस की तानन ले-ले राजत रूप बिहाग। 'द्वारकेस' प्रभु वसंत खिलावत याही तैं बढत सुहाग ॥ २ ॥ ❀ ५३२ ❀ सेन दर्शन ❀ राग ❀ आली री सजि सिंगार सायंकाल चली ब्रजबाल पिय दरसवे कों मत द्विरद गेन। मानो शिशुमार चक्र उदय होत गगन मध्य ध्रुव नक्षत्र की परिक्रमा देन ॥१॥ मानो ऋतु वसंत आई अंग-अंग छबि छाई दंपति समाज मोपै कही न परत बैन। 'मुरारीदास' प्रभु प्यारी त्रित्र-विचित्र गति सेवत निरखि पिया की छबि अद्भुत कोक रची मेन ॥ २ ॥ ❀ ५३३ ❀

वसन्त पंचमी (माघ सुदी ५)

❀ शृंगार समय ❀ रागमाला भैरो ❀ भोर भयो जागे जाम लाल हो अब रामकली उदे भयो भान। गुन की कली गुन पूरनप्यारी कहा अब होत देव गान ॥१॥ भयो बिभास आभास सब देखियत बलि-बलि जाऊं तू सुनि लेरी कान। आसा न करि तू अपुने प्रीतम की सोरठ समजि ले मन ही मन आन ॥२॥ सारंग नाम जाको ताके पास जाय आली सो नट भयो कहा करे अभिमान। चितवति चित पूरव मुख बैठी मधुमाध मद भयो तोकूं आन ॥ ३ ॥ ये क्रोध भयो गोरी कोन गुनन ते ए मन कहा करों कहा कहूं आन। केदारुन दुख मिट गयो कान्हर तेरो जीवन प्रान ॥ ४ ॥ रेन बिहाय गई प्यारी

पिय पास गई मदनमोहन पिय अति ही सुजान । चलत हिंडोल अंकमाल सोभा बन ठन 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी ललित चरन चित धरूं ध्यान ॥ ५ ॥ ❀ ५३४ ❀ राजभोग आये ❀ राग टोडी ❀ परोसत गोपी घूंघट मारे । कनक लता सी सुंदर सीमा आई है ज्योनारें ॥ १ ॥ झनक-मनक आंगन में डोलत लावण्य मोर सँवारें । नंदराय नंदरानी तैंदुरि लाले भले निहारे ॥ २ ॥ घर की सोंज मिलाय थार में आगे लै जब धारे । परम मिलनिया मोहन जू की हांसी मिस हूंकारे ॥३॥ रुचिर काछनी जटित कोंधनी जूरो बांह उघारे । 'परमानंद' अवलोकन कारन भीर बहुत सिंहद्वारे ॥ ४ ॥ ❀ ५३५ ❀ राग टोडी ❀ परोसति पाहुनी ज्योनारी । जेंवत राम कृष्ण दोऊ भैया नंदबाबा की थारी ॥ १ ॥ मोही मोहन को मुख निरखत-बिकल भई अतिभारी । भू पर भात कुरैं भई ठाडी हसँत सकल ब्रजनारी ॥ २ ॥ कै याहि आंच हिये की लागी नवजोबन सुकुमारी । 'परमानंद' यसोमति ग्वालिन सैनन बाहिर टारी ॥ ३ ॥ ❀ ५३६ ❀ राग टोडी ❀ चित्र सराहत दुरि मुरि चितवत गोपी बहुत सयानी । टकझक मे झुकि वदन निहारति अलक संवारति पलकन मारति जानि गई नंदरानी ॥ १ ॥ परगये परदा ललित तिवारी कंचनथार जब आनी । 'नंददास' प्रभु भोजन घर में उर पर कर धरयो वे उतते मुसिकानी ॥ २ ॥ ५३७ ❀ राग टोडी ❀ मोहन जेंवत एरी जिनि जाओ तिवारी । सिंहपौरि ते फिरि फिरि आवत बरजी है सौ बारी ॥ १ ॥ रोहिनी आदि निकसि भई ठाडी दै आडी मुख सारी । तुम तरुनी जोबन मदमाती ऐसी ये देखनहारी ॥ २ ॥ गरजत लरजत प्रतिउत्तर दै कोऊ बजावत तारी । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर अब ही बैठे थारी ॥३॥ ❀५३८❀ भोग सरे ❀ राग टोडी ❀ खंभ की ओझल ठाडो सुबल प्रवीण सखा करमे जटित डबा बीरा सों भरयो जेंवत हेरी मोहन । परदा परे तिवारी तीन्यो ता मधि झलकत

अंग अंग रंग सोहन ॥ १ ॥ जाहीकों देखत रानी ताही कों उठत झुक कोऊ नहीं पावत समयो जोहन । 'नंददास' प्रभु भोजन करि बैठे तब मै दई री सेन पान खाय आवन कह्योरी गोहन ॥ २ ॥ ५३९ ❀ बसंत के दर्शन❀ झांझ पखावज सूं ❀ राग बसंत ❀ हरिरिह व्रजयुवतीशतसंगे । विलसति करिणीगणवृतवारणवर इव रतिपतिमानभंगे । ध्रुव०। विभ्रमसंभ्रमलोलविलोचनसूचितसंचितभावं । कापि दृगंचलकुवलयनिकरैरंचति तं कलरावं ॥ १ ॥ स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीच्य हरेरतिकंद् । चुंबति कापि नितंबवतीकरतलधृतचिबुकममंदं ॥ २॥ उद्‌भटभावविभावितचापलमोहननिधुवनशाली । रमयति कामपि पीनघनस्तनविलुलितनववनमाली ॥ ३ ॥ निजपरिरंभकृतेनुद्रुतमभिविच्य हरिं सविलासं । कामपि कापि बलादकरोदग्रे कुतुकेन सहासं ॥ ४ ॥ कामपि नीवीबंध विमोकससंभ्रमलज्जितनयनां । रमयति संप्रति सुमुखि बलादपि करतलधृतनिजवसनां ॥ ५ ॥ प्रियपरिरंभाविपुलपुलकावलि द्विगुणितसुभगशरीरा । उद्‌गायति सखि कापि समं हरिणा रतिरणधीरा ॥६। विभ्रमसंभ्रमगलदंचलमलयांचितमंगमुदारं । पश्यति सस्मितमपि विस्मितमनसा सुदृशः सविकारं ॥७॥ चलति कयापि समं सकरग्रहमलसतरं सविलासं । राधे तव पूरयतु मनोरथमुदितमिदं हरि रासं ॥८॥ ❀५४०❀राग बसंत❀विहरतिहरिरिह सरसवसंते । नृत्यति युवतिजनेन समंसखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ ध्रु०॥ ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे । मधुकर निकरकरंबितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे ॥१॥ उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे । अलिकुलसंकुलकुसुमसमूह निराकुलबकुलकलापे ॥ २ ॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले । युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ॥३॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेसरकुसुमविकासे । मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृत स्मरतूणविलासे ॥ ४ ॥ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे । विरहिनिकृंतनकुंतमुखा-

कृति केतकिदंतुरिताशे ॥ ५ ॥ माधविकापरिमलललिते नवमालतिजाति सुगंधौ । मुनि-मनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ ॥ ६ ॥ स्फुटदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते । वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ॥७॥ 'श्रीजयदेव' भणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारं । सरसवसंतसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारं ॥८॥ ❀ ५४१ ❀ उत्सव भोग-आये ❀ राग बसंत ❀ गावत चली बसंत बधायो नंदराय-दरबार । बानिक बनिठनि चोख-मोख सों ब्रजजन सब इकसार ॥ १ अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक नव उर-हार । बेनी ग्रथित रुरत नितंब पर कहा कहूं बडडे बार ॥ २ ॥ मृगमद आड बडेरी अखियाँ आंजी अँजन पूरि । प्रफुलित वदन हसत दुलरावति मोहन जीवनमूरि ॥ ३ ॥ पग जेहरि केहरि कटि किंकिनी रह्यो विथकि सुनि मार । घोष-घोष प्रति गलिन-गलिन प्रति बिछुवन के झनकार ॥ ४ ॥ कंचन कुंभ सीस पर लीने मदन-सिंधु ते भरि कैं । ढांपे पीत वसन जतनन करि मौर मंजरी धरि कैं ॥ ५ ॥ अबीर गुलाल अरगजा सोंधो विधि न जात विस्तारी । मैंन-सैन ज्योनार देन कों कमलनि कमलन थारी ॥ ६ ॥ पहुंची जाय सिंहपोरी जब विपुल जुवति समुदाई । निज मन्दिर ते निकसि जसोदा सन्मुख आगे आई ॥ ७ ॥ भई भीर भीतर भवनन में जहां ब्रजराजकिसोर । भरति भांवते प्रानपिया कों घेरि फेरि चहुं ओर ॥ ८ ॥ ब्रजरानी जब मुरि-मुसिकानी पकरन भई जब कर की । ल सङ्ग सखी लखी कछु बतियां मिस ही मिस उत सरकी ॥ ९ ॥ कुमकुम रङ्ग सों भरि पिचकारी छिरकैं जे सुकुमारी । बरजत छींटे जात दृगन मे धनि वे पोंछनहारी ॥ १० ॥ चन्दन वन्दन चोवा मथि कै नीलकंज लपटावे । अलक सिथिल और पाग सिथिल अति पुनि वे बांधि बनावे ॥११॥ भरति निसंक भई अङ्कवारी भुजन बीच भुज मेलैं । उन्मद ग्वालि बदति नहिं काहू झेल-खेल रस रेलैं ॥ १२ ॥ कियो रगमगो ललित त्रिभंगी

भयो ग्वालिन मनभायो । टकफक मे झुकि एकहि बिरियां लालन कंठ लगायो ॥ १३ ॥ ताल मृदङ्ग लिये श्रीदामा पहुँचे आय सहाई । हलधर सुबल तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥ १४ ॥ खेल मच्यो मणिखचित चौक में कविपै कहा कहि जावे । 'चत्रुभुज'प्रभु गिरिधरनलाल छबि देखे ही बनि आवे ॥ १५॥ ❀ ५४२ ❀ राग बसंत ❀ श्रीपंचमी परम मंगल दिन मदन-महोत्सव आज । बसंत बनाय चली ब्रजसुंदरि लै पूजा को साज ॥ १ ॥ कनक कलस जल पूरि पढत रति काममंत्र रसमूल । तापर धरी रसाल मंजरी आवृत पीत दुकूल ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा नव केसर घनसार । धूप दीप नाना नीरांजन विविध भांति उपहार ॥ ३ ॥ बाजत ताल मृदङ्ग मुरलिका बीना पटह उपंग । गावत राग बसंत मधुर सुर उपजत तान तरंग ॥ ४ ॥ छिरकत अति अनुराग मुदित गोपीजन मदनगोपाल । मानो सुभग कनक कदली मधि सोभित तरुन तमाल ॥ ५ ॥ यह विधि चली रतिराज बधावन सकल घोष आनन्द । 'हरिजीवन' प्रभु गोवर्धनधर जय-जय गोकुलचन्द ॥ ६ ॥ ❀ ५४३ ❀ राग वसंत ❀ कुच गडुवा जोबन मौर कंचुकी वसन ढांपि राख्यो है वसन्त । गुन मन्दिर अरु रूप बगीचा ता मधि बैठी है मुख लसन्त ॥१॥ कोटि काम लावन्य बिहारी जू जाहि देखत सब दुख नसन्त । ऐसे रसिक 'हरिदास' के स्वामी ताहि भरन आई मिलन हसन्त ॥ २ ॥ ❀ ५४४ ❀ राग वसंत ❀ लाल ललित ललितादिक सङ्ग लिये बिहरत वर वसन्त ऋतु कला सुजान । फूलन की कर गेंदुक लिये पटकत पट उरज छिये हसत-लसत हिलि मिलि सब सकल गुन निधान ॥ १ ॥ खेलत अति रस जो रह्यो रसना नहिं जात कह्यो निरखि-परखि थकित भये सघन गगन जान । 'छीतस्वामी' गिरिवरधर विट्ठल पद पद्मरेनु वर प्रताप महिमा ते कियो कीरति गान ॥ २ ॥ ❀ ५४५ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग वसंत ❀ गिरिधरलाल की बानिक ऊपर

बस कीनी नागर नन्ददुलारे ॥ ३ ॥ ताल मृदंग मुरली डफ बाजे झांझन की झनकारे । 'सूरदास' प्रभु रीझि मगन भये गोपवधू तन वारे ॥४॥❀५४९❀ ❀ सेनभोग आये ❀ राग वसंत ❀ राधे जू आज बन्यो है वसंत । मानो मदन विनोद विहरत नागरी नव कंत ॥ १ ॥ मिलत सन्मुख पाटली पट मत्त मान जुही । बेली प्रथम समागम कारन मेदिनी कच गुही ॥ २ ॥ केतकी कुच कमल कंचन गरे कंचुकी कसी । मालती मद विसद लोचन निरखि मुख मृदु हसी ॥ ३ ॥ विरह ब्याकुल कमलिनी-कुल भई बदन विकास । पवन परसत सहचरी पिक गान हृदय विलास ॥ ४ ॥ उत सखी चम्पक चतुर अति कदम नौतन माल । मधुप मनिमाला मनोहर 'सूर' श्रीगोपाल ॥ ५ ॥ ❀ ५५० ❀ राग वसंत ❀ प्यारी नवल नव बन केलि । नवल विटप तमाल अरुझी मालती नव-बेलि ॥ १ ॥ नव वसंत हसंत द्रुम-गन जरा जारे पेलि । नवल मिथुन विहँग कूजत मची ठेलाठेलि ॥ २ ॥ तरनितनया तट मनोहर मलय पवन सहेलि । बकुल कुल मकरंद लंपट रहे अलिगन झेलि ॥ ३ ॥ यह समै मिलि लाल गिरिधर मान दुख अवहेलि । 'कृष्णदासनिनाथ' नवरंग तू कुमारी नवेलि ॥ ४ ॥ ❀ ५५१ ❀ ❀ राग वसंत ❀ प्यारी देखि बन के चैन । भृङ्ग कोकिल सब्द सुनि सुनि होत प्रमुदित मैन ॥ १ ॥ जहां बहत मंद सुगंध सीतल भामिनी सुख सेन । कोन पुन्य अगाध को फल तू जो बिलसत ऐन ॥ २ ॥ लाल गिरिधर मिल्यो चाहत मोहन मधुरे बैन । 'दास परमानन्द' प्रभु हरि चारु पंकज नैन ॥ ३ ॥ ❀ ५५२ ❀ राग वसंत ❀ प्यारी देखि बन की बात । नव बसंत अनंत मुकुलित कुसुम अरु द्रुम पात ॥ १ ॥ बेनु-धुनि नंदलाल बोली तुम कितहि अलसात । करत कितही विलंब भामिन वृथा ओसर जात ॥ ॥ २ ॥ लाल मरकतमनि छबीलो तू जो कंचन गात । बनी 'हित हितवंस' जोरी उभै गुनगान गात ॥ ३ ॥ ❀ ५५३ ❀

❀ भोग सरे ❀ राग वसंत ❀ आई ऋतु चहूँदिस फूले द्रुम कानन कोकिला समूह मिलि गावत वसंत हि । मधुप गुञ्जारत मिलत सप्तसुर भयो है हुलास तन मन सब जंतहि ॥ १ ॥ मुदित रसिक जन उमगि भरे हैं नहिं पावत मन्मथ सुख अंतहि । 'कुंभनदास' स्वामिनी बेगि चलि यह समें मिलि गिरिधर नव कंतहि ॥ २ ॥ ❀ ५५४ ❀ सेन दर्शन ❀ राग वसंत ❀ ऐसो पत्र पठायो नृप वसंत । तुम तजहु मान मानिनी तुरंत ॥ १ ॥ कागद नवदल अंबपात । द्वात कमल मसि भमरगात ॥ २ ॥ लेखनी काम के बान चाप । लिखि अनंग ससि दई है छाप ॥ ३ ॥ मलयानिल पठयो करि विचार । बांचै सुक पिक तुम सुनो नार ॥ ४ ॥ 'सूरदास' यों बदत बान । तू हरि भजि गोपी तजि सयान ॥ ५ ॥ ❀ ५५५ ❀ राग वसंत ❀ गोवर्धन की सिखर चारु पर फूली नव माधुरी जाय । मुकुलित फलदल सघन मंजरी सुमन सुसोभित बहुत भाय ॥ १ ॥ कुसुमित कुंज पुञ्ज द्रुम बेली निर्झर झरत अनेक ठांय । 'छीतस्वामी' ब्रजयुवतीयूथ मे विहरत है गोकुल के राय ॥ २ ॥ ❀ ५५६ ❀

❀माघ सुदी ६❀मंगला दर्शन❀ राग वसंत❀ खेलत वसंत निस पिय संग जागी । सखी वृंद गोकुल की सोभा गिरिधर पिय पदरज अनुरागी ॥ १ ॥ नवल-कुञ्ज मे गूंजत मधुप पिक विविध सुगन्ध छींट तन लागी । 'कृष्णदास' स्वामिनी युवती यूथचूड़ामनि रिझवत प्रानपति राधा बड़भागी ॥ २ ॥ ❀ ५५७ ❀ शृंगार समय ❀ राग वसंत ❀ देखियत लाल लाल द्दग डोरे । काके संग खेले वसंत करि निहोरे ॥ १ ॥ सजलताई प्रगट मानो कुमकुम रसबोरे । अरुनताई भई गुलाल बंदन सित छोरे । अञ्जन छबि लागत मानो चोवा छबि चोरे । बरुनी मानो नूतन पल्लव अधर भये सिधोरे॥३॥ कबहू रसमत नाचत दोऊ कटाच्छन कोरे । गान सूरति भई मानो विविध तान तोरे ॥ ४ देखियत अति सिथिलताई मांझ झकझोरे । काहे कूं

कहत कछू जाने मन मोरे ॥ ५ ॥ सन्मुख रहे कबहू मुख फेरि जात लजोरे । 'रसिक' प्रीतम मेरे तुम आये काके भोरे ॥ ६ ॥ ❀ ५५८ ❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग वसंत ❀ स्याम सुभग तन सोभित छींटैं नीकी लागी चंदन की । मंडित सुरङ्ग अबीर कुमकुमा अरु सुदेस रज वंदन की ॥१॥ गिरिधर लाल रची विधि मानो युवतीजन मन फंदन की । 'कुंभनदास' मदन तन-धन बलिहार कियो नंदनंदन की ॥ २ ॥ ❀ ५५९ ❀ गोपीवल्लभ सरे ❀ राग वसंत ❀ जसुदा नहिं बरजे अपनो बाल । अपनो बाल रसिया गोपाल ॥१॥ स्नान करन गई जमुना तीर । कर कंकन आभरन धरे चीर ॥ २ ॥ मेरी जल प्रवाह तनु गई दीठ । पाछे ते कान मेंगी मलत पीठ ॥ ३ ॥ यह अन्न न खाय मुख पीवे न खीर । यह केतिक बार गयो जमुना तीर ॥४॥ हों वारी री ग्वालिन तेरो ज्ञान । यह पलना झूले मेरो बारो कान ॥५॥ वृन्दावन देखे मैं तरुन कान । घर आइके कैसे होत अयान ॥ ६ ॥ उठि चली री ग्वालि जिय उपजी लाज । 'सूरदास' ये प्रभु के काज ॥ ७ ॥ ❀ ५६० ❀ राजभोग आये ❀ राग वसंत ❀ रिंगन करत कान आंगन में कर लिये नवनीत । सोभित नील जलद तन सुन्दर पहरे झगुली पीत ॥ १ ॥ रुनझुन-रुनझुन नूपुर बाजे त्यों पग ठुमकि धरे । कटि किंकनी कलराव मनोहर सुनि किलकार करे ॥ २ ॥ दुलरी कंठ कुंडल दोउ कानन दियो है कपोल दिठौना । भाल विसाल तिलक गोरोचन अलकावली अलि छोना ॥ ३ ॥ लटकन लटकि रह्यो भुव ऊपर कुलह सुरंग बनी । सिंहपौरि ते उझकि-उझकि के छबि निरखत है सजनी ॥ ४ ॥ नंदनंदन उन तन चितवत ही प्रेम मगन मन आई । कंचनथार साजि घर-घर ते बहु विधि भोजन लाई ॥ ५ ॥ मनिमंदिर मूढा पै सुन्दरी आछे वसन बिछावें । बालकृष्ण कों जो रुचि उपजैं अपुने हाथ जिमावैं ॥ ६ ॥ जल अचवाय वदन पोंछत और बीरी देत सुधारी । हिये लगाय बदन चुंबन करि सर्वसु डारत वारी

॥ ७ ॥ नैनन अञ्जन दै लालन के मृगमद खोर करे। सुरङ्ग गुलाल लगाय कपोलन चिबुक अबीर भरे ॥ ८ ॥ चोवा चंदन छिरकि अबीर गुलालन फैंट भराई। तनक-तनक सी मोहन कों भरि देत कनक पिचकाई ॥ ९ ॥ आपुस मांझ परस्पर छिरकत लालन पैं छिरकावै। नैंनी नैंनी मुठी भराय रंगन सों सैनन नैन भरावै ॥१०॥ निरखि-निरखि फूलत नंदरानी तन मन मोद भरी। नित प्रति तुम मेरे घर आओ मानौं सुफल घरी ॥ ११ ॥ देत असीस सकल ब्रजवनिता जसुमति भाग तिहारो। कोटि बरस चिरजीयो यह 'ब्रज' जीवन प्रान हमारो ॥ १२ ॥ ❀ ५६१ ❀ राग वसंत ❀

अद्भुत सोभा वृन्दावन की देखो नंदकुमार। कंत वसन्त जानि आवत बन बेलों कियो सिंगार ॥ १ ॥ पल्लव बरन बरन पहिरे तन बरन बरन फूले फूल। ये तो अधिक सुहायो लागत मनि अभरन समतूल ॥ २ ॥ नंदनंदन विहंग अनङ्ग भरी बाजत मनहुँ बधाई। मङ्गल गीत गायवे कों मानो कोकिल वधू बुलाई ॥ ३ ॥ बहत मलय मारुत परचारग सबके मन संतोसे। द्विज भोजन सोहत आलिंगन मधु मकरन्द परोसे ॥ ४ ॥ सुनि सखी वचन 'गदाधर प्रभु' के चलो सखी तहाँ जैये। नवल निकुंज महल मंडप में हिलि-मिल पंचम गैये ॥ ५ ॥ ❀ ५६३ ❀भोग सरे❀ राग वसंत ❀

एक बोल बोलो नँदनंदन तो खेलों तुम संग। परसों जिनि काहू कों प्यारे आन अंगना अङ्ग ॥ १ ॥ बरजति हों बीरी काहू की जसुमतिसुत जिनि लेहु। आलिंगन परिरंभन चुंबन नैन सैन जिनि देहु ॥२॥ मेरे खेल बीच कोऊ भामिनी आय लाल कों भरि है। प्राननाथ हौं कहे देत हों मोपैं सही न परि है ॥ ३ ॥ प्रभु मोहि भरो भरौं हौं प्रभु कों खेलो कुंज बिहारी। 'अग्र स्वामी' सों कहति स्वामिनी रंग उपजैगो भारी ॥ ४ ॥ ❀ ५६३ ❀

ग्वाल के दर्शन में डोल तक ये पद गावनो

❀ राग वसंत ❀ अति सुन्दर मनिजटित पालनो झूलत लाल बिहारी।

खेलत फाग सखा संग लीने नाचत दै कर तारी ॥ १ ॥ घर घर ते आई बनि-बनि के पहिरे नौतन सारी । तनक गुलाल अबीरन ले कै छिरकत राधा प्यारी ॥ २ ॥ गावत हैं गारी आंगन में प्रमुदित मनो सुकुमारी । चोवा चन्दन अगर कुमकुमा देत सीस ते ढारी ॥ ३ ॥ लपटि रहे तन बसन रंग में लागत हैं सुखकारी । विवस भई देखत मनमोहन भरि लीने अङ्कवारी ॥ ४ ॥ मिस ही मिस ढिंग आय पालनो झुलवत ब्रज की नारी । अबीर गुलाल कपोलन हँसत दे दे कर तारी ॥ ५ ॥ तन मन मिली प्रानप्यारे सों नोतन सोभा बाढ़ी । सिथिल वसन मुकुलित कबरी मानों प्रेमसिंधु तें काढी ॥ ६ ॥ यह सुख ऋतु वसन्त लीला मे बालिकेलि सुखकारी । सरवसु देत वारि प्यारे पै 'जन गोविंद' बलिहारी ॥७॥ ❁५६४❁

फागुन बदी ६ तक मंगला में वसंत के ये कीर्तन गवैं ।

❁ राग वसंत ❁ आज कछु देखियत ओर ही बानक प्यारी तिलक आधे मोती मरगजी मंग । रसिक कुंवर संग अखारे जागी सजनी अधरसुख निस बजावत उपंग ॥१॥ नव निकुंज रंगमंडप में नृत्यभूमि साजि सेज सुरंग । तापर विविध कल कूजित सखी सुनत श्रवन वन थकित कुरंग ॥ २ ॥ 'कृष्णदास' प्रभु नटवर नागर रचत नयन रतिपति व्रत भंग । मोहनलाल गोवर्धनधारी मोहि मिलन चलि नृत्य अनंग ॥ ३ ॥ ❁ ५६५ राग वसंत❁ कोयल बोली सब बन फूले मधुप गुंजारन लागे । मिलि भयो सोर रोर वृन्दावन मदन महीपति जागे ॥ १ ॥ तिन दीने दूने अंकुर पल्लव जे पहले दव दागे । मानो रतिपति रीझि जाचकन बरन-बरन दिये बागे ॥ २ ॥ नई प्रीति नई लता पहुंप नये-नये-नये रस पागे । नयो नेह नव नागर हरखत सुर सुरंग अनुरागे ॥ ३ ॥ ❁ ५६६ ❁राग वसंत❁ तेरे नैन उनीदे तीन पहर जागे काहे कों सोवत अब पाछली निसा । कछू अलसात बीच श्रम लागत श्रीपति न जाय अधिक रिसा ॥१॥ गिरिधर

पिय को वदन सुधा रस पान करत नहिं जात तृसा। एते कहत होय जिनि प्रगटित रतिरस-रिपु रवि इन्द्र-दिसा ॥ २ ॥ तुव मुख-जोति निरखत उडुपति मगन होत निरखि जलद खिसा । 'कृष्णदास' बलि-बलि वैभव की नव निकुंज गृह मिलत निसा ॥ ३ ॥ ❀ ५६७ ❀

वसंत सूं रोपणी तक क्रीट धरैं तब सिंगार समय

❀ राग वसंत ❀ वंदों पदपंकज विट्ठलेस । श्रीवल्लभ-कुल दीपक सुवेस ॥ १ ॥ जिनकी महिमा जे कहैं उदार । अति जस प्रगट कियो संसार ॥ २ ॥ अनुसरत नीच जे तजि विकार । तिनैं भव-निधि तरत न लगत वार ॥ ३ करि सार अर्थ भागवत प्रमान । कीने खंडन पाखंड आन ॥४॥ बांधी मर्यादा सब वेद मान । जन-दीन उद्धरन सुख निधान ॥ ५ ॥ तिहीं वंस आनन्द देन । श्रीपुरुषोत्तम सब सुख के ऐन ॥ ६ ॥ ❀ ५६८ ❀

❀ राग वसंत ❀ गोपीजन-वल्लभ जैं मुकुंद । मुख मुरलीनाद आनन्द कंद ॥ १ ॥ जैं रास-रसिक रवनी अवेस । सिखिन सिखंड बिराजे केस ॥ २ ॥ गुंजा वनधातु विचित्र देह । दरसन मन हरन बढावैं नेह ॥ ३ ॥ जैं सुंदर मन्दिर धरन-धीर । वृन्दावन विहरत गोप-वीर ॥ ४ ॥ वनिता सत यूथ हैं परमधाम । लावन्य कलेवर कोटि काम ॥ ५ ॥ जैं-जैं वैजयन्ती बनी माल । जैं कमल अरुन लोचन विसाल ॥ ६ ॥ कुंडल मंडित भुज दंड मूल । नृत्य करत कालिंदी कूल ॥ ७ ॥ जैं जैं पुलकित खग मराल । सुर नर मुनि ध्यानी ध्यान टाल ॥ ८ ॥ सार पिक मूर्छित सु तान । मुनि देखि थकित भये सुर विमान ॥ ९ ॥ जैं जैं श्रीकृष्ण कला निधान । करुनामय यदुकुल-जलज भान ॥ १० ॥ भगवंत अनन्त चरित्र तार । कहे 'माधोदास' मन मगन मार ॥ ११ ॥ ❀ ५६९ ❀ शृंगार दर्शन ❀

❀ राग वसंत ❀ वन्दो पदपंकज नंदलाल । जे भव तारन पूरन कृपाल ॥ १ ॥ चित चिंतित हो बुद्धी विसाल । कृपा करन अरु दीनदयाल ॥२॥

सदा बसो मेरे हृदय मांय । कुंवर माधुरी चितहि धाय ॥ ३ ॥ तिमिर हरन सुखकरानंद । मुनि वंदन आनंद कंद ॥ ४ ॥ स्याम मुकुटमनि कमल नैन। छबि समूह पर लजित मैन ॥ ५ ॥ गोकुलपति गुन नाहिन पार । श्रीनंद सुवन सुमिरो उदार ॥ ६ ॥ निगमागम सब ओघ सार । सोई वृन्दावन प्रगट्यो विहार ॥ ७ ॥ ऋतु वसंत पहली समाज । तहां मुदित युवती जन सजे साज ॥ ८ ॥ मुदित चली जहां 'सूरस्याम' । वसंत बधावन नंदधाम ॥ ९ ॥ ❀ ५७० ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग वसंत ❀ नंदनंदन श्रीवृषभाननृपनन्दिनी सरस ऋतुराज विहरत वसंते । इत सखा सङ्ग सोभित श्रीगिरिवरधरन ऊत युवती जन मध्य राधा लसंते ॥ १ ॥ सूरजा तट सुभग परम रमनीय वन सुखद मारुत मलय मृदु वहंते । प्रफुल्लित मल्लिका मालती माधवी कुहुकुहू सब्द कोकिल हसंते ॥ २ ॥ विविध सुर तान गावत सुघर नागरी ताल कठताल बाजत मृदंगे । वेनु बीना अमृतकुंडली किन्नरी झांझ बहो भांति आवज उपंगे ॥ ३ ॥ चंदन सु वंदन अबीर नव अरगजा मेद गोरा साख बहु घसंते । छिरकत परस्पर सु दंपती रस भरे करत बहु केलि मुसकनि हसंते ॥ ४ ॥ देखि सोभा सुभग मोहे सिव विधि तहां थकित अमरेस लज्जित अनंगे । 'गोविंद प्रभु' पिय हरिदासवर्यधर घोख-पति युवतीजन मान भंगे ॥ ५ ॥ ❀ ५७२ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग वसंत ❀ राजा अनंग मंत्री गोपाल । कियो मुजरा करि छाइ भाल ॥ ध्रु० ॥ प्रथम पठाई नीति जाई । पुनि सिंहासन बैठे आई ॥ कर जोरे रहे सीस नाई । विनती करि मांगत राजा राई ॥ १ ॥ फूले चहुं दिस तरुवर अनेक । बोलत कपोल सुक हंस भेक ॥ अति आमोद भरि छांडे न टेक । तहां लेत रास अलि करि विवेक ॥ २ ॥ तब कियो तिलक रति-राज आनि । तब लावत भेट जिय डरहि मानि ॥ मानो हरित बिछोना रह्यो ठानि । तरुवर दलांकित ताल जानि ॥ ३ ॥ नायक मन भायो काम राज । छांडी

सबनते दुहू लाज। अपुने अपुने मिलि समाज। डोलत रससागर चढि जहाज ॥ ४ ॥ अति चतुर राजमंत्री हि देखि। तब दियो राज अपुनो विसेख। तब अपुनो 'गोपाल दास' लेख। छांडो कबहू जिनि पल निमेख ॥ ५ ॥ ❀ ५७२ ❀ संध्या समय ❀ राग वसंत ❀ हरिजू के आवन की बलिहारी। वासर गति देखति हैं ठाड़ी प्रेम मुदित ब्रजनारी ॥ १ ॥ ऋतु वसंत कुसुमित वन देखियत मधुप वृंद यस गावैं। जे मुनि आय रहत वृंदावन स्याममनोहर भावैं ॥ २ ॥ नीको भेख बन्यो मनमोहन राजति मनि उर हार। मोरपच्छ सिर मुकुट बिराजत नंदकुमार उदार ॥ ३ ॥ घोख प्रवेस कियो है संग मिलि गौरज मंडित देह। 'परमानंद स्वामी' हित कारन जसुमति नंद सनेह ॥४॥ ❀५७३❀ सेंन भोग आये❀राग वसंत ❀ आयो ऋतुराज साज पंचमी बसंत आज मौरे द्रुम अति अनूप अंब रहे फूली। बेली पट पीत माल सेत पीत कुसुम लाल उडवत सब स्याम भाम भमर रहे भूली ॥ १ ॥ रजनी अति भई स्वच्छ सरिता सब विमलपच्छ उड्डुगनपति अति अकास बरखत रसमूली। जती सती सिद्ध साधु जिततित उठिभागे समाज विमन जटी तपसी भये मुनि मन गति भूली ॥ जुवती जूथ करत केलि स्याम सुखद सिंधु झेलि लाज लीक दई पेलि परसि पगन भूली। बाजत आवज उपंग बांसुरी मृदंग चंग यह सुख सब 'छीत' निरखि इच्छा अनुकूली ॥ ३ ॥ ❀ ५७४ ❀ ❀ राग बसंत ❀ ऋतु बसंत वृंदावन विहरत ब्रजराज काज साजे द्रुम नव पल्लव प्रफुलित पोहोपन सुवास। कलापी कपोत कीर कोकिल कमनीय कंठ कूजत श्रवनन सुनत होत है हो हिय हुलास ॥ १ ॥ तैसोई त्रिविध पवन बहत तैसोई सीतल सुगंध मंद रंग उपजत है हो अति उल्लास। 'प्रभु कल्यान' गिरिधर उत युवतीयूथ मधि राधा केसर छिरकत अबीर गुलाल उडावत आवत है हो करैं रंग रास ॥ २ ॥ ❀ ५७५ ❀ राग बसंत ❀ ऋतु बसंत तरु लसंत मन हसंत कामिनी भामिनी सब अंग-अंग रमत फागरी।

चर्चरी अति विकट ताल लागत संगीत रसाल उरप-तिरप लास्य तांडव
लेत लागरी ॥ १ ॥ बंदन बूका गुलाल छिरकत तकि नैन भाल लाल
गाल मृगज लेप अधर दागरी । गिरिवरधर रसिकराय मेचक मुदरी
लगाय कंचुकी पर छाप दीनी चकित नागरी ॥ २ ॥ बाजत रसना मंजीर
कूजत पिक मोर कीर पवन भीर यमुना तीर महल बागरी । 'विष्णुदास'
प्रभु प्यारी भेटत हँसि देत तारी काम कला निपट निपुन प्रेम आगरी ॥३॥
❀५७६❀ राग बसंत ❀ ऋतु बसंत वृंदावन फूले द्रुम भांति-भांति सोभा
कछु कहि न जाति बोलत पिक मोर कीर । खेलत गिरिधरनधीर संग
ग्वाल वृन्द भीर विहरत मिलि यमुना तीर बाढ़ी तन मदन पीर ॥ १ ॥
आई व्रज नवल नारी संग राधिका कुमारी कीने नवसत सिंगार साजे नव
वसन चीर । वदनकमल नैन भाल छिरकत केसर गुलाल बूका चोवा रसाल
सोंधो मृगमद अबीर ॥ २ ॥ बाजत बीना मृदंग बाँसुरी उपंग चंग मदन-
भेरि डफ झांझ झालरी मंजीर । निरखत लीला अपार भूली सुधि-बुधि
संभार बलिहारी 'कृष्णदास' देखत ब्रजचंद धीर ॥ ३ ॥ ❀ ५७७ ❀
❀ सेन दर्शन ❀ राग बसंत ❀ देखो वृंदवान की भूमी को भाग । जहाँ राधा-
माधो खेलैं फाग ॥ ध्रु० ॥ जाको सेस सहस्र मुख लहै न अंत । गुन गावैं
नारदसे अनंत ॥ जाकों अगम निगम कहै तेजपुंज । सो तो हो हो हो करि
फिरत कुंज ॥ १ ॥ जाके कोटिक ब्रह्मा कोटि इन्द्र । जाके कोटिक सूरज
कोटि चन्द्र ॥ जाको ध्यान धरत मुनि रहे हैं हार । ताकों सकल गोपी
मिलि देत गार ॥ २ ॥ सो है मोरमुकुट सिर तिलक भाल । ललित लोल
कुंडल विसाल ॥ जाके मुसकनि बोलनि चलनि चाल । लखि मोहि रही
सब व्रज की बाल ॥ ३ ॥ जाके बाजे बाजत तरल ताल । सुर महुवरि धुन
अतिही रसाल ॥ बीना मृदंग मुरली उपंग । बाजे राय गिरगिरी और
चंग ॥ ४ ॥ जाकों वेद कहत हैं नेत नेत । तापै हँसि-हँसि ग्वालिन फगुवा

लेत ॥ राधाजू को वल्लभ उर को हार। 'हित मुरलीदास' करो नित विहार ॥ ५ ॥ ❀ ५७८ ❀ सेहरा धरे तब ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग वसन्त ❀ आओरी आओ सब मिलि गाओ री बसंत राग बधावो री कलस लैं सब भाम। मौर बाँधि दूल्हेराज बैठ्यो धर सिंहासन प्रफुलित भये तब रूप लाल सुन्दरस्याम ॥ १ ॥ छिरक्योरी नवललाल चोवा मृगमद गुलाल सोंधो लैं परसोंरी मुदित भयो काम। बजाओरी अनेक बाजे सुरमंडल बीन नाद 'मदनमोहन' वृन्दावन ब्रजधाम ॥ २ ॥ ❀ ५७९ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग वसन्त ❀ देखो राधा माधो सरस जोर। खेलत बसंत पिय नव किसोर ॥ ध्रु० ॥ इत हलधर संग समस्त बाल। मधि नायक सोहे नंदलाल ॥ उत युवतीयूथ अद्भुत सरूप। मधि नायक सोहैं स्यामा अनूप ॥१॥ बहुरि निकसि चले यमुना तीर। मानों रतिनायक जात धीर ॥ देखत रति नायक बने जाय। संग ऋतु बसंत लै परत पाय ॥ २ ॥ बाजत ताल मृदंग तूर। पुनि भेरि निसान रवाब भूर ॥ डफ सहनाई झांझ ढोल। हसत परस्पर करत बोल ॥ ३ ॥ चोवा चंदन मथि कपूर। साख जवाद अरगजा चूर ॥ जाई जूई चंपक रायवेलि। रसिक सखन मे करत केलि ॥४॥ ब्रज बाढ्यो कौतुक अनंत। सुन्दरी सब मिलि कियो मंत ॥ तुम नंदनंदन कों पकरि लेहु। सखि संकर्षण कों मार देहु ॥ ५ ॥ तब नवलवधू कीनो उपाय। चहुँदिस ते सब चली धाय ॥ श्रीराधा स्याम कों पकरि लाय। सखि संकर्षण जिनि भाज जाय ॥६॥ अहो संकर्षणजू सुनो बात। नंदलाल छांड़ि तुम कहाँ जात ॥ दै गारी बहुविधि अनेक। तब हलधर पकरे सखी एक ॥७॥ अंजन हलधर नैन दीन। कुमकुम मुखमर्दन जु कीन ॥ हलधर जू फगुवा आनि देहु। तुम कमल नैन कों छुड़ाय लेहु ॥ ८ ॥ जो मांग्यो सो फगुवा दीन। नवललाल संग केलि कीन ॥ हँसत खेलत चले अपुने धाम। ब्रजयुवती भई पूरनकाम ॥ ९ ॥ नंदरानी ठाडी पौरि द्वार। नोछावरि करि देत वारि। वृषभानसुता

संग रसिक राय । 'जन मानिकचंद' बलिहारी जाय ॥ १० ॥ ❀ ५८० ❀ ❀ राग वसंत ❀ और राग सब भये बराती दूलहै राग वसंत । मदन महोत्सव आज सखीरी बिदा भयो हेमंत ॥ १ ॥ सहचरी गान करत ऊंचेस्वर कोकिला बोल हसन्त । गावत नारी पञ्चम सुर ऊंचे जेसोई पिय गुनवंत ॥ २ ॥ कर धरि लई कनक पिचकाई मनोहर चाल चलन्त । 'कृष्णदास' गिरिधर प्यारी कों मिल्यो है भावतो कंत ॥ ३ ॥ ❀ ५८१ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग वसंत ❀ खेलत वसंत बलभद्रदेव । लीला अनंत कोऊ लहे न भेव ॥ ध्रु० ॥ सनकादि आदि सुख रचे ग्वार । प्रगट करन ब्रजरज विहार । सुखनिधि गिरिवरधरनधीर । लियो बांटि-बांटि झोलिन अबीर ॥ १ ॥ अर्जुन तोक सुबल सीदाम । सखा सिरोमनि करत काम । मधुमंगल आदि समस्त ग्वाल । बने सब के सिरोमनि नंदलाल ॥ २ ॥ रचि पचि बहु अंबर बनाय । बागे बहु केसर रंगाय । रही पाग लसि सिर सुरङ्ग । कुंवर रसिकमनि श्रीत्रिभंग ॥ ३ ॥ सुनत चपल सब उठी हैं बाल । भरि भाजन लीने गुलाल । हुलसि उठी तजि लोक लाज । लई बोलि सब सखी समाज ॥ ४ ॥ काहू की कोऊ न बदत कानि । भरत हितुन कों जानि जानि । ब्रजराजकुंवर वर निकट आय । नैनन सिराय निरखे अघाय ॥५॥ चतुर सखी एक हास कीन । दुरिमुरि बचाय दृग गांठि दीन । पाछे तें तारी बजाय । ब्याह गीत सब उठी गाय ॥ ६ ॥ तब बोले स्यामघन अपने मेल । खेंच्यो चीर तब लख्यो खेल । लगी लाज चितवै न और । सखा कहैं आओ गांठि तोर ॥ ७ ॥ सुनत बाल सब चली धाय । बलभद्र वीर कों गह्यो जाय । कटि पटुका पट पीत लीन । भलीभांति रंग समर दीन ॥ ८ ॥ परम पुरुष कोऊ लहे न पार । ब्रजवासिन हित सहत गार । 'सूरस्याम' हँसि कहत बैन । बदत बैन सुख बहोत दैन ॥ ९ ॥ ❀ ५८२ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग वसंत ❀ बहुविध कला वन खेलो सघन द्रुम दूल्है

नंदकुमार । गोपी ग्वाल सबन मिलि महुवरि बजवत गावत फाग धमार ॥ १ ॥ इत फूली सकल ब्रजसुन्दरी मधि दुलही राधा सुकुमार । 'चतुर' सुजान दोऊ रस विलसत डारत प्रान लाल पर वार ॥ २ ॥ ❀ ५८३ ❀ ❀ सेन भोग आये ❀ वसंत पंचमी वसंत बधावो मोहन ठाड़े द्वार । भरि के कलस केसर गुलाल लै खिलाओ गोप कुंवार ॥ १ ॥ अति तरङ्ग नीली घोड़ी पर सजिके सकल सिंगार । बागो पाग केसरी सोहत झलकत कुंडल हार ॥ २ ॥ मरवट मुखहि तंबोल अंजन दै चंदन तिलक लिलार । मौर बांधि आयो ब्रज दूल्है दुलहिन राधा नार ॥ ३ ॥ गावत गीत सकल ब्रजवनिता चली राय दरबार । बाजे बजत घुरे निसान मखि सुरन परी झनकार ॥ ४ ॥ देव विमानन आय पहुँप बरखावत वारंवार । या सोभा कों को कवि बरने कहत न आवे पार ॥ ५ ॥ जुग-जुग राज करो यह जोरी मोहन नंदकुमार । 'मदनमोहन' की या छबि ऊपर जैये बलि बलिहार ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ५८४ ❀ राग वसंत ❀ बनि-ठनि खेलन आयो री वसंत । वृन्दावन धाम अद्भुत कोकिला किलकंत ॥ सेहरो सिर स्याम के सोभित दुलहिनी हुलसंत । मृगमद मलय कपूर कुमकुमा छिरकत राधाकंत ॥ २ ॥ मालती जाती जुही निवारी पवन बहत हेमंत । मंद सुगंध सीतल जमुनाजल लता वेलि लिपटंत ॥ ३ ॥ राधा गिरिधर विहरत दोऊ भये रस मे मंत । काम कला विलस रसभरे ऐसे ही विलसंत ॥ ४ ॥ ❀ ५८५ ❀ सेन दर्शन ❀ राग वसंत ❀ खेलत वसंत दूल्है हो गिरिधर दुलहिन राधा गोरी । बागो पाग केसरी सोहै राज जटित सिर मोरी ॥ १ ॥ मृगमद खोर करो मोहन के कुमकुम आड किसोरी । 'मदनमोहन' गिरिधर चिरजीयो स्यामा नागर जोरी ॥ २ ॥ ❀५८६❀ टिपारा धरैं तब ❀ राजभोग दर्शन ❀राग वसंत ❀ उड़त बंदन नव अबीर बहु कुमकुमा खेलत वसंत बन लाल गिरिवरधरन। मंडित सुअंग सोभा स्याम सोभित ललन मानो मन्मथ बान साजि आयो

लरन ॥ १ ॥ तरनि-तनयातीर ठौर रमनीक वन द्रुम लता कुसुम मुकुलित सु नाना वरन । मधुर सुर मधुप गुंजार करैं पिक सब्द रस लुब्ध लागे दसो दिस कुलाहल करन ॥ २ ॥ आई बनि-बनि सकल घोख की सुन्दरी पहिर तन कनक नव चीर पट आभरन । मधुर सुर गीत गावैं सुघर नागरी चारु निर्तत मुदित क्वणित नूपुर चरन ॥ ३ ॥ वदन पंकज अधर बिंब सोभित चारु झलकत कपोल अति चपल कुंडल करन । 'दास कुंभन' निनाथ हरिदासवर्यधर नंदनंदन कुंवर युवतीजन मन हरन ॥ ४ ॥ ❀ ५८७ ❀ राग वसंत ❀ नृत्यत गावत बजावत सासा गग मध-मध नीध-मध ओडव सुर राग हिंडोल । पंचम सुर लै अलाप उठत है सप्त मान थेई तथेई ताथेई थेई कहत बोल ॥ १ ॥ कनक वरन टिपारो कमल बरन काछनी छिरकत राधा करत कलोल । 'कृष्णदास' वृंदावन नटवर गिरिधर पिय सुरवनिता वारत हार अमोल ॥ २ ॥ ❀ ५८८ ❀ भोग के दर्शन ❀ ❀ राग वसंत ❀ आज ऋतुराज सब साज सोभा छई निरखि नव कुंज घन विपुल वृंदे । नवलजु तमाल नव तरुन पिय प्यारी मानो खेल खेलत राग रस छंदे ॥ १ ॥ केकी कल हंस कूजत मानो बाजे बाजत बहो घोर रस मंदे । चलत मधुपावली धाय सिर नाय मानो लिये गावत गुनी विकट अरविंदे ॥ २ ॥ केतकी कनक पिचकाई चाहन हरखि छिरकत ठौरठौर मकरंदे । उडत बंदन धूर पहोपन पराग मानो कंप मिस भरत भुज पिवत मकरंदे ॥ ३ ॥ नूतन पल्लव अरुन नलिन विमान चढि सोर चहुँओर सुर संघ चित कंदे । देखि मन फूल भमर मूल ते उड़िरहे मानो विहरैं नवल दंपती वृंदे ॥ ४ ॥ चलो भामिनी बेग दूर करि मान कों रंग रस हिलमिलो मेटि दुख द्वंदे । 'रसिक' पिय नवरंग लाल गिरिवरधरन जोहत पथ गोकुलानंदकंदे ॥ ५ ॥ ❀ ५८९ ❀ सेनभोग आये ❀ राग वसंत ❀ देखरी देख ऋतुराज आगम सखी सकल वन फूल आनंद छायो । ताल कदली धुजा

उमगि अति फरहरे संग सब आपुनी फोज लायो ॥ १ ॥ कोकिला कीर गुन गान आगे करत भृंग भेरी लिये संग आयो । घुरत निसान घनघोर मोरन कियो करत पिक सब्द गति अति सुहायो ॥ २ ॥ फिरत हैं हंस पद्चर चकोरन बहू सैल रति चमक चढि धमक धायो । उड़त बारूद नव कुमकुमा अरगजा तियन के कुचन तकि तमकरायो ॥ ३ ॥ पांच लै बान चहुँ ओर छोड़े प्रथम चाप लै आपु हाथन चलायो । दौर कर घाय धप लरत अति वीर लों घोर चहुंओर गढ़ मान ढायो ॥ ४ ॥ परी खलबली सब नारी उर मदन की मिलन मन स्याम अंचल फिरायो । जाति सब सुभट 'कृष्णदास' वृन्दाविपिन आये गिरिधरन कों सीस नायो ॥५॥ ❀ ५९० ❀ सेन दर्शन ❀ ❀ राग वसंत ❀ वृन्दावन विहसि धाम विहरत री स्यामा-स्याम मल्लकाछ फैंट बांधि खेलत वसंत । जटित टिपारो सीस नृत्य करत अनेक रंग उपजावत सप्तमान कोकिला हसंत ॥ १ ॥ बाजत मृदंग ताल सहनाई ढोल ढमक गावत हिंडोल राग भये रस मे मंत । 'मदनमोहन' गिरिवरधर राधा जू लै गुलाल बरखावत गगन-सघन गयो सूर छिपंत ॥२॥ ❀५९१❀ ❀ माघ सुदी १४ ❀ शृंगार समय ❀ राग वसंत ❀ चली हैं भरन गिरिधरन लाल कों बनि बनि अनगन गोपी । उबटी हैं उबटन नवल चपल तन मानो दामिनी ओपी ॥ पहरे वसन विविध रंग भूषन करन कनक पिचकाई । चंचल चपल बडे री अंखियां मानो अरघ लगाई ॥ २ ॥ छिरकत चली गली गोकुल की कही न परत छबि भारी । उडि-उडि केसर बूका बंदन अटि गये अटा अटारी ॥ ३ ॥ सखन सहित सजि सांवरे सुंदर सुनत ही सन्मुख आये । मनो अंबुज बनवास विवस ऽहै अलि लंपट उठि धाये ॥४॥ हरि-कर निरखि त्रिया पिचकाई नैना छबि सों ठहराई । खंजन से मानो उडि ऽब चले ऽहैं ढरकि मीन है जाई ॥ ५ ॥ पहले कान कुंवर पिचकाई भरि-भरि त्रियन कों मेलो । मानो सोम सुधाकर सींचत नवल प्रेम की बेलि

॥ ६ ॥ पिय के अङ्ग त्रियन के लोचन लपटे हैं छबि की ओभा । मानो हरि कमलन करि पूजे बनी है अनूपम सोभा ॥ ७ ॥ दुरि-मुरि भरन बचावन छबि सों आवनि उलटनि सोहे । घुमड्यो अबीर गुलाल गगन मे जो देखे सो मोहे ॥ ८ ॥ बिच-बिच छूटत कटाच्छ कुटिल सर उचटि हूलको लागी । मुरझि परयो लखि मैन महाभट रति भुज भरिलै भागी ॥ ९ ॥ कहां लों कहों कहत नहीं आवे छबि बाढी तिहिं काला । 'नंददास' प्रभु तुम चिरजीवो बाल नंद के लाला ॥ १० ॥ ❀ ५६२ ❀ राग वसंत ❀ मोहन वदन विलोकत अलियन उपजत है अनुराग । तरनि तप्त तलफत चकोर ससि पीवत पीयूष पराग ॥ १ ॥ लोचन नलिन नये राजत रति पूरे मधुकर भाग । मानो अलि आनंद मिले मकरंद पीवत रस फाग ॥ २ ॥ भ्रमरी भाग भ्रकुटी पर चंदन वंदन बिंदु विभाग । ता तकि सोम संक्यो घन-घन मे निरखत ज्यों वैराग ॥ ३ ॥ कुंचित केस मयूर चंद्रिका मंडित कुसुम सु भाग । मानो मदन धनुष सर लीने बरखत है बन बाग ॥ ४ ॥ अधर-बिंब तें अरुन मनोहर मोहन मुरली राग । मानो सुधा-पयोध घोरवर ब्रज पर बरखन लाग ॥ ५ ॥ कुंडल मकर कपोलन झलकत श्रमसीकर के दाग । मानो मीन कमल वर लोचन सोभित सरद तडाग ॥ ६ ॥ नासा तिल प्रसून पदवी तर चिबुक चारु चित खाग । डारयो दसन मन्द मुसिकावनि मोहत सुर नर नाग ॥ ७ ॥ श्रीगोपाल रस रूप भरे ये 'सूर' सनेह सुहाग । मानो सोभा सिंधु बढ्यो अति इन अखियन के भाग ॥८॥❀५९३❀ ❀शृंगार दर्शन❀ राग वसंत ❀ चटकीली चोली पहरे तन बिच-बिच चोवा लपटानी । परम प्रिय लागत प्यारी कों अपुने प्रीतम की बानी ॥ १ ॥ देखत सोभा अंग-अंग की मनसिज मन हि लजानो । 'सुघरराय' प्रभु प्यारी की छबि निरखि मोह्यो गोवर्धनरानो ॥ २ ॥ ❀ ५६४ ❀ माघ सुदी १५ ❀ ❀ साँझ कूं होरी रूपे तो ❀ शृंगार समय ❀ राग वसंत ❀ आज सुगभ दिन वसंत

पंचमी जसुमति करत बधाई । विविध सुगन्ध उबटि के लाल कों ताते नीर न्हवाई ॥१॥ बाँधी पाग वनाय श्वेत रंग आभूषन पहराई । तनक सीस पर मोर चंद्रिका दिस दाहिनी ढरकाई ॥२॥ गृह गृह ते ब्रज-सुन्दरी सब मिलि नंदपौरि पे आई । अंब मौर के पुष्प मंजरी कनक कलस बनाई ॥३॥ चोवा चन्दन अगर कुमकुमा केसर रंग मिलाई । प्रमुदित छिरकत प्रान पिया कों अबीर गुलाल उड़ाई ॥४॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ गावत गीत सुहाई । तन मन धन नोछावरि कीनो आनन्द उर न समाई ॥५॥ श्री गिरिवरधर तुम चिरजीवो भक्तन के सुखदाई । श्री वल्लभ पद रज प्रतापते 'हरिदास' बलिजाई ॥६॥ ❀ ५९५ ❀

❀ राग वसंत ❀ आज वसंत सबै मिलि सजनी पूजो मोहन मीत । हरद दूब दधि अच्छत लेकै गावो सौभग गीत ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा पहोप श्वेत अरु पीत । घर घर ते बानिक बनि आये आपु आपुनी रीत ॥२॥ मोहन को मुख निरखि के हो करिहो ब्रज की जीत । खेलत हँसत परम सुख उपज्यो गयो है द्यौस निस बीत ॥३॥ खेल परस्पर बढ्यो अति रंग सों रीझे मोहन मीत । 'कृष्णजीवन' प्रभु सुखसागर में छाँड़ो नांहि पसीत ॥४॥ ❀ ५९६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ आज वसंत बधावो है श्रीवल्लभ राज के द्वार । विट्ठलनाथ कियो है रचि रचि नव वसंत को सिंगार ॥१॥ वल्लभी सृष्टि समाज संग सब बोलत जय जयकार । पुष्टिभाव सों सेवा करत अति बाढ्यो है रंग अपार ॥२॥ प्रेम भक्ति को दान करत श्रीवल्लभ परम उदार । कृपा दृष्टि अवलोकि दास कों देत हैं पान उगार ॥३॥ श्रीवल्लभ राजकुमार लाल ब्रजराज कुँवर अनुहार । ऐसो अद्भुत रूप अनुपम 'रसिक' जात बलिहार ॥४॥ ❀ ५९७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग वसंत ❀ देखत वन ब्रजनाथ आज अति उपजत है अनुराग । मानो मदन वसंत मिले दोऊ खेलत डोलत फाग ॥ १ ॥ द्रुमगन मध्य पलास मंजरी उठत अगिन की

नाई । अपने अपने मेल मनोहर होरी हरखि लगाई ॥२॥ केकी कीर कपोत और खग करत कुलाहल भारी । जनपद लज्जा तजी परस्पर देत दिवावत गारी ॥३॥ झील झाँझ निर्झर निसान डफ भेरी भमर गुंजार । मानो मदन मंडली रचि पुर वीथिन विपिन विहार ॥४॥ नवदल सुमन अनेक वरन वर विटपन भेख धरे । जनो राजत ऋतुराज सभा में हँसि बहु रंगन भरे ॥ कुंज-कुंज कोकिल कल कूजत बानी विमल बढ़ी । जानो कुल बधू निलज भई है गावत अटन चढ़ी ॥६॥ कुसुमित लता जहाँ देखत अलि तहीं तहीं चली जात । मानो विटप सबन अवलोकत परसत गनिका गात ॥७॥ लीने पुष्प पराग पवन कर फिरत चहूँदिस धाये । तिहीं ओर संयोगिनी विरहिनी छाँड़त करि मन भाये ॥ और कहाँ लों कहों कृपानिधि वृंदाविपिन समाज । 'सूरदास' प्रभु सब सुख क्रीडत कृष्ण तुमारे राज ॥९॥

❀ ५९८ ❀ सेन भोग आये होरी रोपवे जाँय तब ❀ धमार ❀

❀ राग गौरी ❀ ऋतु वसंत सुख खेलिये हो आयो फागुन मास । होरी डांडो रोपियो सब ब्रजजन मन हुलास, गोकुल के राजा ॥१॥ रजनी मुख ब्रज आइयो हो गोधन खिरक मझार । सखा नाम सब बोलि के घर घर ते देत डबगार ॥२॥ बड़े गोप वृखभान के हो आये सब मिलि पौरि । श्रवन सुनत प्यारी राधिका चढ़ी चित्रसारी दौरि ॥३॥ उझकि झरोखा झांकियो हो दोउन मन आनन्द । ऐसी छबि तब लागियो मानो निकस्यो घटा ते चन्द ॥४॥ बासर खेल मचाइयो हो नियरे आयो फाग । झूमक चेतव गावहीं मन मोहन गौरी राग ॥५॥ नरनारी एकत्र भये हो घोषराय दरबार । चहुँदिसते सब दौरियो भूषन वसन सिंगार ॥६॥ अगनित बाजे बाजहीं हो रुंज मुरज निसान । डफ दुंदुभी और झालरी कछुअन सुनियत कान ॥७॥ पिचकाई कर कनक की हो अरगजा कुमकुम घोर । प्रानपिया कों छिरकहीं तकि तकि नवलकिसोर ॥८॥ बहुरि सखा सब दौरियो हो आगे दे बलबीर ।

युवतीजन पर बरखही नवल गुलाल अबीर ॥९॥ ललिता विसाखा मतो मत्यो हो लीनो सुबल बुलाय । चेरी तेरे बाप की नेकु मोहन कों पकराय ॥१०॥ तबे सुबल कौतुक रच्यो हो सुनो सखा एक बात । इनही भीतर जान देहु बोलत जसोदा मात ॥११॥ हरे हरे सब रेंगि चली हों नियरे निकसी आय । सेन सबे दे दोरियो पकरे बलि मोहन जाय ॥१२॥ प्यारी को अंचल लियो हो और पिय को पट पीत । सकत ही गठजोरो कियो भले बने दोऊ मीत ॥१३॥ फगुवामे मुरली लई हो और कंठ को हार । श्री राधा पहराइयो हँसत दै दै कर तार ॥१४॥ मेवा मोल मँगाइयो हो फगुवा दियो निवेर । मनभायो करि छांड़ियो हँसत वदन तन हेर ॥१५॥ यह विधि होरी खेल हीं ब्रजवासिन संग लगाय । युगल कुंवर के रूप पै जन 'गोविंद' बलि बलि जाय ॥१६॥ ❀ ५९९ ❀ सैन दर्शन ❀राग गौरी❀ खेलत फाग गोवर्धनधारी हो हो होरी बोलत ब्रजबालक संगे । आई बनि नवल-नवल ब्रजसुंदरी सुभग संवारसुठ सेंदुर मंगे ॥१॥ बाजत ताल मृदङ्ग अधोटी आवज डफ सुर बीन उपंगे । अधरबिंब कूजे बेनु मधुर ध्वनि मिलत सप्त स्वर तान तरंगे ॥२॥ उड़त अबीर कुमकुमा वंदन विविध भाँति रंग मंडित अंगे । 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन नवल रूप छबि कोटि अनंगे ॥३॥ ❀ ६०० ❀

माघ सुदी १५ सबेरे होरी रुपे तो मंगलभोग आये होरी रोपवे जांय तब ❀ *धमार* ❀

❀ राग बिलावल ❀ घोष नृपति सुत गाइये जाके बसिये गाम । लाल बलि झूमका हो । बहोरयो सुहागिन गाइये जाको श्री राधा नाम । लाल बलि झूमका हो ॥१॥ चली हैं सकल ब्रजसुन्दरी नव सत साज सिंगार । गावत खेलत तहां गईं जहाँ घोषराय दरबार ॥२॥ जाय नैन भरि देखियो सुन्दर नंदकुमार । नील पीत पट मंडित औ उर गजमोतिन हार ॥३॥ सखा संग अति रसभरे पहरे विविध रंग चीर । गीत विचित्र कोलाहला और

ब्रजवासिन भीर ॥४॥ डिमडिम दुंदुभी झालरी रुंज मुरज डफ ताल । मदनभेरि राय गिडगिडी बिच-बिच बेनु रसाल ॥५॥ अति रसभरी ब्रजसुन्दरी देत परस्पर गारि । अंचल पट मुख दै हँसी मोहन वदन निहारि ॥६॥ पहलो झूमक ताहि को जाको श्रीमोहन पूत । देखि परे सिर मोहनी युवती जन मन धूत ॥७॥ दूसरो झूमक ताहि को जाकी श्री राधा नारि । पिय प्यारी रोके गहे मन में चौंकि विचार ॥८॥ युवती कदंब सिरोमनी श्रीराधावर सुकुमारी । उत ब्रज सिसुगन नायक बलि और गिरिवरधारी ॥९॥ एकन कर बूका लिये एक गुलाल अबीर । प्रमदागन पर बरख हीं कूकैं देत अहीर ॥१०॥ रतन खचित पिचकाइयाँ नव कुंमकुम जल सों घोरि । पिय सनमुख ह्वै छिरकहीं तकि-तकि नवलकिसोर ॥११॥ स्याम सुगम तन सोहहीं नव केसर के बिंदु । ज्यों जलधर में देखिये मानो उदित बहु इंदु ॥१२॥ युवतीयूथ मिलि धाइयो पकरे बल मोहन जाय । नव केसर मुख माँडिके छाँड़े आँख अंजाय ॥१३॥ यह विधि होरी खेल ही जाति-बंधु संग लाय । पूरन ससि निस डहडही पून्यो होरी लगाय ॥१४॥ परिवा सकल घोषजन भानुसुता चले न्हान । अरगजा अङ्ग चढ़ाइयो विमल वसन परिधान ॥१५॥ द्वितीया वंदन बाँधियो सिंहासन युवराज । छत्र चंवर 'गोविन्द' गहे श्रीवल्लभकुल सिरताज ॥१६॥ ❀ ६०१ ❀ मङ्गला दर्शन ❀ राग वसंत ❀ साँची कहो मनमोहन मोसों तौ खेलों तुम संग होरी । आजु की रेनु कहाँ रहे मोहन कहां करी बरजोरी ॥१॥ मुख पर पीक पीठि पर कंकन हिये हार बिन डोरी । जिय मे और ऊपर कछु औरैं चाल चलत कछु औरी ॥२॥ मोहि बनावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी । भोर भये आये हो मोहन बात कहत कछु जोरी ॥३॥ 'सूरदास' प्रभु ऐसी न कीजे आय मिलो कहा चोरी । मन माने त्यों करहु नन्दसुत अब आई है होरी ॥४॥ ❀६०२❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग टोडी ❀ हो हो होरी खेले नंद को नवरंगी लाल ।

अबीर भरि-भरि झोरी हाथन पिचकाई रंगन बोरी तेसीय रंगीली ब्रज की बाल ॥ १ ॥ मूरति धरे अनंग गावत तान तरंग ताल मृदंग मिलि बजावैं बीना बेनु रसाल । 'नन्ददास' प्रभु प्यारी के खेलत रंग रह्यो छबि बाढी छूटी है अलक टूटी है माल ॥ २ ॥ ❀ ६०३ ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ रिझवत रसिक किसोर कों खेलत री प्यारी राधा फाग । पहरे नव रंग चूनरी अंगिया री आछे अंग लाग ॥ १ ॥ कनक खचित खुभिया बनी दुलरी मोतिन बिच लाल । किंकिनी नूपुर मेखला लोचन री सुभ सुखद विसाल ॥ २ ॥ गौर गात की कहा कहूं बेसर री रही कच उरझाय । सब सुंदरी मिल गाव ही देखत री मनमथ हि लजाय ॥ ३ ॥ मृदु मुसकनि मुख पट दयो पिचकाई री कर लई है दुराय । वंदन बूका अंजुली नागरि री लैं दई है उडाय ॥ ४ ॥ मीडत लोचन नागरी पकरयो री पीतांबर धाय । सबै सखी जुरि आय गई घेरे री मोहन बलि आय ॥ ५ ॥ मुरलि छीनि चुंबन दियो कीनो री अधरामृत पान । कमल कोस ज्यों भृंग कों छांडत नहीं बिन भये विहान ॥ ६ ॥ मनो बहु-रंग विकसित कमल मधुकर री मनमोहन लाल । नैनन स्वाद सबै गहे पीबत री मकरंद रसाल ॥ ७ ४ ऋतु वसन्त वन गहगह्यो कूजत री सुक पिक अलि मोर । तान मान गति भेद सों गावत री गिरिधर पिय जोर ॥ ८ ॥ बेनु झांझ डफ झालरी गो मुख ताल मुरज मुखचंग । युवती यूथ बजाव हीं नितंत री मधि सामल अङ्ग ॥ ६ ॥ त्रिगुन समीर तहां बहै सुंदर री कालिंदी कूल । सुर सुरपति सुर-अङ्गना डारत री जय-जय कहि फूल ॥ १० ॥ निरखि-निरखि सचुपावहीं हम न भये खग मृग ब्रजवास । श्रीवल्लभ पद रज प्रताप बलि गावत 'विष्णुदास' रसरास ॥ ११ ॥ ❀ ६०४ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग विलावल ❀ नंद सुवन ब्रज-भामते फाग संग मिलि खेलो जू । आज तुमे हम जानिये जो युवती यूथ दल पेलो जू ॥ १ ॥

रसिक सिरोमनि सांवरे श्रवन सुनत उठि धाये जू । बल समेत सब टेर के घर-घर ते सखा बुलाये जू ॥ २ ॥ बाजे बहु विधि बाजहीं ताल मृदंग उपंगा जू । डिमि-डिमि दुंदुभी झालरी आवज कर मुख चंगा जू ॥ ३ ॥ उतते नवसत साजि के निकसी सकल ब्रजनारी जू । झुंडन आई झूमि के कल गावत मीठी गारी जू ॥ ४ ॥ केसर कुमकुम घोरि के भाजन भरि-भरि लाई जू । छूटी सन्मुख स्याम के करन-कनक पिचकाई जू ॥ ५ ॥ उतहि समाज गोपाल सों भरे महारस खेलैं जू । चोवा मृगमद सानि के युवती यूथ पर मेलें जू ॥ ६ ॥ सोभित बालक वृन्द मे हरि हलधर की जोरी जू । उतहि चतुर चंद्रावलि सब गुन निधि राधा गोरी जू ॥ ७ ॥ सोंह वदे ललिता कहे कोऊ पग न पिछोडे डारे जू । इत नायक उत नायका को जीते को हारे जू । टिके परस्पर देखि के खेल मच्यो अति भारी जू । इत उत ओट न मानहीं चौंकि परे नरनारी जू ॥ ९ ॥ युवती यूथ दल पेलि के छेकि सुबल गहि लीने जू । कंठ उपरना मेलि के खेंचि आपु बस कीने जू ॥ १० ॥ सुनो सुबल सांची कहों तो भले छूटन पाओ जू । छल बल बानिक बानि के नेक हलधर कों पकराओ जू ॥११॥ बहुरि सिमटि ब्रजसुन्दरी संकर्षन गहि घेरे जू । फैंट गही चंद्रावली तब उलटि सखन तनु हेरे जू । ॥ १२ ॥ सोंधौ नावें सीस ते एक काजर लैं के आई जू । मोहन हंसि मुरि यों कह्यो देखो दाऊ जू आंख अंजाई जू ॥ १३ ॥ फिर प्यारी नागरी राधिका तके स्याम जहां ठाडे जू । और सखिन की ओट व्है गहे औंचका गाढे जू ॥ १४ ॥ देखि सखी चहुं ओर ते दोरि आय लपटानी जू । अंग-अंग बहु रंग सों रंग करत बात मनमानी जू ॥१५॥ केसर सों पट बोर के श्रीमुख मांड्यो रोरी जू । तारी हाथ बजाय के बोलत हो-हो होरी जू ॥ १६ ॥ मगन भई ब्रज सुंदरी नव-रस भींज्यो हीयो जू । इत अग्रज उत स्याम पै दुहुदिस फगुवा लीयो जू ॥ १६ ॥ परसि परम

सुख ऊपज्यो भयो त्रियन मनभायो जू । सादर चारु चकोर ज्यों मानों विधु प्रीतम पायो जू ॥ १८ ॥ नागरी अति अनुराग सों मुदित वदन तन हेरे जू । सर्वसु वारें वारने एक अंचल हरि पर फेरे जू ॥ १९ ॥ 'चत्रुभुज' प्रभु संग खेल ही यह विधि घोषकुमारी जू । सब ब्रज छायो प्रेम सों सुखसागर गिरिधारी जू ॥ २० ॥ ❀ ६०५ ❀ सेंनभोग आये ❀ राग गौरी ❀ ढोटा दोऊ राय के खेलत डोलत फाग हो । लाले जो देखे सो मोहियो और प्रतिछिन नव अनुराग हो ॥ १ ॥ सखा संग सब बोलि के घर-घर ते दे तब गारि । सुनत कुंवर कोलाहला निकसी घोषकुमारि ॥ २ ॥ भूषन वसन जो साजियो उर गजमोतिन हार । झूमक चेतव गावहीं घोष-राय दरबार ॥ ३ ॥ बाजे बहुत बजावहीं डफ दुंदुभी कठताल । बल मोहन मधि नायका चहुँदिस नाचत ग्वाल ॥ ४ ॥ पिचकाई कर कनक की अरगजा कुमकुम घोर । बलराम कृष्ण कों छिरकही हँसि ऽब चलीं मुख मोर ॥५॥ कोलाहल सुन आइयो वल्लभकुल के राजा । सिंहद्वार पै बैठियो बडरे गोप समाजा ॥ ६ ॥ ब्रजरानी तहाँ आइयो जहाँ बैठे नंद उपनंदा । सोंधे डाढी लीपियो आंजत आंख सुछंदा ॥ ७ ॥ यह विधि होरी खेलहीं अरगजा पंक सुगंधा । विधि सों होरी लगाइयो पून्यो पूरन चंदा ॥८॥ परिवा वसन जु पलटियो न्हाय धोय आनन्दा । 'गोविंद' बलि वंदन करे जय-जय गोकुल के चन्दा ॥ ९ ॥ ❀ ६०६ ❀

श्री ब्रजभूषण जी को जन्मदिन [फागुन वदी २]

❀ राजभोग आये ❀ धमार ❀ राग धनाश्री ❀ गोरे अंग ग्वालनि गोकुल गाम की ॥ ध्रु० ॥ लहर-लहर जोबन करे वाको थहर-थहर करे देह । धुकुर-पुकुर छतियाँ करे वाको बड़े रसिकसों नेह ॥ १ ॥ ठुमकि चले मुरि-मुरि हँसे हो पग-पग ठाड़ी होय । घायल सी घूमत फिरे वाको मरम न जाने कोय ॥ २ ॥ कुआटा को पानी भरे हो नई-नई लेज जु लेय । घूंघट

चांपे दांत सों गोरी गर्व न ऊतर देय ॥ ३ ॥ पहिरे नवरंग चूनरी लावनि लई संकोर । अरग-थरग सिर गागरी वह हँसत बदन तन मोर ॥ ४ ॥ तिलक खुल्यो अंगिया बनी हो पग नूपुर झनकार । बड़े बगर ते निकसी नंदलाल खड़े दरबार ॥ ५ ॥ चाल चले गजराज की हो ऊंची नीची दीठ । अंचल के मिस उलटि के गोरी हरिही दिखावति पीठ॥ ६ ॥ गहरो काजर घुरि रह्यो बेंदी जगमग जोत । हिये हार बहुमोल को गोरी कंठ बिराजत पोत ॥ ७ ॥ अतलस को लंहगा बन्यो गोरी पहिरें सुरंग पट झीन । अतरोटा अङ्ग राजहीं गोरी सुन्दर कटि है क्षीन ॥ ८ ॥ स्यामसुन्दर कों सैन दे गोरी चली गृह कों जाय । पाछे लागे हरि चले री 'जन त्रिलोक' बलि जाय ॥ ९ ॥ ❀ ६०७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ श्री लछमन कुल गाइये श्री वल्लभ-सुवन सुजान । लाल मनमोहना हो ॥ ध्रु० ॥ सोमवंस सुख देन कों प्रगटे द्विजकुल भान । लाल०। गुननिधि गोपीनाथ जू निर्गुन तेज निधान ॥ लाल ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम आनंद मे श्री विट्ठल ब्रजके भूप । कोटि मदन विधु वारने मुख सोभा सुखरूप ॥ २ ॥ भूतल द्विजवपु धारके श्रुतिपथ कियो प्रचंड । मारग पुष्टि प्रकासि के मायामत कियो खंड । ॥ ३ ॥ श्री गिरिधर गुन आगरे पूरन परमानंद । राजसिरोमनि लाड़िले करुनामय गोविंद ॥ ४ ॥ बालकृष्ण मुख चंद्रमा पंकज नैन विसाल । श्री वल्लभ गोकुलनाथ जू प्रिय-नवनीत दयाल ॥ ५ ॥ श्रीपति श्री रघुनाथ जू जगजीवन अभिराम । रूपरासी यदुनाथजू कमला पूरन काम ॥ ६ ॥ नवकिसोर घनस्यामजू अंग-अंग सुखदाइ । बालक सब ब्रह्मजानि के वेद विमल जस गाइ ॥ ७ ॥ बृंदाविपिन सुहावनो ब्रजलीला सुखसार । 'मानिकचन्द' प्रभु सर्वदा श्री गोकुल करत विहार ॥ ८ ॥ ❀ ६०८ ❀ ❀ भोग तथा संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ प्रथम सीस चरनन धरि वंदों श्रीविट्ठलनाथ । दसधा भक्ति और चारि पदारथ जाके हाथ ॥१॥ भूतल द्विज वपु

धारयो त्रिभुवन पति जगदीस । उपमा कों कोऊ नहिं जय गोकुल के ईस ॥ २ ॥ कलि के जीव उधारे निजजन किये सनाथ । भव सागर तें बूडत राखे अपने हाथ ॥ ३ ॥ नाम देय सिर पर सकल कर टारे पाप । सेवा रीति बताई सेवक व्है के आप ॥ ४ ॥ सैया भूषन वसन सिंगार रचे हैं बनाय । नंदनंदन अपने मुख भोजन करत हैं आय ॥ ५ ॥ मायावाद निवारे थापे पूरन ब्रह्म । मारग पुष्टि प्रकासे और राखे सब कर्म ॥ ६ ॥ श्रीगिरिधर गुन सागर महिमा कही न जाय । श्रीगोविंद करुना निधि क्रीडत अपुने भाय ॥ ७ ॥ बालकृष्ण अति सुंदर सोभा को नहि पार । जग वंदन गोकुल पति निजजन के उर हार ॥ ८ ॥ श्रीपति श्रीरघुनाथ जू देत अभय वरदान । महाराज यदुनाथ जू करत मधुर स्वर गान ॥ ९ ॥ श्री घनस्याम सदा सुखदायक करों प्रणाम । सब मिल खेलत हरखत ब्रज-जन मन अभिराम ॥ १० ॥ वृन्दावन अति सोभित यमुना पुलिन तरंग । हसत परस्पर केसर कुमकुम छिरकत अंग ॥ ११ ॥ श्रीगिरिधर संग खेलत उर आनन्द न समाय । बाजत ताल पखावज युवती मंगल गाय ॥ १२ ॥ सुर कुसुमन बरखा करें बोलत जयजयकार । 'मानिकचंद' प्रभु यह विधि गोकुल करो विहार ॥ १३ ॥

❀ ६०६ ❀ सेनभोग आये ❀ राग गोरी ❀

श्री वल्लभ-कुल मंडन प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ । जे जन चरन न सेवत तिनके जन्म अकाथ ॥ १ ॥ भक्ति भागवत सेवा निसदिन करत आनंद । मोहन लीला सागर नागर आनंद कंद ॥ २ ॥ सदा समीप बिराजें श्री गिरिधर गोविंद । मानिनी मोद बढावें निजजन के रवि चंद ॥३॥ बालकृष्ण मनरंजन खंजन अंबुज-नैन । मानिनी मान छुडावे बंक कटाच्छन सैन ॥ ४ ॥ श्रीवल्लभ जग-वल्लभ करुनानिधि रघुनाथ । और कहां लगि बरनों जग वंदन यदुनाथ ॥५॥ श्रीघनस्याम लाल बलि अविचल केलि कलोल । कुंचित केस कमल मुख जानों मधुपन के टोल ॥ ६ ॥ जो यह चरित बखाने श्रवन

सुने मन लाय । तिनके भक्ति जु बाढे आनंद द्योस विहाय ॥ ७ ॥ श्रवन सुनत सुख उपजत गावत परम हुलास । चरन कमल रज पावन बलिहारी 'कृष्णदास' ॥ ८ ॥ ❀ ६१० ❀ सेन दर्शन ❀ राल उडे तब ❀ राग कल्याण ❀ गिरिधर लाल रसाल खेलत रंग रह्यो । एक छिरकत एक जु रही झुक एकन अरगजा उर लह्यो। ।१।। सब मिल अबीर उडावें जो परस्पर नैनन नेह नयो । पिचकाई भरि-भरि जु चलावत 'बल्लभदास' प्रभु रस ठयो ॥२॥ ❀ ६११ ❀

उत्सव श्रीगिरिधरलाल जी को [फागुन वदी ४]

❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ होरी खेले मोहना रंग भीने लाल । रसिक मुकुटमनि राधिका अङ्ग-अङ्ग ब्रजवाल ॥ १ ॥ कपूर कुमकुमा घोरि के सुगंध समारी । कियो अरगजा रंग को बिच मृगमद डारी ॥ २ ॥ रतन खचित कर मे लई कंचन पिचकारी । छिरकत कुंवर किसोर कों चंद्रावली नारी ॥ ३ ॥ भरति गुपाल भामिनी झकझोरा-झकझोरी । कोऊ कर ते मुरली लई कोऊ पीत पिछोरी ॥ ४ ॥ ललिता ललित वचन कहे फगुवा देहु प्यारे । कै राधे के पांय परो नैनन के तारे ॥ ५ फगुवा मे मुरली लई रस बस पिय प्यारी । नवल युगल के रूप पै 'जन विचित्र' बलिहारी ॥६॥ ❀ ६१२ ❀ सेनभोग आये ❀ राग गोरी ❀ गोकुल गाम सुहावनो सब मिलि खेलैं फाग । मोहन मुरली बजावैं गावें गोरी राग ॥ १ ॥ नरनारी एकत्र व्है आये नंद दरबार । साजे झालर किन्नरी आवज डफ कठतार ॥ २ ॥ चोवा चन्दन अरगजा और कस्तूरी मिलाय । बाल गोविंद कों छिरकत सोभा बरनी न जाय ॥ ३ ॥ बूका बंदन कुमकुमा ग्वालन लिये अनेक । युवती यूथ पर डारही अपने-अपने टेक ॥ ४ ॥ सुर कौतुक जो थकित भये थकि रहे सूरज चन्द । 'कृष्णदास' प्रभु विहरत गिरिधर आनंद कंद ॥५॥ ❀ ६१३ ❀ भोग सरे ❀ राग गोरी ❀ ललना खेले फाग बन्यो ब्रज सखा लिये नंदनंदना । बंसी धरे कहत हो-हो होरी युवती जन-मन फंदना ॥१॥

घर-घर ते सुंदरी चली देखन आनंद-कंदना । बाजे ताल मृदंग झांझ डफ
गावत गीत सु छंदना ॥ २ ॥ ठांइ-ठांइ अगर अबीर लिये कर ठांइ-ठांइ
बूका बंदना । हाथन धरे कनक पिचकाई छिरकत चोवा चंदना ॥३॥ क्रीडा
रस-बस भये मगन मन मात न आनन्दना । 'दासचत्रभुज'
प्रभु सब सुखनिधि गिरिधर विरह निकन्दना ॥ ४ ॥ ❀ ६१४ ❀
❀ सेन दर्शन ❀ राग गौरी ❀ स्याम सुंदर मन भामते मन मोहना । नव दूल्है
श्री गोपाल, लाल मनमोहना ॥ १ ॥ नौतन दुलहिन राधिका मन
मोहना । वृषभान नृपति की बाल, लाल मन मोहना ॥ २ ॥ चलो सखी
जहाँ जाइये मन० । निरखि होत आनन्द लाल० ॥ ३ ॥ इत स्याम सुंदर
सुहावने मन० । उत राधा पूरनचन्द लाल० ॥ ४ ॥ बागो पीत चमेली को
मन० । सीस पाग मन मोहे लाल० ॥ ५ ॥ सूथन सोनजुही कली मन० ।
पटुका गुलाब सुहाय लाल० ॥ ६ ॥ नवरंग फूलन सेहरो मन० । निरखि
मति गई भूलि लाल० ॥ ७ ॥ सीसफूल गुलदावदी मन० । गुलतुर्रा रहे
झूमि लाल० ॥ ८ ॥ लर सिरपेच कलंगिये मन० । लरी निवारे लूमि
लाल० ॥ ६ ॥ श्रवन कुंडल जु सुगंधरा मन० । गरे मोतिया की माल
लाल० ॥ १० ॥ बाजूबंद जाही जुही मन० । गुलेबाँस की जाल लाल०
॥ ११ ॥ कमलनेत्र सोभा बनी मन० । अली पीवत मकरंद लाल० ॥
॥१२॥ रायबेल चोटी गुही मन० । बिच-बिच कोयल फूल लाल० ॥१३॥
गुल गोटी अरु मालती मन० । झाबा लटकत झूल लाल० ॥ १४ ॥
नरगिस बेला सेवती मन० । मौलिसरी बिच फूल लाल० ॥ १५ ॥
पहोंची कड़ा नख मुद्रिका मन० । चंपा मोगरा कुंद लाल० ॥ १६ ॥ गुल
सब्बो गुल चाँदनी मन० । सदा गुलाब रसाल लाल० ॥ १७ ॥ अभरन
सोहत फूल के मन० । चरन कमल दोऊ लाल लाल० ॥ १८ ॥ दिन
दूल्है नंद-लाडिलो मन० । दुलहिन रूप अनूप लाल० ॥ १६ ॥ दोऊ

दिसि सोभा घनी मन० । मनमथ मोह्यो रूप लाल० ॥ २० ॥ अबीर गुलाल अरु कुमकुमा मन० । लिये सकल सुखरासि लाल० ॥ २१ ॥ गठ बंधन ललिता कियो मन० । हँसत दोऊ मुख मोरि लाल० ॥ २२ ॥ मुख मांडत गहि लाडिली मन० । पुनि मुख मांडत स्याम लाल० ॥२३॥ खेल मच्यो अति गहगह्यो मन० । दोऊ मन अति हरखात लाल० ॥२४॥ अंस भुजा दोऊ मेलिकैं मन० । चले कुंज की ओर लाल० ॥ २५ ॥ कनकलता गहि स्यामने मन० । मिलि गये चंद चकोर लाल० ॥ २६ ॥ लोचन निरखि सुफल भये मन० । उर आनंद न समाय लाल० ॥ २७ ॥ तन मन धन कियो वारने मन मोहना । 'कृष्णदास' बलि जाय लाल मन मोहना ॥ २८ ॥ ❀ ६१५ ❀

श्रीनाथ जी को पाटोत्सव [फागुन वदी ७]

❀ जगायवे में ❀ राग बिभास ❀ खिलावन आवेंगी ब्रजनारी । जागो लाल चिरैया बोली कहे जसुमति महतारी । ओट्यो दूध पान करि मोहन बेग करो स्नान गोपाल । करि सिंगार नवल बानिक बनि फेंटनि भरो गुलाल ॥ २ ॥ बलदाऊ लै संग सखी सब खेलो अपुने द्वार । कुमकुम चंदन चोवा छिरको घसि मृगमद घनसार ॥ ३ ॥ लै कनेर सुनो मेरे मोहन गावत आवैं गारी । 'ब्रजपति' तबहि चौंकि उठि बैठे कित मेरी पिचकारी ॥ ४ ॥ ❀ ६१६ ❀ मङ्गला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ आज भोर ही नंद-पौर ब्रजनारिन गेर मचाई जू । पकरि पानि गहि मारि पौरिया जसुमति पकरि नचाई जू ॥ १ ॥ हरि भागे हलधर हू भागे नंद महर हूं हेरे जू । तब ही मोहन निकसि द्वार ह्वै सखा नाम लै टेरे जू ॥ २ ॥ द्वार पुकार सुनत नहिं कोऊ तब हरि चढ़े अटारी जू । आओ रे आओ संगी सब घर घेरयो ब्रजनारी जू ॥ ३ ॥ सुनत टेर संगी सब दौरे अपुने अपुने धाम जू । अर्जुन तोक कृष्ण मधुमंगल सुबल सुबाहू श्रीदाम जू ॥ ४ ॥ ग्वालिन

दौरि पौरि जब रोकी आन न पाये नेरे जू । चंद्रावली ललितादि आदि
दै स्याम मनोहर घेरे जू ॥ ५ ॥ कित जैहो बस परे हमारे भजि न सको
नंदलाला जू । फगुवा में मुरली हम लैहैं पीतांबर बनमाला जू ॥ ६ ॥
केसर डारि सीस तैं मुख पर रोरी मींडत राधे जू । 'विष्णुदास' प्रभु भुज
भरि गाढे मन वांछित फल साधे जू ॥ ७ ॥ ❀ ६१७ ❀ शृंगार समय ❀
❀ राग बिलावल ❀ खेलिये सुन्दर लाल होरी । चंचल नैन विसाल होरी ॥
तुम ब्रजजन के प्रतिपाल । तुम लाला नट गोपाल ॥ गहि ठाडी जसुमति
कहै तुम संग लेहु ब्रजबाल ॥ ध्रु० ॥ विविध सुगन्धन उबटनो सब अंग
बैठि उबटाऊं । चंदन अंग लगाइ के फिर ताते नीर न्हवाऊं ॥ १ ॥ अंग
अंगोछों प्रीति सों घसि मृगमद तिलक बनाऊं । अंजन नैनन आंजिके
अरु मसि बिंदुका भुव लाऊं ॥ २ ॥ अलकावली अति सोहनी मोतिन लर
सरस गुथाऊं । मधि लटकन लटकाय के हों देखत अति सुख पाऊं ॥ ३ ॥
पगिया पेच बनाय के खिरकिन की सीस धराऊं । मोर चंद्रिका तनकसी
हों दिस दाहिनी ढराऊं ॥ ४ ॥ झीनी झगुली अति बनी सो तो स्याम
अंग पहिराऊं । अति सुगन्ध पहोपन बस्यो वर फुलेल चुपराऊं ॥ ५ ॥
सूथन गाढे अंग की लाल चरन पहराऊं । फेंटा कटि तट बांध के अरु
सुरंग गुलाल भराऊं ॥ ६ ॥ आभूषन बहु भाति के पहिराऊं तिहि-तिहि
ठाऊं । फूलन की माला गरे धरि देखत नैन सिराऊं ॥ ७ ॥ घर-घर ते
सब गोप के लरिकन कों पठै बुलाऊं । केसर के मटुका भरी पिचकाई हाथ
धराऊं ॥ ८ ॥ सिंहद्वार ठाड़े रहो तुम संग देहुँ बलदाऊ । आगे ह्वै मेरे
लाडिले ललना सबहिन कों छिरकाऊं ॥ ९ ॥ बडडे गोप बुलाय के रखवारे
संग रखाऊं । मनमाने तहां खेलिये सब ब्रजजन संग नचाऊं ॥ १० ॥
विविध भाँति ब्रजराज सों कहि बाजे बजवाऊं । फगुवा देवे कों अबे बहु
भूषन वसन मंगाऊं ॥११॥ सब ब्रजयुवतिन कों अबै घर-घर पठै बुलाऊं ।

मेरे लाल के चाह सों फगुवा के गीत गवाऊं ॥ १२ ॥ रगमगे बागे देखि के अपने दृगन सिराऊं । मुक्ताफल थारी भरि हों ले आरती उतराऊं ॥१३॥ आंको भरि लै गोद में घर भीतर ले जाऊं । ब्रजयुवतिन में बैठ के नेक फूली अंग न समाऊं ॥ १४ ॥ माय मनोरथ यों करे जाको है जसुमति नाऊं । दिजे यह फल 'रसिक' कों हों श्रीवल्लभ गुन गाऊं ॥१५॥ ❀६१८❀

❀ श्रृंगार दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ जिनडारो जिनडारो आँखिन में अबीरा । रतन जटित पिचकाई कर लिये अहो भरि केसर नीरा ॥ १ ॥ ललित प्रीतम को मुख मांड्यो चरच्यो स्याम सरीरा । 'सूरदास' प्रभु रसबस कर लीनो इन हलधर के वीरा ॥ २ ॥ ❀ ६१९ ❀ गोपीवल्लभ सरे ❀ भीतर खेल होय तब ❀ राग जेतश्री ❀ खेलत बल मनमोहन ऋतु वसंत सुख होरी हो । सखा मंडली सङ्ग लिये बलराम कृष्ण की जोरी हो ॥ १ ॥ भेरी मृदंग डफ झालरी बाजत कर कठताला हो । सब तन मदन प्रगट भयो नाचत ग्वालिनी ग्वाला हो ॥ २ ॥ ब्रजजन सब एकत्र भये घोखराय दरबारा हो । इत बनी नवल कुमारिका उत बने नवल कुमारा हो ॥ ३ ॥ युवतीयूथ चंद्रावली अपने यूथ श्री राधा हो । झूमक चेतव गावही बाढ्यो रङ्ग अगाधा हो ॥ ॥ ४ ॥ बल मोहन एकत्र भये सुबल तोक एक कोदा हो । दुहुँदिस खेल मचाइयो बाढ्यो है मनसिज मोदा हो ॥ ५ ॥ चमकि चली चन्द्रावली सुबल तोक पर आई हो । उतहि कोपि प्यारी राधिका बलराम कृष्ण पर धाई हो ॥ ६ ॥ कमलन मार मचाइयो जुरे हैं दोऊन के टोला हो । मधुमङ्गल पकरि कढेरियो बांधि गुदी मे ढोला हो ॥ ७ ॥ बहोत हँसे मनमोहना हँसे सकल ब्रजवासी हो । छोरे हू छूटे नहीं परि गई गाढी पासी हो ॥८॥ हँसत हँसत सब आइयो गावति गारी सुहाई हो । सेना-बेनी करि सबै बल मोहन पकरे धाई हो ॥ ९ ॥ बल जू की आंख जु आंजियो पियकी मुरली छीनी हो । मनमान्यो फगुवा लियो पाछें जाय वह दीनी हो ॥ १० ॥

यह विधि होरी खेलही ब्रजवासिन सुख पायो हो। भक्तन मन आनंद भयो 'गोविंद' यह यस गायो हो ॥ ११ ॥ ❀ ६२० ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ सुरंगी होरी खेले सांवरो ब्रज - वृन्दावन माँझ सुरंगी । ध्रु० । सरस वसंत सुहावनो ऋतु आई सुख देन । माते मधुपा मधुपनी कोकिल-कुल कल बेन । सुरंगी ॥१॥ फूले कमल कलिंदजा केसू कुसुम सुरङ्ग। चंपक बकुल गुलाब के सोंधों सिंधु तरंग ॥२॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा पठये सखा पढाय । बाजे साजे नवरंगी लीने मोल मढाय ॥३॥ झांझ मुरज डफ बांसुरी भेरिन की भरपूर । फूंकन फेरी फेरिके ऊंची गई श्रुति दूरि ॥४॥ ब्रज को प्रेम कहा कहों केसर सों घट पूर । कञ्चन की पिचकाइयां मारत हैं तकि दूर ॥५॥ आंधी अधिक अबीर की चोवा की मची कीच । फैली रेल फुलेल की चंदन बंदन बीच । ब्रज की नवल जू नागरी सुंदर सूर उदार । खेलन आई सबै जुरी श्रीराधा के दरबार ॥७॥ फूलडंडा गहि हाथ सों मारत बांह उठाय । चंचल अंचल फरहरे पैंने नैन चलाय ॥८॥ श्रीराधा की प्रिय सखी ललिता लोल सुभाय । छल करि छैल हि छिरकि के हँस भाजी डहकाय ॥९॥ नारी को भेख बनाय के पठ्यो सखा सिखाय । अति ही अधिक कहावती ललिता भेटी जाय ॥१०॥ गेंदुक कीनी फूल की दीनी श्रीराधा हाथ। आय अचानक औचका तकि मारी ब्रजनाथ ॥११॥ ब्रजकी बीथिन सांकरी उत यमुना को घाट । बलदाऊ कों बोलि के दीने गाढे कपाट ॥१२॥ हलधर हैं जु महाबली सांचे हैं बलराम । बल को बल जु कहा भयो गहि बाँधे भुज पास ॥ १३ ॥ नैनन अंजन आँजिके सोंधो ऊपर डार । पांय परी द्वारे पट दीने रस की रास बिचार ॥ १४ ॥ फिर भाजी सब दै दगा आन न दीने और । मदनगोपाल बुलाय के गहि लाई बरजोर ॥ १५ ॥ गिरिधारयो कर वाम सों खर मारयो गहि पाय । तिन को भार कहा भयो ललिता लेत उठाय ॥ १६ ॥

घर में घेर सबै चलीं श्री राधा कों सङ्ग लेत । दोऊ जन ऐंचि मिलाय के नैंनन कों सुख देत ॥ १७ ॥ तब ललिता हँसि यों कह्यो श्री राधाकों सिर नाय । नीलांबर सों ढांपि के मुख मूंद्यो मुसिकाय ॥ १८ ॥ उत श्रीदामा अचगरो इत ललिता अति लोल । बीच बिसाखा साखि दैं मुरली माँगत ओल ॥ १९ ॥ ब्रजवासी वृषभान को मदन सखा वाको नाम । स्याम मते को मिलनिया बस कीनो सब गाम ॥ २० ॥ पठयो मदन वसीठ ही ढीठ महामद लोल । छिन औरै छिन और ह्वै छाक्यौ छैल दुछोल ॥ २१ ॥ मदंना मदनगोपाल को हलधर कों लै आय । श्रीराधा की दिस जाय के चांपत हैं हँसि पाँय ॥ २२ ॥ श्रीदामा हँसि यों कह्यो मेवा देहों मंगाय । नैंक हमारे स्याम कों आनन को मधु प्याय ॥ २३ ॥ भाग सुहाग सबै बढ्यो खेलत फाग विनोद । राधा माधो बैठारे ब्रजरानी की गोद ॥२४॥ भूषन देत जसोमती पहोंची पान पछेल । टीको टीकी टीकावली हीरा हार हमेल ॥ २५ ॥ श्रीविट्ठल पदपद्म की पावन रेनु प्रताप । 'छीतस्वामी' गिरिधर मिले मेटे तन के ताप ॥ २६ ॥ ❀ ६२१ ❀

❀ भोग सरे तिलक होय तब ❀ राग सोरठ ❀ गहि पाये हो मोहन, अब मुख, मांडोंगी । लिये गुलाल फिरत हों कबकी तक न बनी कछु गोहन ॥१॥ काजर देहों बनाय लाल के यों लागेगो सोहन । अब अपनो मनभायो करिहों कहा नचावत मोंहन ॥२॥ सुधि कीजे पहली बातन कों लगे ठगे से जोहन । 'उदैराज' प्रभु या अवसर हौं नैंक न करों बिछोहन॥३॥❀६२२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ धनि-धनि नंद-जसोमती हो धनि श्रीगोकुल गाम । धन्य कुंवर दोऊ लाडिले बल मोहन जाको नाम ॥१॥ छबीले हो ललना । श्रीवल्लभ राजकुमार छबीले हो ललना ॥ श्रीगिरिवर धारी लाल छबीले हो ललना । तुम या गोकुल के चंद छबीले हो ललना ॥ ध्रु० ॥ सखा नाम ले बोलिये सुबल तोक श्रीदाम । श्रवन सुनत सब

धाइयो बोलत सुंदर स्याम ॥२॥ भेख विचित्र बनाइयो भूषन वसन सिंगार। मंदिर ते सब सजि चले बालक बल बनवारि ॥३॥ गिरिवरधर अति रस भरे मुरली मधुर बजाये। श्रवन सुनत सब ब्रजवधू जहां-तहां ते चलि धाये ॥४॥ रुंज मुरज डफ झालरी बाजे बहु विधि साजि। बिच-बिच भेरी जु बाज ही रह्यो घोष सब गाजि ॥५॥ पिचकाई कर कनक की अरगजा कुमकुम घोर। प्रानपिया कों छिरक हीं तकि तकि नवलकिसोर ॥६॥ एक ओर युवती भई एक ओर बलवीर । कमलन मार मचाइयो रुपे सुभट रनधीर ॥७॥ उलटि आई ठाडी भई अपने-अपने टोल। झूमक चेतव गावहीं बिच-बिच मीठे बोल ॥८॥ हँसत-हँसत सब आइयो लीनो सुबल बुलाय। हा-हा काहू भाँति सों नैंक मोहन कों पकराय ॥९॥ बहुरि सिमिट सब धाइयो मोहन लीने घेरि। नैनन अंजन आंजिके हँसत वदन तन हेरि ॥१०॥ यह विधि होरी खेल हीं सकल घोख संग लाय। गोवर्धनधर रूप पैं 'गोविंद' बलि-बलि जाय ॥११॥ ❀६२३❀ राजभोग आरती समय ❀ राग धनाश्री ❀ रंगीले री छबीले नैना रस भरे नैना नाचत मुदित अनेरे हो। खंजरीट मानो महामत्त दोऊ कैसे हू घिरत न घेरे हो ॥१॥ स्याम स्वेत राते रंग रंजित मानो चितये चितेरे हो। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर स्याम सुभग तन हेरे हो ॥२॥ ❀ ६२४ ❀ भोग-संध्या समय ❀ राग काफी ❀ निकस कुंवर खेलन चले रंग हो हो होरी। मोहन नंद के लाल रंगन रंग हो हो होरी ॥ संग लीनें रंगभीने ग्वाल रंग हो हो होरी। वे गुन रूप रसाल रंगन रंग हो हो होरी ॥१॥ कंचन माट भराय रङ्ग०। सोंधे भरी है कमोरी रङ्गन०॥ रतन जटित पिचकाई करन रङ्ग०। अबीर भरे भरि झोरी रङ्गन० ॥२॥ सुर-मंडल डफ झांझ ताल रङ्ग०। बाजत मधुर मृदङ्ग रङ्गन० ॥ तिनमे परम सुहावनी रङ्ग०। महुवरी बांसुरी चंग रंगन० ॥३॥ खेलत खेल जब रङ्गीलो लाल रङ्ग०। गये वृषभान की पौरि रङ्गन०॥ जे हुती नवलकिसोरी भोरी रङ्ग०। ते आई

आगे दौरि रङ्गन० ॥४॥ सुनि निकसीं नव लाडिली रङ्ग० । श्रीराधा राजकिसोरी रङ्गन०। ओलिन पहोंप पराग भरे रङ्ग० । रूप अनूपम गोरी रङ्गन० ॥५॥ संग अली रंगरली सोहैं रङ्ग० । करन् कनक पिचकारी रंगन० ॥मोहन मनकी मोहिनी रङ्ग ० । देति रंगीली गारी रङ्गन० ॥६॥ तिनकों छिरकत छबीलो लाल रङ्ग० । राजत रूप गहेली रङ्गन० ॥ मानो चंद सींचत सुधा रङ्ग० । अपने प्रेम की बेली रङ्गन० ॥७॥ नवल बधुन के रंगीले बदन रङ्ग० । अबीर घुमड में डोले रङ्गन० ॥छूटहि निसंक अरुन घन में रङ्ग० । हिमकर निकर कलोले रङ्ग० ॥८॥इतने मांझ छिपि छबीली कुंवरी रङ्ग० । पकरे हैं मोहन आन रङ्गन० । छबिसों परस्पर झकझोरत रङ्ग० । कापे परति बखान रङ्गन० ॥९॥ गुप्त प्रीत प्रगटित भई रङ्ग० । लाज तनकसी तोरी रङ्गन०। ज्यों मदमाते चोर भोंर रङ्ग० । झलकत निकसी चोरी रङ्गन० ॥१० ॥ सखियन सुख देखन के काज रङ्ग० । गांठ दुहुन की जोरी रङ्गन० ॥ निरखि बलैयां लै सबै रङ्ग० । छबि न बढ़ी कछु थोरी रङ्गन० ॥११॥ कोऊ छैल छबीलेलाल रङ्ग० । छिरकत रंग अमोल रङ्गन० । कोऊ कमल करलै पराग रंग० । परसत रुचिर कपोल रङ्गन० ॥१२॥बने हैं पिया केकमल लोचन रंग०। जब गहि आंजे अञ्जन रंगन० ॥ जनो अकुलात कमल मंडल में हो हो होरी । फंदन फंदे युग खंजन रंगन० ॥ १३ ॥ देखि विवस वृषभान–घरनि रंग० । हंसत हंसत तहाँ आई रंगन० ॥ बरजी आन नवल वधू रंग० । भुज भरि लिये कन्हाई रंगन० ॥ १४ ॥ पोंछत मुख अपने अञ्चल रंग० । पुनि पुनि लेत बलाय रंगन० मुसकि मुसकि छोरत सु गाँठ रंग० । छबि बरनी नहिं जाय रंगन० ॥१५॥ छोरन न देहीं नवल वधू रंग० । मांगें कुंवर पै फाग रंगन० ॥ जो पै फगुवा दियो न जाय रंग० । प्यारी राधा के पांय लाग रंगन० ॥ १६ ॥ और कहांलगि बरनिये रंग० । बढ्यो सुखसिंधु अपार रंगन० ॥ प्रेम कलोल हल्लोलन मे रंग० । किन हू रही न संभार रंगन० ॥ १७ ॥ रंग रंगीले

व्रजवधू रंग० । रंगीले गिरिधर पीय रंगन० ॥ यह रंग भीने नित बसो रंग० । 'नंददास' के हीय रंगन० ॥ १८ ॥ ❀ ६२५ ❀ सेन भोग आये ❀ ❀ राग रायसा ❀ सकल कुंवर गोकुल के निकसे खेलन फाग । हरि हलधर मधिनायक अन्तर अति अनुराग ॥ १ ॥ आलिन बूका बंदन रोरी हरद गुलाल । बाजत मधुरे महुवर मुरली और डफ ताल ॥ २ ॥ कनक कलस केसर भरे कावर किंकर कंध । और कहाँ लगि कहिये भाजन भरे न सुगंध ॥ ३ ॥ हँसत हँसावत गावत छिरकत फिरत अबीर । भींज लगे तन सोभित रङ्ग-रङ्ग रंजित चीर ॥ ४ ॥ फूलन की कर गेंदुक करत परस्पर मार । छूटत फेंट लटपटी बिखरि परत घनसार ॥ ५ ॥ कोलाहल ग्वालन को सुनि गोपिका अपार । टोलन टोलन निकसी करि सोलहै सिंगार ॥६॥ रूप माधुरी जिनकी कवि पैं बरनी न जाय । तिन्हें सची रति रंभा पग हू परत लजाय ॥ ७ ॥ अति सरस सुर गावत कोऊ झील कोऊ घोर । तिन्हे सुन्यो नहिं भावत बीना नाद कठोर ॥ ८ ॥ ललित गली गोकुल की होत विविध विधि केलि । अगर सहित कुमकुम की चली धरनि पर रेलि ॥९॥ गयो है गुलाल गगन चढ़ि भये सुरसदन सुरंग । मानो खुर-खेह उडी है सेना सजी अनंग ॥ १० ॥ बन्यो बनिता बदन पर कृष्णागर को पंक । परिपूरन चन्दन ते मानो च्वै चल्यो कलङ्क ॥११॥ छिरकत हरि नाना रंग भींजत गोपिन गात । मानो उमग्यो अंतर ते अंचल प्रेम चुचात ॥१२॥ बोले ग्वाल बराती हमारे हरि को ब्याह । दुलहिन गोप–किसोरी मोहन सब को नाह ॥१३॥ यह सुनि गोपी कोपी हलधर पकरे जाय । अंजन दे दृग छाँड मृगमद मुख लपटाय ॥१४॥ बहुरि सिमिट सब सुन्दरी घेरे मदन गोपाल । कनक कदली मंडल में सोभित स्याम तमाल ॥१५॥ तब वृषभान किसोरी हरि भरि लीन्हें अङ्क । कहि न जात ता सुख की मानो निधि पाई रङ्क ॥१६॥ बरनि सके को हरि के अगनित चरित्र विचित्र ।

जिहि तिहि भांति 'गदाधर' रसना करों पवित्र ।। १७ ।। ❀ ६२६ ❀

❀ सेन दर्शन ❀ बीडी अरोगें तब तक ❀ राग कल्यान ❀ श्रीगोवर्धनराय लाला । अहो प्यारे लाल तिहारे चंचल नैन विसाला ।। तिहारे उर सोहे बनमाला । याते मोही सकल ब्रजबाला ।। ध्रु० ।। खेलत-खेलत तहां गये जहां पनिहारिन की बाट । गागर ढोरे सीस ते कोऊ भरन न पावत घाट ।। १ ।। नंदराय के लाडिले बलि एसो खेल निवार । मन में आनन्द भरि रह्यो मुख जोवत सकल ब्रजनार ।। २ ।। अरगजा कुमकुम घोरि के प्यारी लीनो कर लपटाय । अचका-अचका आय के भाजी गिरिधर गाल लगाय ।।३।। यह विधि होरी खेल ही ब्रजबासिन संग लाय । गोवर्धनधर रूप पै 'जन गोविंद' बलि-बलि जाय ।। ४ ।। ❀ ६२७ ❀

श्रीनाथजी के पाटोत्सव पीछे प्रथम मुकुट धरे तब

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ कुंज कुटीर मिल यमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहीर । एक ओर बलबीर धीर हरि एक ओर युवतिन की भीर ।। १ ।। केकी कीर कल गुन गंभीर पिक डफ मृदंग धुनि करत मंजीर । पग मंजीर कर अबीर केसर के नीर छिरकत है चीर ।। २ ।। भये अधीर रतिपथ के तीर आनंद समीर परसत सरीर । 'नन्ददास' प्रभु पहिरे हीर नग मिटत पीर गह्यो सुख को सीर ।। ३ ।। ❀ ३२८ ❀ शृंगार समय ❀ राग विलावल ❀ खेलत गिरिधर राधा नव निकुंज मधि होरी । जुरि आई ब्रजबनिता अद्भुत रूप किसोरी ।। १ ।। इतते हलधर आदि भये बालक करि जोरी । अबीर गुलाल लिये संग केसर भरी कमोरी ।। २ ।। बाजत बीन मृदंग चंग मुरली धुनि थोरी । कोऊ पकरि कुमकुमा कोऊ डारत रोरी ।। ३ ।। कोऊ गहि पंकरुहन मार करी बरजोरी । गावत विवस भये सब कुल मर्यादा छोरी ।। ४ ।। यह पट देत परस्पर नाचत रंग रह्यो री । घेरि-घेरि सब नारिन भाजत बांह गह्यो री ।। ५ ।। उडत गुलाल अरुन रंग

अंबर सकल भयो री । गगन चक्र चूडामनि लखियत नांहि छिप्यो री ॥६॥ तबै मदनमोहन पिय दृष्टि सबन की चोरी । दोरि आय छल सों एक अब लै है झकझोरी ॥ ७ ॥ वहै उलटि फगुवा मिस पीतांबर पकरयो री । हरि परिरंभन दयो और चाह्यो सो करयो री ॥ ८ ॥ श्रीविट्ठल पदपद्म् प्रताप तेज बल सों री । यह गुनगान 'ज्ञान' सों जो पायो सो कह्यो री ॥ ९ ॥

❀ ६२६ ❀ राग देवगंधार ❀ रविजा तट कुंजन मे गिरिधर खेलत फाग सुरंग । गोपबाल गोकुल के सब ही लये जोर सब संग ॥ श्रीवृषभान सुता सों प्रमुदित चले करन हित जंग । सोभा अद्भुत बनी सबन की निरखि सज्यो अनंग ॥ १ ॥ नवसत साज सिंगार राधिका सन्मुख आई दौरी । प्रेम सहित नैनन अवलोकत साथ सखी सब जोरी ॥ पिचकाई भरि लई कनक की केसर रस सों घोरी । छिरकत चोंप परस्पर बाढी हंसत मृदुल मुख मोरी ॥ २ ॥ चोवा मेद फुलेल अरगजा लीनो सुभग बनाय । भरि भरि बेला सब छिरकत है उर आनंद न समाय ॥ सरस सुगन्ध उड्यो अति बूका दिनमनि लख्यो न जाय । चहूं ओर रस सागर उमड्यो श्रुति पथ गयो बहाय ॥ ३ ॥ वचन विवेक न बोलत तिहि छिन सुधि भूली सब चेत । सोर करत सब ही धावत है हो-हो सब्द समेत ॥ राधा लाल गुलाल मुठी भरि डारत अति सुख हेत । बाहिर उर अनुराग दुहुंन को प्रगट दिखाई देत ॥ ४ ॥ पटह झांझ झालरि डफ आवज बीना सुर कल मंद । ताल पखावज मुरली महुवरि बाजत मुरज सुछंद ॥ गारी ब्रजललना मिलि गावत मन मे अति आनन्द । फगुवा मन भायो सब मांगत पकरे आनंद कंद ॥ ५ ॥ उलटि सखन तन चितए मोहन बाढ्यो रंग अपार । भयो मूढ मन सेष कहन कों राधाकृष्ण विहार ॥ सिव समाधि भूल्यो विधि मन मे पछितायो बहु वार । जो मांग्यो फगुवा सो हंसि के दीनो नंदकुमार ॥ ६ ॥ कुसुमित विपिन सुबल बहु विधि सों दरस करन कों

आयौ । ऋतु वसंत केकी सुक पिक मिलि मधुपन बोल सुनायो । थके देव किन्नर सुर-वनिता अति मन में सुख पायो । 'गोकुलचंद' स्वरूप सुखद को गुन संभ्रम सों गायो ॥७॥ ❀ ६३० ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग जैतश्री ❀ रसिक फागखेले नवल नागरी सों सर्वस्व ऋतुराज की ऋतु आई । पवनमन्द अरविंद और कुंद बिकसे विसद चन्द पिय नन्द सुत सुखदाई ॥१॥ मधुप टोल मधु लाल संग-संग डोले पिकन-बोल निर्मोल श्रुति चारु गाई । रचित रास सविलास यमुनापुलिन में सघन वृन्दाविपिन रही फूलि जाई ॥२॥ कनकअंग बरनी सुकरिनी विराजे गिरिधरन युवराज गजराज राई । युवती हँसगामी मिले 'छीतस्वामी' क्वणित वेनु पदरेनु बड़भागी पाई ॥३॥ ❀६३१❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ ललना तुम मेरे मन अति बसो सुन्दर चतुर सुजान । ललना । कर गहि मोहन मुरलिका नीके सुनावो तान ललना ॥१॥ मोरमुकुट सोभा बनी सुन्दर तिलक सुभाल । मुख पर अलकावली बिथुरी मनहुं कमल अलि माल ॥२॥ अधर दसन वर नासिका ग्रीवा चिबुक कपोल । पीतांबर क्षुद्रघंटिका लाल काछनी डोल ॥३॥ नखसिख अंग बरनो कहा अंग-अंग रूप अतोल । पटतर कों कोऊ नहीं अति मीठे मृदु बोल ॥४॥ एक दिना सेनन मिले नवल कुंवर ब्रजराज । गृहते आवन ना बन्यो भई सबै कुललाज ॥५॥ गृहते गोरस मिस चली लाज छांड़ि कुल एन । वो मुसकनि हिरदे बसी अति अनियारे नैन ॥६॥ कहा ज़ाने तुम कहा कियो गृह अंगना न सुहाय । बिन देखे नागर प्यारो युग समान पल जाय ॥७॥ सकुल लोक मोहि बरजहीं पचिहारे समुझाय । नहिं भावे मोहि कुल कथा मोहि तिहारी चाय ॥८॥ ग्वालिन पर गिरिधर रीझे लीला कही न जाय । 'गोपालदास' प्रभु लाल रंगीलो हँसि लीनी उर लाय ॥९॥ ❀ ६३२ ❀ राग सारंग ❀ माधो चाचर खेल ही खेलत री जमुना के तीर । ध्रु० । बीच-बीच गोपी बनी बिच-बिच री वे बने है

सांँवरे । हर हर हर हँसि परे मुनि-मन ह्वै गये बावरे ॥ ६ ॥ भई सरस्वती मति बौर और खेल कहांलों कहैं। रस भरे सांवल गोर 'नंददास' के हिये रहे ॥१०॥❀६३४❀ राग सारंग ❀ छांड़ो छांडो हमारी बाट, लंगर सांवरे । जिनि फोरो ढोरो मेरी गागर भरन देहु यह घाट ॥ १ ॥ जिनि पकरो झगरो मेरो अँचरा देख बिचारो ठौर । तुम होरी के राते माते बोलत और की और॥२॥ लैहों घेरि निवेरि सबन पै करिहों न काहू की कान । 'श्रीविट्ठल गिरधरन लाल' तुम जीते हो मुसिकान ॥३॥ ❀६३५❀ भोग दर्शन ❀ राग नट ❀ बहुरि डफ बाजन लागे हेली ॥ ध्रु० ॥ खेलत मोहन सांवरो हो किंहिं मिस देखन जांय । सास ननद बैरिन भई अब कीजे कोन उपाय ॥ १ ॥ ओजत गागर डारिये हो यमुनाजल के काज । यह मिस बाहिर निकसिके हम जांय मिलैं तजि लाज ॥२॥ आओ बछरा मेलिये हो बनकों दैंहि बिडार । वे दैहैं हम हीं पठैं हम रहिहैं घरी द्वै चार ॥३॥ हा हा री हौं जाति हों मोपै नाहिन परत रह्यो । तू तो सोचत ही रही तैं मान्यो न मेरो कह्यो ॥४॥ राग रंग गहगड मच्यो हो नंदराय दरबार । गाय खेलि हंसि लीजिये हो फाग बडो त्यौहार ॥५॥ तिन मे मोहन अति बने हो नांचत सबै गुवाल । बाजे बहु विधि बाजहीं हो रुंज मुरज डफ ताल ॥ ६ ॥ मुरली मुकुट बिराजही हो कटि पट बांधे पीत । नृत्यत आवत 'ताज' के प्रभु गावत होरी गीत ॥७॥ ❀६३६❀ संध्या समय ❀ राग काफी ❀ होरी खेले लाल डफ बाजे ताल मानो झनन झनन । झूमक खेलन निकसी नवल तिय हाथी छूटे मानो घनन घनन ॥१॥ चोवा चंदन और अरगजा पिचकाई छूटे मानो सनन सनन। 'नंददास' प्रभु मंडल नृत्यत गत लेत भाव मोहे मनन मनन ॥२॥ ❀६३७❀ सैन भोग आये ❀ राग कल्यान ❀ गिरिधर यमुनातट कुंजन में खेलत फाग सुहावनो । ग्वाल मंडली बल संग लीने आनंद प्रेम बढावनो ॥१॥ परम रुचिर उज्वल वसनन लै अंगअंग भेख बनावनो । अगर सहित मृगमद गोरासों अरगजा

घोरि लगावनो ॥२॥ अति सुगंध केसर के रससों हाटक घट भरि लावनो। रतनजटित पिचकाई भरि लै ब्रजवधू बन बर धावनो ॥ ३ ॥ नवसत साज सिंगारि राधिका रूप अनूप दिखावनो। ब्रजनारी सब जोरि साथ लै सन्मुख गुलाल उडावनो ॥४॥ सौरभ अधिक अबीर सेत सों भरिभरि मुठी चलावनो। होहो होहो बोल सखिन संग लाल गुलाल उडावनो ॥५॥ पटह झांझ झालर आवज डफ ताल मृदंग बजावनो। राग कल्यान जमाय सप्त स्वर तान मान सों गावनो ॥ ६ ॥ मधुमंगल बोल्यो हलधर सों अब कछु मतों उपावनो। ब्रजवनितन की सेना आगे कैसेकै होय बचावनो ॥७॥ तब बलदाऊ मतो रच्यो मन ललिता नेक बुलावनो। बदिये चतुर जो दाव विचारे चित को यह सिखावनो ॥८॥ सुनि मधुमंगल ललिता टेरी नेक यहां लों आवनो। मैं जियमांझ उपाय बनायो करिये तुम मनभावनो ॥ ९ ॥ तब हरखित हिय बोली हँसिके यह निश्चय ठहरावनो। तुम सब दूर रहो ठाढ़े ह्वै हमहि स्याम पकरावनो ॥१०॥ छलबल करि पकरे जु अचानक कीनो सकल खिलावनो। सुबल श्रीदामा आदि सखा सब याही कों जो मिलावनो ॥११॥ मनमोहन संभ्रम सन्मुख ह्वै बोलत बोल सुहावनो। सखा यूथ में देखी ललिता ठाडी करत खिजावनो ॥१२॥ प्रीतम कों पकरन दौरी राधा गह्यो स्याम सुख छावनो। नैनन नैन मिलत मुसिकानी रहत न नेह दुरावनो ॥१३॥ युवती झुंडन सब मिलि गावत गारी द्वंद मचावनो। सुरललना सब देखि थकित भई कोन पुन्य ब्रज पावनो ॥१४॥ प्रमुदित मनसों अष्टयाम जुरि राधापतिहि लडावनो। यह रस तजि जे औरै चाहैं सो तो जन्म गमावनो ॥१५॥ को कवि बरनि सकै या सुख कों देखत दुख बिसरावनो। सुक पिक मोर मधुपगन बोलत ऋतु बसंत हुलसावनो ॥१६॥ सुन बिनती सुत नंदराय के फगुवा बहुत मंगावनो। यह जोरी अविचल चिरजीयो ब्रज नित होहु बधावनो ॥ १७ ॥ राधा कृष्ण अमृत रस सागर क्यों घट होय

समावनो ।'गोकुलचंद' चरन पंकज रज निसदिन तन लिपटावनो ॥ १८ ॥

❀६३८❀ राग अडावनो ❀ गावत धमार आईं ब्रज की सुकुमार नार । चित्र अंकित डफ संवार तृन टकोर अंगुरी ढार बजवत रिझवार ग्वार ॥१॥ सुनि निकसे सुघरराय अर्भक लीने बुलाय शंख शृंग चंग उपंग महुवर बंसी सहनार । घुंघरू घंटा घडियाल कंसताल कठताल दुंदुभी मृदंग राग रंग होत नंदद्वार ॥२॥ चोवा मृगमद गुलाल मुख मंडित किये गुपालकेसर केसु तन पुंज कंचन कर सीस वार । पिचकाई करन लाई धारी छूटत सुहाई सहचरी समीप आय छिरकि रही हार हार ॥ ३ ॥ अति विचित्र बाल मित्र विहरत मिलि युवतीयूथ गावत है सुर संयुत होरी के गीत गार । 'मुरारीदास' प्रभु गुपाल फगुवा दीनों संभार दै असीस उलटि चली रूप माधुरी निहार ॥४॥

❀ ६३९ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ खेलत फाग राग रंग बाजे मृदंग धाधिलांग और आन आन बाजे । कंचन की पिचकाई सु केसर भरि करन लाई बरनबरन वसन साजे ॥१॥ सुनि सुनि व्रजवनिता बाहिर निकसि निकसि आय ठाडीभई लाल भरिवे कों तिनसों बचन कहति लाजे । काहू कों पटपीत गहावत काहूकों निरखि मन मनावत वृंदावन चंद ब्रज बिराजे ॥२॥

❀६४०❀ पाटोत्सव पीछे सेहरा धरे तब—

❀ मंगला दर्शन ❀ राग पंचम ❀ होहो होरी खेलन जैये । आज भलो दिन हों बलिहारी नितही सुहाग बढैये ॥१॥ सोवत जाय जगाय सुंदरी करि उबटनो सीस न्हवैये । सादा चूरी खुभी नकबेसर राधाकुंवरि बनैये ॥२॥ चोवा चंदन और अरगजा अबीर गुलाल उडैये । नव मटुकी भरि केसर घोरी प्रथम कुंज छिरकैये॥३॥धावत सब इतते व्रजनारी कमलन मार मचैये । ताल मृदंग ढोल डफ महुवर झांझन झमक मिलैये ॥४॥ इत राधा उत मोहन प्यारो मुरली को सब्द सुनैये । कुंज ओट ललिता हरिदासी राग 'दामोदर' गैये ॥ ५ ॥

❀६४१❀ शृङ्गार समय ❀ राग विलावल ❀ रस सरस बसो बरसानो जू । राजत

रमनीकर बानो जू ।। मनिमय मंदिर तहां सोहे जू । रवि ससि उपमाकों को है जू ।।१।। वृषभान गोप तहां राजे जू । ताकी कीरति जग में गाजे जू ।। नित परम कुलाहल भारी जू । गावत गारी ब्रजनारी जू ।। २ ।। जब दिन होरी को आयो जू । न्योतो नंदगाम पठायो जू ।। सुनिके मन मोहन धाये जू । सब सखा संग लै आये जू ।। ३ ।। तब जसुमति न्योति बुलाई जू । समधिन समध्याने आई जू ।। कीरति आदर करि लीनी जू । मनुहार बहुत विधि कीनी जु ।।४।। अति कृपा अनुग्रह कीने जू । हम तो अपने करि लीने जू ।। गुन गिनि न परैं कछु गाथा जू । कीनो ब्रज सकल सनाथा जू ।।५।। तुम तो सब की सुखरासी जू । ये सुफल किये ब्रजबासी जू ।। आओ 'निज भवन बिराजो जू । बरसानो सकल निवाजो जू ।।६।। तुम तो सब की सुखदाई जू । मुख कीजे कौन बडाई जू ।। तुम तो यह निज ब्रत लीनो जू । जिन जो जाच्यो सो दीनो जू ।।७।। यह यस तुमरो जग जाने जू । मुख पर कहि कोन बखाने जू ।। तब कर गहि ढिंग बैठारी जू । गावत मंगल ब्रजनारी जू ।।८।। तुमसों पूछैं इक बाता जू । तुम सांची कहो सब गाथा जू ।। जब गर्ग तिहारे आये जू । बहु नाम कृष्ण के गाये जू ।।९।। मुनि वासुदेव करि लेखे जू । वसुदेव कहां तुम देखे जू ।। यह सुनि सुनि बात तिहारीजू । अचरज उपजे जिय भारी जू ।। १० ।। और संका जिय आवे जू । ये भेद कोऊ नहिं पावे जू ।। पति साधु परम तुम पायो जू । यह पूत कहांते जायो जू ।।११।। याके गुन रूप नियारे जु । यह मिले न कुलहि तिहारे जु ।। कछु कह्यो हमारो कीजे जु । बसिके सबकों सुख दीजे जु ।।१२।। रहिये कछु दिवस हमारे जु । हम तो हैं सकल तिहारे जु ।। यह दोऊ एक करि जानो जु । नंदगाम सोई बरसानो जु ।।१३।। जानत ज्यों नंद तिहारे जु । तेसेई वृषभान हमारे जु ।। ये दोऊ परमसनेही जु । ये एक प्रान द्वै देही जु ।।१४।। सुनि सुनि जसुमति मुसिकानी जु । बोली मधुरी एक बानी जु । बसिये कछु

दिवस तिहारे जू । कीरति चलि बसौ हमारे जू ॥ १५ ॥ तब हंसी मकल ब्रजनारी जू । जसुमति की ओर निहारी जू ॥ ब्रज भयो कुलाहल भारी जू । नाचत दै दै कर तारी जू ॥१६॥ यह रस बरसे बरसाने जू । बिन कुंवरी कृपा को जाने जू ॥ कीरति जसुमति जस गायो जू । ब्रजबास 'माधुरी' पायो जू ॥ १७ ॥

❀ ६४२ ❀ राग धनाश्री ❀ हो मेरी आली भानुसुता के तीर अबीर उडावहीं । मिल गोपी गोपकुमार मधुर सुर गावहीं ॥ १ ॥ बाजत मधुर मृदंग बेनु सुहावनी । आवज सरस उपंग चंग मन भावनी ॥ २ ॥ नाचत गोपी ग्वाल ताल बजावहीं । मधुर भामती गारी सब मिलि गावहीं ॥ ३ ॥ भाल सुभग मधि विसाल गुलाल बिराजहीं । चिबुक चारु अबीर अधिक छबि छाजहीं ॥ ४ ॥ कृष्णागर को पंक बदन लिपटावहीं । सुरंग गुलाल उड़ाय गगन सब छावहीं ॥५॥ केसर भरि पिचकाई परस्पर मारहीं । केसू कुसुम निचोय सीस पर ढारहीं ॥ ६ ॥ पिय के सीस सेहरो सब मिलि बांधहीं । चपल नैन की चोट मैंनसर साधहीं ॥ ७ ॥ प्यारी कों उबटि न्हवाय बसन पहिरावहीं । मधुर व्याह के गीत सबै मिलि गावहीं ॥ ८ ॥ करत व्याह को खेल सकल मिलि भामिनी । विविध सुगंध उड़ाय कियो दिन यामिनी ॥ ९ ॥ दूल्हे दुलहिन जोट बनी मन भावनी । राजत मंडल मांझ परम सुहावनी ॥ १० ॥ यह विधि नित व्रत मांझ परम सुख बरखहीं । ब्रजयुवतिन मुख निरखि अधिक मन हरखहीं ॥ ११ ॥

❀ ६४३ ❀ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग काफी ❀ तुम आओ री तुम आओ । मोहन जू कों गारी सुनाओ ॥ एरी रस रंग बढाओ ॥ १ ॥ हरि कारो री हरि कारो । यह द्वै बापन बिच बारो ॥ एरी० ॥ २ ॥ हरि नटवा री हरि नटवा । राधा ज के आगे लटुवा ॥एरी० ॥ ३॥ हरि मधुकर री हरि मधुकर । रस चाखत डोलत घर घर ॥एरी० ॥ ४ ॥ हरि खंजन री हरि

खंजन । राधा जू को मन रंजन ॥एरी० ॥५॥ हरि रंजन री हरि रंजन । ललिता लै आई अंजन ॥ एरी० ॥६॥ हरि नागर री हरि नागर । जाको बाबा नंद उजागर ॥एरी० ॥ ७ ॥ हम जाने री हम जाने । राधा गहि मोहन आने ॥एरी० ॥८॥ मुख मांडो री मुख मांडो । हरि हा हा खाय तो छांडो ॥एरी० ॥ ९ ॥ हम भरि है री हम भरि है । काहू ते नेक न डरि है ॥एरी०॥१०॥ हरि होरी हो हरि होरी । स्यामा जू केसर ढोरी । एरी० ॥ ११ ॥ हरि भावे री हरि भावे । राधा मन मोद बढावे । एरी० ॥ १२ ॥ रंगभीनो री रंगभीनो । राधा मोहन बस कीनो ॥एरी० ॥१३॥ हरि प्यारो री हरि प्यारो । राधा नैनन को तारो ॥एरी० ॥१४॥ हम लैहैं री हम लैहैं । फगुवा लै गारी दै हैं ॥एरी० ॥१५॥ यह जस 'परमानंद' गावे । कछु रहसि बधाई पावे ॥एरी रस रङ्ग बढावें ॥ १६ ॥ ❀ ६४४ ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग बिलावल ❀ मोहन वृषभान के आये जू । तहां अति रस न्योति जिमाये जू ॥ १ ॥ वृषभानपुरा की गारी । श्री राधा कृष्ण पियारी ॥ २ ॥ चढि दूलहे व्याहन आये । सिंहासन दै बैठाये ॥३॥ नाना विधि भई रसोई । तहां जेंवत अति सुख होई ॥ ४ ॥ तहां मिलि युवती बड़भागी । गावैं कृष्णचरित अनुरागी ॥ ५ ॥ तहां बोली एक व्रजनारी । आओ दैहैं गारी ॥ ६ ॥ इने गारी कहा कहि दीजे । औगुन सरस लहीजे ॥ ७ ॥ द्वै बाप सबै कोऊ जाने । जिन वेद पुरान पुरान बखाने ॥ ८ ॥ वसुदेव के सुत जु कहाये । तुम नंद गोप के आये ॥९॥ तेरी मैया आन आन जाती । वे हिलि मिलि बैठे पाती ॥ १० ॥ तेरी फूफी पंचभरतारी । जाको जस पावनकारी ॥ ११ ॥ पति पांडु सबै जग जाने । सुत आन आन के आने ॥ १२ ॥ तेरी द्रुपदसुता सी भाभी । वह पंच पुरुष मिलि लाभी ॥ १३ ॥ जाकी जग बदत बड़ाई । सोतो भक्तसिरोमनि गाई ॥ १४ ॥ तेरी बहिन सुभद्रा कुमारी । सोतो अर्जुन

संग सिधारी ॥ १५ ॥ श्रीकृष्ण तेरी महतारी । वह पहिरे तन सुख सारी
॥ १६ ॥ रानी रातो लंहगा सोहे । तेरी चितवन में जग मोहे ॥ १७ ॥
तुम कहियत हो ब्रह्मचारी । जाके सोलहसहस्र ब्रजनारी ॥ १८ ॥ तुम
कहियत हो दधिदानी । जिन कुब्जा सों रति मानी ॥ १९ ॥ श्रीकृष्ण
तेरो बलवीरा । जिन करष्यो कालिंदी नीरा ॥ २० ॥ अहो तुम वन-वन
धेनु चराई । भई घोख सकल सुखदाई ॥ ११ ॥ वृंदावन बेनु बजायो ।
ब्रजसुन्दरी रास खिलायो ॥ २२ ॥ सूने भवन पराये । चोरी करि माखन
खाये ॥ २३ ॥ गारी गावे हरिजू की सारी । वे हंसि-हंसि दे हैं तारी ॥
२४ ॥ गारी गावे हरिजू की सासू । वे ढरत प्रेम के आंसू ॥ २५ ॥ गाओ
गाओ सब मिलि गारी । तुम सुन हो लाल बिहारी ॥२६॥ तुम करि-करि
अपनो भायो । अपनो जस जगत सुनायो ॥ २७ ॥ वे हांसि-हंसि गावें
गोरी । पट ओट हंसी मुख मोरी ॥२८॥ छांड़े दुर्योधन से राजा । तेरे कुलहि
न आये लाजा॥२९॥ ललिता यह मङ्गल गायो । सुनि'सूरस्याम'सचुपायो॥३०॥
❀ ६४५ ❀ राग बिलावल ❀ सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि देहुं कहा कहि
गारी जु । बड़े लोग के औगुन बरनत सकुच होत जिय भारी जु ॥ १ ॥
को करि सके पिता को निर्णय जाति-पांति को जाने । जिन के जिय जैसी
बनि आवे तैसी भांति बखाने ॥२॥ माया कुटिल नटी तन चितयो कोन
बडाई पाई । उन चंचल सब जगत बिगोयो जहां तहां भई हँसाई ॥ ३ ॥
तुम पुनि प्रकट होय बारे ते कोन भलाई कीनी । मुक्तिवधू उत्तम जन
लायक ले अधमन कों दीनी ॥ ४ ॥ बसि दस मास गर्भ माता के उन
आसा करि जाये । सो घर छांडि जीभ के लालच ह्वै गये पूत पराये ॥५॥
बारे ही ते गोकुल गोपिन के सूने गृह तुम डाटे । ह्वै निसंक तहाँ पेठि
रंकलों दधि के भाजन चाटे ॥ ६ ॥ आपु कहाय बड़े के बेटा भात कृपनलों
मांग्यो । मानभंग पर दूजे जाचत नेक संकोच न लाग्यो ॥ ७ ॥ लरि-

काई ते गोपिन के तुम सूने भवन ढिंढोरे । यमुना न्हात गोप-कन्यन के निपट निलज पट चोरे ॥ ८ ॥ बेनु बजाय विलास कियो बन बोली पराई नारी । वे बाते मुनि राजसभा मे ह्वै निसंक विस्तारी ॥ ९ ॥ सब कोऊ कहत नंदबाबा को घर भरयो रतन अमोले । गरे गुंजा सिर मोरपखौवा गायन के संग डाले ॥ १० ॥ राजसभा को बैठनहारो कोन त्रियन संग नाचे । अग्रज सहित राजमारग मे कुबजा देखत राचे ॥ ११ ॥ अपुना सहोदरा आपुही छल करि अर्जुन संग भजाई । भोजन करि दासीसुत के घर जादो जात लजाई ॥ १२ ॥ लै लै भजे राजन की कन्या यहिधौं कोन भलाई । सत्यभामा जु गोत मे ब्याही उलटी चाल चलाई ॥ १३ ॥ बहिन पिता की सास कहाई नेक हु लाज न आई । एते पर दीनी जु बिधाता अखिल लोक ठकुराई ॥ १४ ॥ मोहन वसीकरन चट चेटक यंत्र मंत्र सब जाने । ताते भले भलें करि जाने भले भले जग माने ॥ १५ ॥ बरनों कहा यथा मति मेरी वेद हू पार न पावे । 'दास गदाधर' प्रभु की महिमा गावत ही उर आवे ॥ १६ ॥

❀ ६४६ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀

नंदमहर को कुंवर कन्हैया होरी खेल न जाने हो । रस में विरस करे अरबीलो लघु दीरघ न पहिचाने हो ॥१॥ अंगुरी गहत गहे कर पहोंचो भुज मूलन लगि आवे । देखि बिराने श्रीफल ऊपर लालची मन ललचावे ॥ ॥ २ ॥ आंज्यो चाहे और के नैना अपने नैन दुरावे । पकरयो चाहे सुधानिधि हाथन अधरसुधा क्यों पावे ॥३॥ तेल फुलैल उडेले सिर ते ग्रंथि दुकूलन जोरी । बहुत गुलाल डारि आंखिन में हँसि लंगर झकझोरी॥४॥ कमल पत्रिका रचे कपोलनि मरवट मुखहि बनावे । दुलहिनी सी करि पठवत उतते दूलहै आप कहावे ॥ ५ ॥ जो हम रूठि जाय घर बैठें तो सखी हमहि मनावे । सकत सनेह करे युवतिन सों सैनन अर्थ जनावे ॥६॥ राजा मित्र सुन्यो नहिं देख्यो भयो बखानो साँचो । 'मुरारीदास' प्रभु सों

ज्ञिनि बोलो कोटिक नाच किन नाचो ।। ७ ।। ❀ ६४७ ❀ राजभोग दर्शन ❀
❀ राग बिलावल ❀ नंदगाम को पांडे ब्रज बरसाने आयो । अति उदार
वृषभान जानि सनमान करायो ।। १ ।। पांडे जु के पाँयन कों हँसि सीस
नँवायो । पाँय धुवाय न्हवाय प्रथम भोजन करवायो ।। २ ।। घिरि आई
ब्रजनारी जिन यह सूधो पायो । भान-भवन भई भीर फाग को खेल
मचायो ।। ३ ।। सीसी सरस फुलेल लै सिर ऊपर नायो । हनूमान की प्रतिमा
मानो तेल चढायो ।। ४ ।। काजर सों मुख मांडि वदन बिंदा जु बनायो ।
कारे कलस श्रवत मानो चपरा चिपकायो ।। ५ ।। गजगामिनी गोंछन सों
तुकमैया लपटायो । देह धरे मानों फागुन खेलन ब्रज में आयो ।। ६ ।। कहुँ
चंदन कहुँ वंदन कहुं चोवा चरचायो । ऋतु वसंत जानो केसू को द्रुम
फूलन छायो ।।७।। काहू गूलरी माला काहू झगला पहिरायो । मानो गज
घंटन बिच बिच गजगाह बनायो ।। ८ ।। रंग रह्यो जो चोंटियन अंग
रातो ह्वै आयो । गुंजन को गहनो मानो लली प्रोहित पहिरायो ।। ९ ।।
माथे ते मोहिनी ने छाछ को माट ढुरायो । मानो काचे दूध स्याम गिरिवर
जो न्हवायो ।। १० ।। सोर बोर भई खोर लांगते जल दर्रायो । महादेव
की जटा जूट चरनोदक आयो ।। ११ ।। लगत दंत सों दंत गिडगिडा अंग
लगायो । मानो सुघर संगीत ताल कठताल बजायो ।। १२ ।। गयो जनेऊ
टूट छूट पाँयन लपटायो । मानहु चतुर चंदान राहु पग फंदा लायो ।।१३।।
चंचल चंद्रमुखी चहुंदिसि ते लै गुलचायो । लियो है लुगाईन घेरि तरे
ना ना कहि आयो ।। १४ ।। श्रीराधा राधा कहि अपनो बोल सुनायो ।
अरी भान की कुंवरी सरन हों तेरी आयो ।। १५ ।। सुनिके प्रेम बचन जु
गरो राधा भरि आयो । बाबाजु को दगला लली प्रोहित पहिरायो ।।१६।।
कीरतिजु पाँय लागि-लागि तातो पय प्यायो । तोलों खेलत होरी ब्रज में
दूलहै आयो ।। १७ ।। सांचे स्वांगन सजि के सबै समूह सुहायो । तपा व्यास

को पूत घूत सुकदेव बनायो ॥ १८ ॥ सनकादिक चारों दिस ज्यों संन्यास सुहायो । घूमत आयो इन्द्र स्वांग उन्मत्त नचायो ॥ १९ ॥ ब्रज की विथिन बीच कीच में लोटपुटायो । चार वदन को स्वांग चतुर चतुरानन लायो ॥ ॥२०॥ पञ्चानन पाँचो मुखसों संगीत बजायो । हरि को ह्वै जु बावरो नारद नाचत आयो ॥ २१ ॥ देखि नंद के लाल जंत्र धरि गाल बजायो । महादेव पटतार देत यह पट प्रभु भायो ॥ २२ ॥ हो-हो हो-हो ह्वै रह्यो हरि हाँसीन हँसायो । माया निपुन भई सो नारद हल हुलरायो ॥ २३ ॥ काम कामिनी भयो सबन को चित्त चुरायो । ललिता जोरी गांठि लाल को व्याह रचायो ॥ २४ ॥ गठजोरो वृषभानकुंवरि सों जाय जुरायो । नवल अंब के मौर की मौरी मौर बनायो ॥ २५ ॥ पीत पिछोरी तानि छबीलो मंडप छायो । फागुन की गारिन को साखाचार पढायो ॥२६॥ होरी की अग्यारी करि दूल्हे परनायो । होरी को पकवान सो भरि भरि झोरिन खायो॥२७॥ फूली फाग की फाग फूल्यो जिन यह यस गायो । 'जन हरिया घनस्याम' बास बरसाने पायो ॥ २८ ॥ ❀ ६४८ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग गोरी ❀ श्री गोकुल राजकुमार कमलदल लोचना । ठाडे सिंहदुवार कमलदल लोचना ॥ नखसिख भेख बनाय । सुन्दरता अति सार ॥ १ ॥ रस भरे नंदकिसोर । निकसे खेलन फाग ॥ मधुर बेनु कर धरे । गावत गोरी राग ॥ २ ॥ आये ब्रज के चोहटे । लिये सखा सब संग ॥ नव भूषन नव वसन । सोभित सामल अंग ॥ ३ ॥ उपमा कही न जाय । सुंदर मुख आनंद ॥ बालवृन्द नछत्र । प्रगटे पूरनचंद ॥४॥ बाजत ताल मृदंग । आवज डफ मुखचंग ॥ मदनभेरी सुर बीन । गिडगिडी झांझ उपंग ॥५॥ श्रवन सुनत चली दौरि । गृह-गृह ते ब्रजनारी ॥ तिन में परम सुदेस । राधा अति सुकुमारी ॥ ६ ॥ बने चीर आभरन । सब तन विविध सिंगार ॥ कंकन कर कटि किंकिनी । उर गजमोतिन हार ॥ ७ ॥ नकबेसर ताटंक । कंठसरी अनुभांति ॥ चोकी

बनी जराय । दूर करत रविकांति ॥ ८ ॥ सेंदुर तिलक तंबोल । खुटिला बने विसेख ॥ सोभित केसर आड । कुमकुम कज्जल रेख ॥ ९ ॥ प्रफुल्लित अति आनंद । चितवत हरि मुख ओर ॥ मानो विधु प्रीतम मिले । सादर चारु चकोर ॥ १० ॥ रूप नैन रस भरे । बारंबार निहारि ॥ गावें झूमक चेत । बीच सुहाई गारि ॥ ११ ॥ चोवा चंदन अरगजा । सोंधे सजे अनेक । पिचकाई कर लिये । धाय एक ते एक ॥१२॥ अति भरि बांधे फेंट । सुरंग अबीर गुलाल ॥ दुहुँदिसि माच्यो खेल । इत गोपी उत ग्वाल ॥१३॥ नर-नारी परी चोंक । छिरकत तकि-तकि जेह ॥ भरत भई अति भीर । मानों बरखत मेह ॥ १४ ॥ बरन बरन भये वसन । अंगन रहे लपटाय ॥ क्रीड़ा रस बस मगन । आनंद उर न समाय ॥ १५ ॥ व्रज युवतिन मतो मत्यो । मुख न जतावत बेन ॥ पकरि लेहु घनस्याम । मिलवत इत उत सेन ॥ १६ ॥ युवतीयूथ तब पेलि । दीने सखा भजाय ॥ कहत कहा मतो करें । अब तो कछू न सुहाय ॥१७॥ कहत न बांचे कछू । बचन गारि और गीत ॥ झुंडन जुरि चहुंओर । जाय गह्यो पट पीत ॥१८॥ नवल कुंवर जानिये । अब जो मुरली लेहु ॥ राधे करहु जुहार । के हमारो फगुवा देहु ॥१९॥ फगुवा देहु न देहु । छांड़हु और उपाय ॥ हमारो भायो करहु । के छूटो सिरनाय ॥२०॥ प्यारी पिय सों कहै । अति मीठे मृदु बोल । काजर आंजे नैन । रोरी हरद कपोल ॥२१॥ मुख मांड़े छबि भई । कोटि मदन सिरताज ॥ त्रिभुवन सोभग लिये । मनो ब्याहन आयो आज ॥२२॥ क्रीड़त अविचल रहो । युग-युग यह व्रजवास ॥ गिरिधर को यसगान । नित करहु 'चत्रुभुजदास' ॥२३॥ ❀६४६❀

❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ होरी हो होरी हो गोविंदजी होरी रे ॥ध्रु० ॥ आओ सखी सहेलरी याको मुख मांडो रोरी रे । बीच-बीच सिंदूर के बेंदा तेल चढ़ाओ गाओ होरी रे ॥ १ ॥ याको पट राधा की चूनरी पकरि करो गठ जोरी रे । घन दामिनी मानों ब्याह होत है पिय सांवरे यह गोरी रे।

॥ २ ॥ चाचर जोरि फिरो सत भांमरि मिटैं दुहुन की चोरी रे। मानहु न घबराय तनकसी खेलत गोकुल खोरी रे ॥ ३ ॥ दूल्है दुलहिन के हाथन सों बांधो डोरना डोरी रे । खेलत हारे नवल लाडिले जीती नवल किसोरी रे ॥ ४ ॥ यह जोरी चिरजियो विधाता सुख बाढ्यो दोऊ ओरी रे । 'जन गोविंद' बल वीर बधाई पाई भक्ति भरि झोरी रे ॥ ५ ॥ ❀ ६५० ❀

❀ भोग सरे ❀ राग अडानो ❀ आवे रावल की ग्वार नार गोकुल ते खेल । सिथिल अंग लज्जित मनमोहन रङ्ग-रङ्ग नैन पीक-लीक अरचि अरु किये रति केल ॥ १ ॥ अंसन अवलंब पांति प्रफुलित लपटात जात हँसनि दसनि कांति जुही जोन्ह रही फैल । पुलकित इत रोम पांति सोंधे सब सगबगात केसर के रंग सिंधु प्रेम लहरि झेल ॥ २ ॥ सब वेस नवल किसोरी मन्मथ की मटक मोरी प्रीतम अनुराग फाग बाढी रंग रेल । 'ब्रजपति' रिझवार पाय अचयो रस मन अघाय भौन गौंन काज राजहंसन गति पेल ॥ ३ ॥ ❀ ६५१ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ नवरंगी लाल बिहारी हो तेरे द्वै बाप द्वै महतारी । नवरंगीले नवल बिहारी हम दैंहि कहा कहि गारी ॥ १ ॥ द्वै बाप सबै जग जाने । सो तो वेद पुरान बखाने ॥ बसुदेव देवकी जाये । सो तो नंद महर के आये ॥ २ ॥ हम बरसाने की नारी । तुम्हैं दैहैं हँसि-हँसि गारी । तेरी भूआ कुंती रानी ॥ सो तो सूरज देखि लुभानी ॥ ३ ॥ तेरी बहन सुभद्रा क्वारी । सो तो अर्जुन संग सिधारी ॥ तेरी द्रुपदसुता सी भाभी । सो तो पांच पुरुष मिलि लाभी ॥ ४ ॥ हम जाने जू हम जानै । तुम ऊखल हाथ बँधाने ॥ हम जानी बात पहिचानी । तुम कब ते भये दधि दानी ॥ ५ ॥ तेरी माया ने सब जग ढूंढ्यो । कोई छोड्यो न बारो बूढ्यो ॥ 'जन कृष्णा' गारी गावे । तब हाथ थार कों लावे ॥६॥ ❀६५२❀

पाटोत्सव पीछे टिपारा धरे तब

❀भोग के दर्शन ❀ राग मारू ❀ आज बनि ठनि खेलन फाग निकस्यो है

नंददुलारो । फब्यो है ललित भाल लालके जटित लाल टिपारो ॥ १ ॥ बडरे बंक विसाल नैन छबि भरे इतराई । बन्यो मंजुल मोर चंद चलत देखत छांई ॥ २ ॥ उत बनी ब्रज नवकिसोरी गोरी रूपहि भोरी । बोरी प्रेम रंग में मानो एक ही डार की तोरी ॥ ३ ॥ ब्रज की बाल लै गुलाल मोहन लाल छाये । मानो नील घन के ऊपर अरुन अंबर आये ॥ ४ ॥ ताहि धूंधर मदमत्त भ्रमर भ्रमत ऐसे । बनी है छबि विसाल प्रेम जाल गोलक जैसे ॥ ५ ॥ बन्यो है जलजंत्र खेल छूटी रंग की धारें । जानो धनुर्धर सरन लरत धार सों धार मारें ॥ ६ ॥ और कहांलगि कहिये खेल परम रस की मूली । गावत सुक सारद नारद सिव समाधि भूली ॥ ७ ॥ जहिं जहिं हरि चरित्र अमृत सिंधु सों रति मानी । 'नंददास' ताकों मुक्ति लोन कोसो पानी ॥ ८ ॥ ❀ ६५३ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ खेलत फाग फिरत रस फूले । स्यामा स्याम प्रेम बस नाचत गावत सुरत हिंडोरे झूले ॥ १ ॥ वृंदावन की जीवन दोऊ नटनागर बंसीबट कूले । 'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत नैन कुरंग फिरत रसमूले ॥ २ ॥ ❀ ६५४ ❀ ❀ सेन भोग आये ❀ राग विहाग ❀ जब हरि हो हो होरी गावे । तरुनी यूथ तरनि-तनयातट आरज पथ तजि आवे ॥ १ ॥ निरखि नैन मनमोहन पिय के अपने नैन सिरावे । विविध कुसुम की दाम स्याम कों रवकि जाय पहिरावे ॥ २ ॥ अति कमनीय सों कमल बरन की कटि काछिनी कछावे । मंजुल मोरमुकुट मकराकृति मरवट मुखहि बनावे ॥ ३ ॥ ताल मृदङ्ग मुरज डफ महुवर नाना जंत्र सजावे । नव नागर नट भेष धरे मधि ठाड़े बेनु बजावे ॥ ४ ॥ कोऊ झील कोऊ मंद घोर सुर तानन गाय रिझावे । ललित त्रिभङ्गी नव रंगीली अंग सुधंग नचावे ॥५॥ हाव भाव सों निपुन नागरी नाना भाँति हँसावे । रीझि-रीझि तृन तोर सोर कर युग कपोल परसावे ॥ ६ ॥ कोऊ एक सन्मुख बैठि लाल के अंचल अवनि बिछावे । ताहि

आपुनो पीतांबर मन मोहन हँसि उढावे ॥ ७ ॥ कोऊ एक केसर कुसुम वार घसि घोर कलस भरि लावे । रतन जटित पिचकाई भरि-भरि पिय कों छिरकि छिरकावे ॥८॥ चोवा मेद जवाद साख गोरा घनसार मिलावे । आपुन मांझ मतो मिलि कर ले मोहन मुख लपटावे ॥९॥ एक पिया को वेस पलटि सिर फेंटा ऐंठ बंधावे । बर्हापिच्छ धरि नूतन मंजरी दच्छिन दिस थिरकावे ॥ १० ॥ कनक पट कटी फेंट बाँधि के कटितट बेनु धरावे । सेली बेंत अंस धरि ताको मन्मथ मंत्र पढावे ॥११॥ कोऊ एक मेन महामद माती आलिंगन दे आवे । निर्लज भई परिरंभन दै दै अधरसुधारस प्यावे ॥ १२ ॥ तब ललिता ले मोहन जू कों नारी को भेख बनावे । नवसत द्वादस साज लाड़िली नवलपिया पै पठावे ॥ १३ ॥ अति सुकुमार सलोनी स्यामा रति गुन ग्राम दृढ़ावे । निरखि हरखि पुलकित तन दंपती अतुलित प्रेम बढ़ावे ॥ १४ ॥ अद्भुत एक विचित्र माधुरी सों पिय कों समुझावे । हसन लसन चितवन मिलवन मे सहज उरझि सुरझावे ॥१५॥ एक सखी ले बूका बंदन भरि-भरि मुठी चलावे । सुरंग गुलाल उडाय अधिक सो लोचन लाज नसावे ॥ १६ ॥ नवल कुसुम की लै नवलासी कमलन मार मचावे । प्रेमछकी डोले मन खोले हो हो हो करि धावे ॥ १७ ॥ मगन भई आनंद सिंधु मे तन मन सुधि बिसरावे । 'ब्रजजन' मीन भये रस सागर अपनी तृसा बुझावे ॥ १८ ॥ ❀ ६५५ ❀

फागुन वदी १३ ❀ सिंगार समय ❀ राग टोडी ❀ अरी मेरे नैन लगे ब्रजपाल सों । बोलत बचन रसाल सों ॥१॥ मोरचंद्रिका सोहे सीस । संग सखा दस बीस ॥ २ ॥ मृगमद तिलक बनाये भाल । गति मोहे गजराज मराल ॥ ३ ॥ भोंह नचावे गावे गीत । सोहे अंबर ओढे पीत ॥ ४ ॥ कानन कुंडल दुलरी कंठ । मधुर-मधुर बाजे परिमंठ ॥ ५ ॥ अरुन कमलदल नैन विसाल । उर सोहे वैजन्ती माल ॥ ६ ॥ रतनजटित पहोंची

अति बनी । निरखि थकी सरद ससिवदनी ॥ ७ ॥ नासा कों मुक्ता अति चारु । सब ऊपर गुञ्जा को हार ॥ ८ ॥ कटि किंकिनी मोहें रति मेन । गोपिन रिझवत दै-दै सेन ॥ ९ ॥ रुनझुन नूपुर बाजे पाय । जनो पंकज अलिकुल किलकाय ॥ १० ॥ भूषन विविध सजे सब अंग । देखि भयो रवि को रथ पंग ॥ ११ ॥ बन-बन फिरें चरावें धेनु । यमुना के कूल बजावे बेनु ॥ १२ ॥ हाथ लकुटिया नाचे सुदेस । गोरजमंडित सोहे केस ॥१३॥ गृह-गृह ते दौरी सब अली । फूली सरद सरोज सी कली ॥ १४ ॥ अंचल पट मुख दै जु हँसी । सब हरि के उर बीच बसी ॥ १५॥ जब मोहन दुरि के चितयो । ताछिन मो मन चोर लियो ॥ १६ ॥ सोचि संभारि संकेत चली । भूलि गई नवकुंज गली ॥ १७ ॥ तहाँ औंचका मो भुज गही । बिन बोले मुख देखि रही ॥ १८ ॥ मुख सों खात खवावत पान । करत मधुर अधरामृत पान ॥१९॥ तब उर लागि करी रति केलि । पल-पल बढी परम सुख बेलि ॥२०॥ यह सुख निरखि सुर नर रहे भूल । आनंद बरखे नौतन फूल ॥ २१ ॥ पुनि विपरीत सुरति मति करी । राग रंग आनंद भरी ॥ २२ ॥ त्रिविध सुखद मलयानिल चल्यो । सब निकुंज फूलि लहल्यो ॥ २३ ॥ तिहि औसर पलटे पट चीर । देखि बलैया लै रघुवीर ॥ २४ ॥ ❀ ६५६ ॥ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ लालन तैं प्यारी चित हरि लियो तो बिन कछु न सुहाय । तलफे जल बिन मीन ज्यों चंद चकोर दिखाय ॥ १ ॥ फिर-फिर बात वही बूझ बूझि बूझि पछिताय । कोकिल इंदु तपत करे लग्यो मदन सर जाय ॥ २ ॥ देखे ही सब जानिये बेन न कछू सुहाय । यह सुनि स्याम कुंज चले ठाडे पाछे आय ॥ ३ ॥ सखन सहित प्यारो जहाँ सेन सबै समुझाय । जुगल हस्त अँखियाँ मूंदी पुनि मुरली मुख लाय ॥४॥ जब ते कह्यो ये को है जुगल चत्रुभुजराय । यों करि रिझ लाडिली सन्मुख हिय हरखाय ॥५॥ छिरकत चोवा

चंदना अबीर गुलाल उड़ाय। प्रफुलित मुख बातें करे उर आनंद न समाय ॥ ६ ॥ रीझि हार ललिता दियो प्यारी कछु मुसकाय। चरन कमल वंदन करे 'द्वारकेस' बलि जाय ॥७॥ ❀ ६५७ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ स्यामा नकबेसरि अति बनी छबि कवि पै बरनी न जाय। सोने सरस सुनार गढी है हीरा लाल लगाय ॥ १ ॥ आधे अधर बिराजत मोती लाल रहे ललचाय। ताकी सोभा अति बाढ़ी है भयो गुंज को सुभाय। तनसुख सारी राती लँहगा क्यों न स्याम मन भाय। सोभा 'हित हरिवंस' सांवरे चिते चली मुसिकाय ॥३॥ ❀ ६५८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ अरे कारे प्यारे रतनारे भौंरा वदन कमल के लोभी। फिरत पराग हेत तब ही ते उपजत कलिका गोभी ॥ १ ॥ फूलि रहे द्रुम डार-डार झुकि भार कुसुम मकरंद। ताहि छांड़ि पियो चाहत तुम सुधाकिरन मुखचंद ॥ २ ॥ जो तू होय तृसा आतुर तो रहि ब अलक लर लाग। पुनि विश्राम कियो चाहे तो चिबुक गाड खग खाग ॥३॥ जो उनमत ह्वै गान करे तो श्रुतिपथ लगि गुंजार। क्यों भटके 'ब्रज' बनबन बीथिन यह निश्चय उर धार ॥४॥ ❀ ६५९ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ बाघंबर ओढैं साँवरो हो जोगी कौ कुंअर कौन। एक समें उपजी मन-मोहन करि तपसी कौ भेख। मथुरा गोकुल ब्रजमंडल में आनि जगायौ अलेख ॥ १ ॥ संख सब्द धुनि सुनि जित तित तें फिरि आईं ब्रजनारि। बदन बिलोकि कुंवरि राधे कौ बैठ्यौ है आसन मारि ॥ २ ॥ हँसि बूझति वृखभाननंदिनी रावल ऊतरु देहु। कारन कौन रूप तपसी कौ बन तजि डोलत गेहु ॥ ३ ॥ कौन देस तैं आयो रे जोगी कहां तेरी मनसा जाइ। आपुन साधि मौन ह्वै बैठे उत्तर देस बताइ ॥४॥ सृंगीपत्र विभूतन बटुवा सिर चंदन की खौरि। मेरे जिय ऐसी आवत है कंथ विसारयौ है गौरि ॥५॥ चंचल चपल चतुर देखियत हो मुख मधुरी मुसिकान। जोगी नहीं तुम बड़े विभोगी भोगी भँवर निधान ॥६॥ चुकटी

भभूत दई राधे कों चले हैं बाघंबर झारि । चितवत चोरि लियो मनमोहन
गोहन लागी है कुंवारि ॥ ७ ॥ नगर-नगर प्रति बगर-बगर प्रति निसि
दिन फिरति उदास । नैन चकोर भए राधे के हरि दरसन की प्यास ॥ ८ ॥
अतन जतन करि मन मोह्यो है निरखि नैन की कोर । 'जगन्नाथ' जीवन
धन माधौ प्रीति लगी दुहुँओर ॥ ९ ॥ ❀६६०❀संध्या समय ❀राग काफी ❀
औरन सों खेले धमार मोसों मुख हू न बोले । नंदमहर को लाड़िलो मोसो
ऐंड्यो ई डोले ॥ १ ॥ राधा जू पनिया निकसी वाको घूंघट खोले ।
'सूरदास' प्रभु सांवरो हियरा बिच डोले ॥२॥ ❀ ६६१ ❀ सेन भोग आये❀
❀ राग गोरी ❀ खेलत हैं हरि हो हो होरी । व्रज-तरुनी रससिंधु झकोरी ॥
॥ १ ॥ बाल वयस्य और नव तरुनी । जोबन भरी चपल दृग हरिनी॥२॥
नवसत सजि गृह-गृह ते निकसी । मानों कमल कली सी विकसी ॥ ३ ॥
पिक-बचनी तन चंपक बरनी । उपमा कों नहीं मनसिज घरनी ॥४॥ बरन-
बरन कंचुकी और सारी । मानो काम रची फुलवारी ॥५॥ द्वादस अभरन
सजि कंचन तन । मुख ससि आभूखन तारागन ॥ ६ ॥ मानो मनोभव
मन ते कीनी । और त्रिभुवन की सोभा लीनी ॥ ७ ॥ देखत दृष्टि छिन न
ठहराई । ज्यों जल झलमलात जलझांई ॥ ८ ॥ ताल मृदंग उपंग बजा-
वत । डफ आवज स्वर एक मिलावत ॥ ९ ॥ मधु ऋतु कुसुमित बन नव
नव री । गावत फाग राग रति गोरी ॥ १० ॥ आई सकल नंदजू के द्वारे ।
अगनित सकल सुगंध सँवारे ॥ ११ ॥ झूमि-झूमि झूमक सब गावे । नमत
भेद दुहुँदिस ते आवे ॥ १२ ॥ रससागर उमड्यो न समाई । मानो लहर
चहूंदिस धाई ॥ १३ ॥ खोर खिरक गिरि जहाँ हि पावें । धाय जाय ताहि
गहि लावें ॥ १४ ॥ करि छांडत आपनो मन भायो । उड़त गुलाल सकल
नभ छायो ॥ १५ ॥ घर में ते मनमोहन झांके । दूर भये तब युवतिन
ताके ॥१६॥ एकहि बेर सबै जुरि धाई । पौरि तोरि रावर में आई ॥१७॥

मोहन गहत-गहत छुटि भागे। पीतांबर तजि तन भये नागे ॥ १८ ॥ दौरि
अटा चढ़ि दए हैं दिखाई। उतते स्याम घटा जानो आई ॥ १९ ॥ सुंदर
स्याम मनिगन तन राजे ! गिरा गंभीर मेघ ज्यों गाजे ॥ २० ॥ टेरि-टेरि
पीतांबर मांगे। गोपी कहत आय लेहु आगे ॥ २१ ॥ पीतांबर राधिका
उढायो। हरिजू निरखि परम सुख पायो ॥ २२ ॥ पीतांबर तहां सोभा
पाई। घन तजि दामिनि खेलन आई ॥ २३ ॥ तबही अरगजा स्याम
मँगायो। अपने कर वर घोर बनायो ॥ २४ ॥ ऊंचे चढि घन ज्यों बरखायो।
धारा धरि जानो बहे आयो ॥२५॥ तब इन जसुमति ठाडी पाई।
सोंधे गागर सिर ते नाई ॥ २६ ॥ उतते निरखि रोहिनी आई। बीच
छांडि ह्वै महरि बचाई ॥ २७ ॥ आँगन भीर भई अति भारी। जसुमति
देत दिवावत गारी ॥ २८ ॥ गोपिन नंद दुरे गहि काढे। कंचन गिरि से
आगे ठाढे ॥ २९ ॥ जनो युवती एरावत लाई। पूजत हस्ति गौर की
नाई ॥ ३० ॥ नंद जसोदा गोरा गोरी। छिरकत चंदन वंदन रोरी ॥३१॥
पूजि-पूजि वर मांगत मोहन। बिन पाये छांडत नाहिं गोहन ॥ ३२ ॥ एक
कहै मोहन हि बताओ। तो तुम हम ते छूटन पाओ ॥ ३३ ॥ एक
सिखावत एक बतावत। तारी दै-दै एक नचावत ॥ ३४ ॥ एक गहे इक
फगुवा मांगे। एक नैन काजर दै भागे ॥ ३५ ॥ वसन आभूखन नंद
मंगाये। दये बसन जेसे जाहि भाये ॥ ३६ ॥ देत असीस सकल ब्रजबाला।
युग-युग राज करो नंदलाला ॥ ३७ ॥ मदनमोहन पिय के गुन गावे।
'सूरदास' चरनन रज पावे ॥३८॥ ❀६६२❀ सेन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ लिये
सकल सौंजि होरी की नवलकिसोरी जू नैनन में। स्वेत अबीर स्यामता
गरसुत नेह फुलेल सन्यों नैनन में ॥ १ ॥ कुटिल कटाच्छ छूटत पिचकाई
प्रीति रंग भरि-भरि नैनन में। लाल गुलाल अरुन अरुनाई मिलवत
ललित सखी नैनन में ॥ २ ॥ विहसन फगुवा देत लेत हैं सहचरी हूं न

लखें नैनन में । रसभीजे रीझे पिय प्यारी 'जगन्नाथ' पूरन नैनन में ॥ ३ ॥ ❀६६३ ❀फागुन सुदी १ ❀ मंगला दर्शन ❀राग रामकली❀चलो सखी मिल देखन जैये नंद के लाल मचाई होरी । अबीर गुलाल कुमकुमा केसर पिचकारिन भरि भरि लै दौरी ॥१॥ एक जु पिय की चोरा चोरी हमें लखे नहीं कोरी । 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु कों भरि हैं राधा गोरी ॥ २ ॥ ❀६६४❀ ❀ सिगार समय ❀ राग बिलावल ❀ परिवा प्रथम कुंवर अति विहरत गोपिन संगा । मुरज घोर बहु बाजे और आनक मुखचंगा ॥१॥ ढोल भेरी ढोलक छबि बेनु मृदंग उपंगा । रुंज मुरज और दुंदुभी झालरी तरुल तरंगा ॥२॥ विविध पखावज आवज झांझ बीना डफ जोरी । बिच-बिच गोमुख सुनियत बिच मुरली की घोरी ॥ ३ ॥ ग्वाल परस्पर राजे मनिमय जेरी हाथा । बूका कनक पिचकाई भरि-भरि छिरकत गाता ॥ ४ ॥ चलो सखी देखन जैये विहरत सिंहदुवारा । सुनि मन हरखि सकल तिय लागी करन सिंगारा ॥ ५ ॥ नील वसन तन सारी लंहगा लाल सुरंगा । कंचुकी ललित कुचन पर मानो लजित अनंगा ॥ ६ ॥ सोंधे सीस सरस करि बेनी सरस संभारी । मानो कनक खंभ लगि झूमत पन्नग नारी ॥ ७ ॥ सीसफूल रचि तिलक भृकुटि बिच चंदन रोप्यो । मनो सरासन साजि बान मन्मथ मन कोप्यो ॥ ८ ॥ वंदन मांगन मधि अति राजत कच सुढारे । मानो सेस सीस पर ठाडो अक्षत डारे ॥ ९ ॥ नैन कुरंग श्रवन युग चारु चक्र बिराजे । मानहु ससि अवनी पर देखियत रवि रथ साजे ॥ १० ॥नखसिख लों युवती बनि गई सब सिंह दुवारा । हमारो फगुवा देहुमोहन नंदकुमारा ॥११॥ काहे मोहनराय भाजो काहे ओले लेहो । कुमुदबंधु ज्यों निकसत नेक दिखाई देहो ॥१२॥ फगुवा को मिस झूटो हरि दरसन की आसा । देखन कों जिय तरसत लोचन मरत पियासा ॥ १३ ॥ सुनि मन हरखि यसोमति उनकों आसन दीनों । कुमकुम जलसों घोरि सबन मुख मंजन कीनो ॥ १४ ॥ बरन-बरन पट दिये

गोदन भरी जु मिठाई । यह विधि नंदघरनि ब्रज की तरुनी पहिराई ॥१५॥ गान करत मन हरत मुदित मन देत असीसा । तुमरो कुंवर यसोमति जीवो कोटि बरीसा ॥१६॥ जिन देखे नैन सिराय अघात न पीवत प्यासा । तिनके चरनकमल रज पावे 'माधोदासा' ॥१७॥ ❀६६५❀ सिंगार दर्शन ❀ ❀ राग टोडी ❀ मन मेरे की इच्छा पूजी आयो मास फागुन को नीको । लाज सकुच तजि सास ननद की दौरी गहूँ करसों कर पिय को ॥ १ ॥ अब मेरो कोऊ कहा करेगो यह तो औसर है होरी को । नैनभरी मूरति 'ब्रजपति'की देखत दुःख मिटेगो जी को ॥२॥ ❀ ६६६ ❀ राजभोग आये ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ चलरी सिंहपौरि चाचर मची जहाँ खेलत ढोटा दोय । जो न पत्याय सुने किन श्रवनन हो हो हो हो होय ॥ १ ॥ अपने नैन निरखि हौं आई कहत न बात बनाय । तोसों मोहन सेना देखि के मन धीरज धरयो न जाय ॥ २ ॥ एकन किये बनाय तिलोना एक अरगजा भीने । एकन करी खोर चंदन की चोवा बेंदी दीने ॥ ३ ॥ तहाँ बाजत बीन रवाब किन्नरी अमृतमंडली जंत्र । अधरसुधायुत बाँसुरी हरि करत मोहिनी मंत्र ॥ ४ ॥ सुरमंडल पिनाक महुवर जलतरङ्ग मन मोहे । मदन भेरी रायगिडगिडी सहनाई सुर सोहे ॥ ५ ॥ कठतार कर तारी दै दै बजत चुटकिन चुटकारे । झांझ झनक खंजरी बजे भई झालर की झनकारे ॥ ६ ॥ एक शृङ्ग सङ्ख धुनि पूरि रही अधर धरे मुखचंग । कर ले डफ हि बजावहीं एक डिम डिम ढोल मृदङ्ग ॥ ७ ॥ तहाँ घुरे निसान नगारे की धुनि रह्यो घोख सब गाज । दुंदुभी देव बजावहीं सब व्योम विमानन साज ॥ ८ ॥ तहाँ बहु विधि भरे रंग सोंधे केसर कुमकुमनीर । मृगमद मेद लयो बेला भरि अरगजा अर्क उसीर ॥ ९ ॥ रतन जटित पिचकारिन भरि-भरि छिरकत सुंदरस्याम । ग्वालिन सुरंग अबीर गुलाल मुठी भरि-भरि डारत बलराम ॥१०॥ एक बूका बंदन कुमकुम जल घोरि कलस भरि लावे । अचका आय पीठ

पाछे ते मोहन के सिर नावे ।। ११ ।। फिर सुमन सुगंध फुलेल अरगजा लयो करन लपटाय । नेक मोहन सों बतराय भजी बलदाऊ बदन लगाय ।। १२ ।। सब होरी के रङ्ग राते माते डोलत करत कलोले । रङ्ग रंगीली गारी दै दै हो हो होरी बोलें ।।१३।। सुख समूह कछु कहत न आवे निरखि नैन सचुपैये । पूजे मन अभिलास तबै 'ब्रजपति' सों खेलन जैये ।। १४ ।। ❁ ६६७ ❁ भोंग सरे ❁ राग सारंग ❁ अरी सुन डफ बाजे साजे गाजे मानो होरी आई रंगीली । मृगमद अरगजा कुमकुम छिरकत पिय कों छैलछबीली ।।१।। गावत गहत पीतपट झटकत पगन परत कोऊ ढीली । अबीर गुलाल ताकि अधिकेरी केसू कुसुम मिलेली ।। २ ।। गजरा पहिर नैन काजर दै मनो चहि रही है हठीली । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलालसों अपने रङ्ग रंगीली ।। ३ ।। ❁ ६६८ ❁ राजभोग दर्शन ❁ राग बिलावल ❁ गोपी हो नंदराय घर मांगन फगुवा आई । प्रमुदित करहि कुलाहल गावत गारी सुहाई ।। १ ।। अबला एक अगमनी आगे दई हैं पठाई । जसुमति अति आदर सों भीतर भवन बुलाई ।। २ ।। तिनमें मुख्य राधिका लागत परम सुहाई । खेलो हंसो निसंक संक मानो जिनि काई ।। ३ ।। बहुमोली मनिमाला सबन देहुँ पहिराई । मनिमाला लैं कहा करैं मोहन देहु दिखाई । बिनु देखे सुन्दर मुख नाहिन परत रहाई । मात पिता पति सुत गृह लागत री विष माई ।। ५ ।। सुनिके प्रेम वचन दामोदर दई है दिखाई । घर में ते घनस्याम भुजा भरि भामिनी लाई ।। ६ ।। नखसिख सुंदर सीमा रूप लावनि अधिकाई । रही ब्रजवधू निहारि रंक मानो निधि पाई ।। ७ ।। अरगजा चंदन वंदन चहुँदिस ते ले धाई । भरति भांवते लाले करन कनक पिचकाई ।। ८ ।। दरसपरस पिय अतिसय सुंदरी सब लपटाई । कुच भुज बीच कीच मची अति श्रम की झपटाई ।। ९ ।। मंडित करहिं कपोल एक काजर लैं आई । आलिंगन चुंबन रस नहिं सुरझत मुरझाई ।। १० ।। अंचलसों पट जोरे रीझि सकुच

सिर नाई । दंपती सौभग संपति कोऊ पावत न अघाई ॥ ११ ॥ यह लीला अति ललित सो तो नंदरानी भाई । हरखित उदित मुदित सबहिन की करत बडाई ॥१२॥ पट दुकूल आभूषन चोली दिव्य मंगाई । जसुमति अति प्रफुलित मन सुंदरी सब पहिराई ॥१३॥ यह मेरे आँगन गृह आओ री नित माई । नैन श्रवन सुख भयो लालजू की कीरति गाई॥१४॥ निकसी देत असीस जियो तेरो मोहनराई । यह ब्रज 'माधोदास' रहोनित नंद दुहाई ॥१५॥

❀६६९❀ आरती समय ❀ राग धनाश्री ❀ होरी के रंगीले लाल गिरिधर रंग मचायो । केसर सुरंग गुलाल अरगजा मदन बसंत जनायो ॥ १ ॥ ताल मृदंग झांझ डफ बीना होरी राग जगायो । सुनि निकसी गृह गृह ते सुंदरी हाव भाव फल पायो ॥ २ ॥ आवत भावत गारिन गावत रसभरी लाल खिलायो । 'श्रीविट्ठल' गिरिधर युवतिन सों होरी त्यौहार मनायो ॥ ३ ॥

❀६७०❀ भोग के दर्शन ❀ राग गोरी ❀ परवा प्रथम कुंवर देखन चली ब्रजनारी । अंग-अंग छबि निरखत लियो लाल मनुहारी ॥ १ ॥ दूज दाम कुसुमन की पहिरे श्री गोपीनाथा । रचि पचि गूंथि संवारी श्रीराधा जू अपने हाथा ॥ २ ॥ तीज तरुनी तन तरलित उर गजमोतिन हार । कुच पर कच लर विलुलित पिय संग करत विहार ॥ ३ ॥ चौथ चतुर चित चंदन चर्चित साँवल अंग । विविध भाँति रुचि पहिरे नाना वसन सुरंग ॥ ॥ ४ ॥ पाँचे प्रमदा प्रमुदित सब मिलि गावें गीत । हाव भाव करि रिझवत रसिक श्रादामा मीत ॥ ५ ॥ छठ कों छैल छबीलो छिरकत छींट अनूप । सोभा बरनी न जाय जैं-जैं गोकुल के भूप ॥६॥ सातें सकल सखा सब घर-घर देत ब गारि । सुनत कुंवर कोलाहल निकसी घोखकुमारि॥७॥ आठे अति आतुर अबलनि लीने पिय घेर । मुरली पीतपट झटकत हँसत वदन तनु हेर ॥ ८ ॥ नौमी नवल नागरी कुमकुम जल सों घोर । पिय पिचकाइन छिरकत तकि-तकि नवलकिसोर ॥९॥ दसमी दसोंदिस दिखियत

अति प्रफुलित वनराज । मदन वसंत मिल खेले अलि पिक सेना साज ॥ ॥ १० ॥ एकादसी एक ओर प्यारी राधा संग सब नारि । उत की ओर बल मोहन बालक यूथ मंझारि ॥ ११ ॥ द्वादसी दुहुं दिस मच्यो खेल राय दरबार । भेरी दमामा धौंसा कोऊ काहू न संभार ॥ १२ ॥ तेरस तरुनीगन पर बरखत सुरंग अबीर । ये इतते वे उतते भई परस्पर भीर ॥१३॥ चौदस चहूँ दिसा ते बरखत परिमल मोद । गिनत न काहू जग में ब्रजजन मनसि प्रमोद ॥ १४ ॥ पून्यो परिपूरन ससि आनंदे सब लोग । घोखराय ब्रज छायो करत सकल सुख भोग ॥१५॥ यह विधि होरी खेलत बरखत सकल आनंद । 'गोबिंद' बलि-बलि जाय जै-जै गोकुल के चंद ॥१६॥ ❀६७१❀

❀ संध्या समय ❀ राग काफी ❀ आयो फागुन मास कहैं सब होरी होरा । एक ओर वृषभान नंदिनी एक ओर हरि हलधर जोरा ॥ १ ॥ ब्रजनारी गारी देवे कों भजि-भजि आवें तजि-तजि कोरा । जान न देहों पकरो री स्याम कों सबै धरत जोबन को तोरा ॥ २ ॥ रहि न सकत अपने घर कोऊ मानो काम को फिरयो ढिंढोरा । 'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु सों होत है झकझोरी झकझोरा ॥ ३ ॥ ❀ ६७२ ❀

सेनभोग आये ❀ राग गोरी ❀ खेलत हैं ब्रजराज कुंवर वर । हो-हो बोलत डोलत घर-घर ॥ १ ॥ बालक संग सकल गोपिन के । ठाड़े भये आय बनि-बनि के ॥ २ ॥ परवा कों परिवार बुलावत । अंबर देत जाहि जो भावत ॥३॥ दूज भये दूजे पिचकारी । कहत लेहु अपनी रुचिकारी ॥ ४ ॥ तीज सतीजन लाज हि छांडत । केसर ले सुंदर मुख मांडत ॥ ५ ॥ चौथि तरुनि रस चौथि रहीं सब । अंग अंग परम जुराय भये तब ॥ ६ ॥ पांचे हरि पांचे सुर गावत । सरस तान मुरली जो बजावत ॥७॥ छठि कों छटि निकसीं व्रजबाला । छल बल सों पकरे नंदलाला ॥८॥ सातें सातें सुर सब बाजत । बाजे विविध भाँति के राजत ॥ ९ ॥ आठें आठें आय गई मग । घेरि

लिये बलराम परे पग ॥ १० ॥ नौमी नौमी ते पहिचानत । कोरी भरि प्यारी पे आनत ॥ ११ ॥ दसमी दस मीठी दैं गारी । गावत श्रवन सुनत सुखकारी ॥ १२ ॥ एकादसी एकादसी दौरी । जाय भरे सुंदर ले रोरी ॥ ॥ १३ ॥ द्वादसीद्वादसी काजर लीयो । चोरी करि प्यारी के दीयो ॥१४॥ तेरस ते रस यामिनी फूले । खेल मच्यो तिनके अनुकूले ॥ १५ ॥ चौदस चौदिस वसन मंगावत । विविधभांति फगुवाहि चुकावत ॥ १६ ॥ पून्यों कों पून्यो सबको मन । बरखत देखि सुमनकों सुरगन ॥१७॥ न्हान चले जमना गिरिधारी । तन मन धन कीनो बलिहारी ॥ १८ ॥यह सुख तीनलोक कों भावे । 'गोपीदास' विमल जस गावे ॥ १९ ॥ ❀ ६७३ ❀ सेन दर्शन ❀ ❀ राग बिहाग ❀ फागुनमास सुहायो रसिया होरी खेलन आयो । अबीर गुलाल भरे फेंटन में दौरि बदन लपटायो ॥ १ ॥ गारिन गावे भाव बतावे बातन ही भरमायो । 'कृष्णजीवनलछिराम'के प्रभुकों नाना भांति नचायो ॥ ॥ २ ॥ ❀ ६७४ ❀

कुंज एकादशी (फागुन सुदी ११)

❀ सिंगार दर्शन ❀राग काफी❀ मिलि खेले फाग बन मे श्री वल्लभबाला । संग खरे रस रंग भरे नवरङ्ग त्रिभङ्गी लाला ॥ १ ॥ बाजत बांसुरी चंग उपङ्ग पखावज आवज ताला । गावत गारी दैं दैं व्रजनारी मनोहर गीत रसाला ॥ २ ॥ कंचन बेलि करैं जानो केलि परे बिच स्याम तमाला । धाई धरे हँसि अंक भरे छूटे केस टूटी माला ॥३॥ सींचत अंगन रङ्ग भरे बाढ्यो प्रेमप्रवाह रसाला । मेन सेन खुररेनु उडी नभ छायो अबीर गुलाला ॥ ४ ॥ देखि थकी भंवरी संवरी मृगी मोरी चकोरिन जाला । राधा कृष्ण विलास सरोज 'गदाधर' मन्न मराला ॥५॥ ❀ ६७५ ❀ राजभोग आये ❀राग सारंग❀ प्यारी तैं मोहन को मन हरयो तो बिन रह्यो न जाय प्यारी ॥ ध्रु० ॥ कुंज महल बैठे पिया नव पल्लव तल्प संवार । बीच जुही बिच सेवती बिच-

रचि नवल निवार ॥ १ ॥ तुव पथ बैठि निहार हीं कुंजकुटी के द्वार । लोचन भरिभरि लेत है सुंदर व्रजराज कुमार ॥२॥ अपने कर नव गूंथहीं विविध कुसम की चोली । तेरे उर पहिरावहीं चलो बेग उठि बोली ॥३॥ कबहुंक नैनन मूंदि के करत वदन तुव ध्यान । तन पुलकित भुज भेटहीं करत अधर रस पान ॥ ४ ॥ चंद देखि आनंद हीं तुव मुख की अनुहार । यह छबि वाहि न पूज ही निरखि कलंक बिचार ॥ ५ ॥ यदपि सकल ब्रजसुंदरी कबहू न मन अरुझाय । चातक जलधर बूंद ज्यों भुवजल तृसा न जाय ॥ ॥ ६ ॥ पिय को प्रेम सखी मुख सुन्यो तबहि चली उठि धाय । 'गोविंद' प्रभु पिय सों मिली रहसि कंठ लपटाय ॥ ७ ॥ ❀६७६❀राग सारंग❀ अहो पिय लाल लडैती को झूमका । सरस सुर गावत मिलि व्रजबाल । अहो कल कोकिल कंठ रसाल । लाल बलि झूमका हो ॥ध्रु०॥ नव जोबनी सरदससि बदनी युवती यूथ जुरि आई । नवसत साज सिंगार सुभग तन करन कनक पिचकाई ॥ एकन सुवन यूथ नवलासी दामिनी सी दरसाई । एक सुगंध सम्हार अरगजा भरन नवल कों आई ॥ १ ॥ पहिरे वसन विविध रंगरङ्गन अङ्ग महा रस भीनी । अतरोटा अंगिया अमोल तनसुत सारी अति झीनी ॥ गजगति मंद मराल चाल झलकत किंकिनी कटि छीनी । चौकी चमक उरोज युगलवर आन अधिक छबि दीनी ॥ २ ॥ मृगमद आड ललाट श्रवन ताटंक तरनि द्युति आरी । खंजन मान हरिन अँखियाँ अञ्जन रञ्जित अनियारी ॥ यह वानिक बनि सङ्ग सखी लीनी वृषभान दुलारी । एकटक दृष्टि चकोर चन्द ज्यों चितये लाल बिहारी ॥ ३ ॥ रुरकत हार सुढार जलजमनि पोत पुंज अति सोहे । कंठसरी दुलरी दमकनि चोकी चमकन मन मोहे ॥ बेसर थरहरात गजमोती रति भूली गति जोहे । सीसफूल श्रीमंतजटित नग बरन करन कवि कोहे ॥ ४ ॥ नवल निकुंज महल रसपुंज भरे प्यारी पिय खेलें । केसर और गुलाल कुसुम जल घोर परस्पर मेलें । मधुकरयूथ निकट

आवत झुकि अति सुगंध की रेलें। प्रीतम श्रमित जानि प्यारी तब लाल भुजा भरि झेलें ॥ ५ ॥ बहु विधि भोगविलास रास रस रसिक बिहारिन रानी। नृपति निकुंज बिहारी संग सुरत रति मानी। युगलकिसोर भोर नहिं जानत यह सुख रेन बिहानी। प्रीतम प्रानपिया दोऊ बिलसत 'ललितादिक' गुन गानी ॥ ६ ॥

❀ ६७७ ❀ राग सारंग ❀

आज हरि कुंजन खेलत होरी। गृह-गृह ते आई युवतीजन नवल विहँसि बनी गोरी ॥ १ ॥ अपने संग के ब्रज के बालक टोलन ले बनि आये। कोऊ द्रुम डारन गहि झूमत कोऊ परसत धाये ॥ बन ही बन उद्यम कों मानों बनचर जूथनि छाये। कोऊ गावत होरी गीतन बाजे ले मनभाये ॥ २ ॥ ताल मृदंग उपंग बाँसुरी बाजत महुवरि भारी। डफ दुंदुभी गजक सहनाई और लखियत करतारी ॥ कबहुंक भाजत प्रमदागन पर बरखत मुख ते गारी। भले-भले कहि सखियन तिन कों हलधर गिरवर धारी ॥ ३ ॥ चोवा मृगमद केसू घोरत ले सीसन पर नावे। एक रहत संजम करि झूठो चलि-चलि ताहि मनावे ॥ नाचत उन्मद भये परस्पर हस्तक भेद बनावे। फगुवा के मिस कर गहि रहिये सेनन आँख भरावे ॥ ४ ॥ कबहुंक ले निज कंठ बीच की बिविध कुसुम की माला। पहिरावत उरमध्य सबन कों देखत दृष्टि रसाला ॥ कोऊ मानत अति उर अंतर महामोद तिहि काला। निरखि-निरखि हँसि-हँसि किलकत है आगे दे नंदलाला ॥ ॥ ५ ॥ बाढ्यो मन्मथ तन सुधि बिसरी डोलत फूले फूले। कान न काहू की मन आनत डोलत भूले भूले ॥ अबीर गुलाल उडावत कोऊ ठाड़े ह्वै और भूले। कोऊ मदगज चाल चलत हैं कालिंदी के कूले ॥ ६ ॥ कबहुंक एक तकत बैठत मिलि चहुँदिस अबलन लीने। करत सिंगार बसन भूषन सजि पिय प्यारी रस भीने ॥ नाना भांति कपोलन चित्रित नैनन अंजन दीने। रीझि-रीझि मुसिकाय दंपती कबहुंक होत अधीने ॥७॥ विवस भये

इतते वे उततें रतनखचित पिचकाई। छोरत कुमकुम रस सों भरि भरि मानो बरखा आई ॥ सोभा बढ़ी अपार दुहूंदिस कहा कहूँ अधिकाई। मदनमोहन पिय की छबि ऊपर 'ब्रजजन' बलि-बलि जाई ॥ ८ ॥ यह लीला गोपीपति रति की बानी जो मनमानी। अति अद्भुत अनंग कौतुक की गाई जो जिय जानी ॥ 'श्रीमद्वल्लभ' पद पंकज करुना बल कर ठानी। निकट विकट लखि मकरध्वज की प्रकटित करी निसानी ॥९॥ ❀ ६७८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग देवगंधार ❀ मदनगोपाल झूलत डोल। वाम भाग राधिका बिराजत पहिरे नील निचोल ॥ १ ॥ गोरी राग अलापत गावत कहति झांमते बोल। नंदनंदन को भलो मनावत जासों प्रीति अतोल ॥ २ ॥ नीको वेष बन्यो मनमोहन आज लई हम मोल। बलिहारी मनमोहन मूरति जगत देहु सब ओल ॥ ३ ॥ अद्भुत रंग परस्पर बाढ्यो आनंद हृदय कलोल। 'परमानंददास' तिहि औसर उडत होलिका झोल ॥ ४ ॥ ❀ ६७९ ❀ ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत दोऊ नवलकिसोर। रजनी जनित रंग रस सूचित अंग अंग उठि भोर ॥ १ ॥ अति अनुराग भरे मिलि गावत सुर मंडल कल घोर। बीच-बीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नैन की कोर ॥२॥ अबला अति सुकुमार डरपति कर हिंडोल झकोर। पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत दे नव उरज अंकोर ॥ ३ ॥ उरझी विमल माल कंकन सों कुंडल सों कचडोर। वे पथ युत क्यों बने विवेचित आनंद बढ्यो न थोर ॥ ४ ॥ निरखि निरखि फूलत ललितादिक बिंब मुखचंद चकोर। दे असीस 'हरिवंस' प्रसंसित कर अंचल की छोर ॥ ५ ॥ ❀ ६८० ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत हंससुता के कूल। सघन निकुञ्ज पुञ्ज मधुपन के अद्भुत फूले फूल ॥ १ ॥ ललित लता लिपटी ललितादिक बरसत आनंद मूल। घन दामिनी ज्यों राजत मोहन निरखि गई मति भूल ॥ २ ॥ रमा आदि सुर नारी सहचरी नाहिं कोई समतूल। 'विष्णुदास' गिरिधरन छबीलो सर्वसु

तहाँ अनुकूल ॥ ३ ॥ ❀ ६८१ ❀ राग देवगंधार ❀ अद्भुत डोल बनी मन मोहन अद्भुत डोल बनी । तुम झूलो हों हरखि झुलाऊं वृन्दावनचंद धनी ॥ ॥ १ ॥ परम विचित्र रच्यो विस्वकर्मा हीरा लाल मनी । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधरनलाल छबि कापे जाति गनी ॥ २ ॥ ❀६८२❀ राग पंचम ❀ आज ललना लाल फाग खेलत बने मिलि झूलत सखी नवरंग डोल । झोटका देत ब्रजनारी आनंद भरी छिरकत कुमकुमादि सौरभ अमोल ॥ १ ॥ दिव्य आभरन चीर चारु अमोल छबि अंगराग राजत चित्र कुसुम कलोल । सुरत तांडव लास्य भुव नृत्य मदन गन उपहसत लोचन विलोल ॥ २ ॥ वेनु वीना मृदंग झाँझ डफ किन्नरी तान बंधान नव नागरी ढोल । ततथेई थुंगना नचत सब्दावली होरी हो होरी हो होरी हो बोल ॥ ३ ॥ रसिकवर गिरिधरन रसिकनी राधिका रसमसे चूमत रसमय कपोल । बलि 'कृष्नदास' वैभव निरखि मधुमास चल मलय पवन रससिंधु झकझोल ॥४॥ ❀६८३❀ ❀ राग जेतश्री ❀ सोभा सकल सिरोमनी हो दंपती झूले डोल । मोहनराय झूलहीं । कनक खंभ मरकत मनी हो हीरा खचित अमोल ॥ मोहनराय झूलहीं ॥ १ ॥ चोकी पन्ना पाँच पिरोजा रची रतनन की पांत । मुक्तामाल सुहावनी हो कहा बरनों बहुभाँत ॥ २ ॥ झूले दुलहिनी राधिका हो दूलहे नंदकुमार । रति रस केलि बिराजहीं हो बाढ्यो रंग अपार ॥ ३ ॥ ताल पखावज आवज हो झाँझ झनक सहनाई । वेनु रवाब किन्नरी हो मधि मुरली की भाई ॥ ४ ॥ सखा मंडली सोभित हो गावत फाग धमार । इत सोभित ब्रजसुंदरी हो गावत मीठी गार ॥ ४ ॥ झकझोरे पिचका चले हो कहा बरनों यह बान । चोवा चंदन छिरकहीं हो गोपी गोप सुजान ॥ ॥ ६ ॥ जस कर्दम उर मंडिता हो उड़त गुलाल अबीर । करत विनोद कौतूहला हो राजत अतिसय भीर ॥ ७ ॥ खेलत वल्लव वल्लवी हो प्रतिछिन नव अनुराग । कमलखंड केसर मधुपगन गूंजत पीत पराग ॥८॥ सिथिल

वसन कटिमेखला हो रही अलक लर छूट । एक-एक मिलि धावहीं हो गई
मोतिन लर टूट ॥ ६ ॥ चिरजीयो सुंदर वर प्यारो सकल घोख सिरताज ।
नंद जसोदा को सुकृत फल प्रगट भयो है आज ॥ १० ॥ सुर कुसुमन
बरखा करैं हो लीला देखैं आय । 'आसकरन' प्रभु मोहन को यस रह्यो
सकल जग छाय ॥ ११ ॥ ❀ ६८४ ❀ राग धनाश्री ❀ झूलत युग कमनीय
किसोर सखी चहुंओर झुलावत डोल । ऊँची ध्वनि सुनि चकृत होत मन
सब मिलि गावत राग हिंडोल ॥ १ ॥ एक वेष एक वयस एक सम नव
तरुनी हरिनी दृग लोल । भांति-भांति कंचुकी कसे तन बरन-बरन पहिरे
बलि चोल ॥ २ ॥ बन उपवन द्रुम बेलि प्रफुल्लित अंबमौर पिक निकर
कलोल । तैसेई ही स्वर गावत ब्रजवनिता झूमक देत लेत मन मोल ॥३॥
सकल सुगंध समार अरगजा आई अपने-अपने टोल । एक तकि पिचकाइन
छिरकत एक भरे भरि कनक कचोल ॥ ४ ॥ कवहुं स्याम पिय उतरि डोल
ते कौतुक हेत देत झकझोल । तब प्रिया डर भरि स्वास कंप तन विरमि-
विरमि बोलत मृदु बोल ॥ ५ ॥ गिरत तरोना गह्यो स्याम कर श्रवन देन
मिस छुवत कपोल । तब पिय ईषद् मुसकि मंद हँसि वक्र चिते करि भौंह
सलोल ॥६॥ भेरी झाँझ दुंदुभी पखावज अरु डफ आवज बाजत ढोल ।
आये सकल सखा समूह जुरि हो हो होरी बोलत बोल ॥७॥ रतन जटित
आभूषन दीने और दीने मुक्ताहार अमोल । 'सूरदास' मदनमोहन प्यारे
फगुवा दे राख्यो मन ओल ॥ ८ ॥ ❀ ६८५ ❀ रंग उडे तब ❀ राग सारङ्ग ❀
डोल झूलत हैं पिय प्यारी । नंदनंदन वृषभान दुलारी ॥१॥ कमलनैन पर
केसर डारी । अबीर गुलाल करी अँधियारी ॥ २ ॥ झूले स्याम झुलावत
नारी । हँसि-हँसि देत परस्पर गारी ॥ ३ ॥ गावत गीत दे दे कर तारी ।
बाजत बेनु परम रुचिकारी ॥ ४ ॥ भीजि लगी तन तनसुख सारी । खेल
मच्यो वृंदावन भारी ॥ ५ ॥ रसिक सिरोमनि कुंजबिहारी । 'कृष्नदास'

प्रभु गिरिवरधारी ॥ ६ ॥ ❀६८६❀ राग सारंग ❀ डोल झुलावत लाल बिहारी नाम ले ले बोले लालन प्यारी है दुलहा दुलहिनी दुलारी सुंदरवर सुकुमारी । नखसिख सुंदर सिंगारी केसू कुसुम सुहस्त समारी स्याम कंचुकी सुरंग सारी चाल चले छबि न्यारी ॥ १ ॥ बार-बार बदन निहारी अलक झलक झलमलारी रीझि-रीझि लाल ले बलिहारी पुलकित भरत अँकवारी । कोक-कला निपुन नारी कंठ सरस सुर भारी सुयस गावत लाल बिहारी बिहारिन की बलिहारी ॥ २ ॥ ❀ ६८७ ❀राग सारंग ❀ डोल झूलत हैं प्यारो लाल बिहारी बिहारिन पहोंप वृष्टि हो हो होति । सुरपुर पुरगंधर्व और पुर तिनकी नारी देखति वारति लर मोति ॥ ॥ १ ॥ घेरा करति परस्पर सब मिलि कहुँ देखी न युवती ऐसी जोति । 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सादा चूरी खुभी पोति ॥ २ ॥ ❀ ६८८ ❀ राग सारंग ❀ हरि को डोल देखि व्रजवासी फूले । गोपी झुलावे गोविंद झूले ॥ १ ॥ नंदचंद गोकुल में सोहें । मुरली मनोहर मन्मथ मोहें ॥ २ ॥ कमलनैन कों लाड लड़ावें । प्रमुदित गीत मनोहर गावें ॥३॥ रसिकसिरोमनि आनन्दसागर । 'रामदास' प्रभु मोहन नागर ॥४॥❀६८९❀ ❀ संध्या आरती पीछे जगमोहन में बैठ के ❀ राग कान्हरा ❀ कुंज महल में ललना रसभरे खेलत हैं पिय प्यारी । तेसोई तरनितनया तीर तेसोई सीतल सुगंध मंद बहत पवन तेसीय सघन फूली जूही निवारी ॥ १ ॥ प्रफुल्लित वनराजीव तेसेई अलि गूंज श्रवनन कों अति सुखकारी । 'गोविंद' बलि-बलि जोरी सदाई बिराजो गावत तान तरंग सुघर भारी ॥ २ ॥ ❀ ६९०.❀ ❀ सेन भोग आये ❀ ओपटा ❀ राग गोरी ❀ नवल कन्हाई हो प्यारे । ऐसो झगरो निवार । दान काहे को हो लागे । चले जाहु अपने ही मग ॥ध्रु०॥ आवत जात सदा रही कबहू सुन्यो नहिं कान । अब कछु नई ये चलाई है दूध दही को दान॥१॥ सदा-सदा हम दान लियो सुनि हो नवलकुमारि । और

गेल ह्वै तुम गईं दान हमारो मारि ॥२॥ ठाले ठूले फिरत हौं चलो हमें घर काम। इनकी कछु न चलाये ग्वाली सुन्दरस्याम॥३॥स्याम सखन सों यों कह्यो घेरो सबन कों जाय। ढीठ बहुत ये ग्वालिनी मटुकी लेहु छिनाय ॥ ४ ॥ गोचारन मिस विपिन में लूटत हौ परनारि। कहैंगी जाय ब्रजराज सों ऐसो झगरो निवारि ॥ ५ ॥ मधुमङ्गल कह्यो कृष्णसों दान लेहु कछु छांड। इनसों दिन-दिन काम है मति ब लेहु कछु आड ॥ ६ ॥ साँची कहत कैं हँसत हो हम कों होत अबार। सब सखियन सेनाबेनी करि गहन देहो मोती हार ॥ ७ ॥ मदनमोहन पिय हरखियो लियो हस्त कर हार। अपने कंठ ले पहरियो गजमोतिन अतिचार ॥८॥ सब सखियन मिलि मतो मत्यो कीजे कहा उपाय। राधा गहन दीजिये और नहीं कछु दाय ॥ ९ ॥ ललिता विसाखा भाजियो राधा तजी है अकेलि। 'गोविंद' प्रभु नव कुंज में पिय प्यारी की केलि ॥ १० ॥ ❁ ६६१ ❁ राग गोरी ❁ मनमोहना रसमत्त पियारे छांड़ सकल कुल लाज। यस अपयस कोऊ कहो मोहि नांहि काहू सों काज ॥ १ ॥ खिरक दुहावन हौं गई मिले ब्रजराज किसोर। गहि बैयाँ मोहि लै चले आई तहाँ ते भोर ॥ २ ॥ कुंजमहल क्रीड़ा करी कुसुमन सेज बिछाय। सुरत सिथिल अति दंपती ते रहे हैं कंठ लपटाय ॥ ३ ॥ विविध कुसुममाला गुही सुन्दर करकमल संवार। प्यारी राधा कों दे घालियो पहिरे घोख मंझार ॥ ४ ॥ कुंजमहल बनिठनि चले प्यारी राधा कों दै सेन। चतुराई बरनी ना परे सकल रूप गुन एन ॥ ५ ॥ नंदराय के लाड़िले धेनु चरावन जाय। प्यारी राधा बिन ज्यों ना रहे छिन-छिन कल्प बिहाय ॥६॥ सब गोकुल के लाड़िले जसुमति प्रान अधार। राधा के तुम चाड़िले जय-जय नंदकुमार ॥ ७ ॥ मदनमोहन पिय बस किये अपने गुन रूप सुहाग। चिते परस्पर दंपती प्रतिछिन नव अनुराग ॥ ८ ॥ इत मनमोहन राजहीं हो सखा सकल लिये संग। उतते आई ब्रजवधू मस्त आपने रङ्ग ॥ ९ ॥

मोहन पकरे भेदसों दई परस्पर सेन। प्यारी कर काजर लियो आंजे पिय के नैन ॥१०॥ यह विधि होरी खेलहीं जातिबंधु संग लाय। 'गोविंद' बलि वंदन करे जै जैं गोकुल के राय ॥११॥ ❀ ६९२ ❀ सेन दर्शन ❀ राग हमीर कल्यान ❀ डोल झूलत हैं गिरिधरन झुलावत बाला। निरखि निरखि फूलत ललितादिक श्री राधावर नंदलाला ॥१॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनी उडत अबीर गुलाला। कमलनैन कों पान खवावत पहिरावत उर माला ॥ ॥२॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी कूजत बेनु रसाला। 'नंददास' युवती मिलि गावत रिझवत श्रीगोपाला ॥३॥ ❀ ६९३ ❀ राग हमीर कल्यान ❀ डोल चंदन को झूलत हलधर-वीर। श्रीवृंदावन में कालिंदी के तीर ॥१॥ गोपी रही अरगजा छिरकत उड़त गुलाल अबीर। सुर नर मुनि जन कौतुक भूले व्योम विमानन भीर ॥२॥ वामभाग राधिका बिराजत पहरे कसूंभी चीर। 'परमानंद' स्वामी संग झूलत बाढ्यो रंग सरीर ॥३॥ ❀६९४❀ ❀ राग हमीर कल्यान ❀ डोल झूलत है प्यारो लाल बिहारी बिहारिन अब एहो राग रमि रह्यो। काहू के हाथ अधोटी काहू के बीन काहू के मृदंग कोऊ गहे तार काहू के अरगजा हो छिरकत रंग रह्यो ॥१॥ डांडी वछदे खेल बढ्यो जु परस्पर नाहिं जानियत पग क्यों रह्यो। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी को खेल खेलियत काहू ना लह्यो ॥२॥ ❀६९५❀

आरती भये पीछे भीतर सूं गुलाल दै तब मुख पर लगाय के ये गाय के नाचनो—

सखि अपनो बलम मोय माँग्यो दे फागुन के दिन चार रहे। मेरे पिछवाड़े के बड़ो घटे बढ़े तो तू ले रे। हाथी ले या घोड़ा ले। अपनो बलम मोय माँग्यो दे। गहनो ले या कपड़ा ले ॥ अपनो बलम० ॥ पेड़ा ले या बरफी ले ॥ अपनो बलम० ॥ ❀ ६९६ ❀ फागुन सुदी १२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभासा ❀ लरकवा काल जायगी होरी। गोरी सी भोरी थोरे दिनन की सिर धर गागर फोरी, अरी मेरी छतियाँ मसकि मरोरी ॥१॥

हम जमना जल भरन जात ही मेरी बैयाँ पकरि झकझोरी । 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे प्रेमरंग में बोरी ॥२॥ ❀६९७❀ सिंगार समय ❀ राग विलावल ❀ बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई । कियो है जुहार नंदजू सों भीतर भवन बुलाई ॥१॥ एक नाचत एक गावत एक बजावत तारी । काहे मोहनराय दुरि रहे मैयाए दिवागत गारी ॥२॥ आदर देत ब्रजरानी अब निज भाग्य हमारे । प्रीतम सजन कुलबधू पाये दरस तिहारे ॥३॥ सुनि कुंवरी मेरी राधे अबही जिनि मुख मांडो । जेंवत स्याम सखन संग जिनि पिचकाई छांडो ॥४॥ केसर बहोत अरगजा कित मोहन पर डारो । सीत लगे कोमल तन तुमहीं चित्त बिचारो ॥५॥ अंचल ऊपर दै रही दोऊ मैया तृन तोरी । बरजति भरति कुमकुमा निर्भय नवलकिसोरी ॥६॥ कहत रोहिनी जसोदा ओली ओडति आगे । जाय भरो ब्रजराजे मोहन दीजे मांगे ॥७॥ मोहन मांगे पैये तो दिन दस हमहीं देहो । गोपकुंवर के पलटे जो चाहो सो लेहो ॥८॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा सुनत अचानक आये । कंचन माँट भरे दधि ले गोपिन सिर नाये ॥९॥ ग्वाल गुपाल सखा सब हँसत करत किलकारी । दूध लियो भीतर ते छिरकी सब ब्रजनारी ॥१०॥ जो सुख सोभा बाढ़ी कहत कहा कहि आवे । ललिता कुंवरि कुंवर को अंचल गहि गहि लावे ॥११॥ भये निरंतर अंतर तजि वल्लव ब्रजबाला । गिरि गिरि परत गलिन में हार तोरि मनिमाला ॥१२॥ प्रभु मुकुंद ब्रजवासी अटक कोनकी माने । कहत मैया 'माधो जन' चलो भरो वृषभाने॥ ॥१३॥ इतनो मांग्यो पाऊं देहु वृन्दावन वासा । कुंवर कुंवरि तहां विहरत चरनकमल की आसा ॥१४॥ ❀ ६९८ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग सुघराई ❀ फगुवाके मिस छल बल लाल कों रंगन रगमगो कीजे । यह औसर होरी को गोरी सुख ले सुख किन दीजे ॥१॥ करत संत को संकोच सकुच जिय इन सकुचन कहिधों कहा कीजे । घर कों छांडि धाय 'गिरिधर' पिय

को निधरक व्है रस पीजे॥२॥ ❀६९९❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ खेले चाचर नर नारि, माई होरी रंग सुहावनो । बाजत ताल मृदंग मुरज डफ बीना और सहनाई माई० ॥१॥ उत खिलवार रसिक गिरिधर पिय इत राधिका खिलार । उन संग ग्वालबाल सब राजत इन संग गोपकुमारि ॥ ॥२॥ उनन लई भरि फेंट गुलालन इनन लई पिचकारी । अति अनुराग भरे मिलि खेलत अंतर भाव उघारी ॥३॥ उत लै नाम पढ़त होले मुख इतहि देत ये गारी । एक जु युवती धाय गहि लाई भरि पिय कों अंकबारी ॥४॥ एकन लई झटकि कर मुरली एक लिये हार उतारी । एक मुख मांड आंज दोऊ नैना एक हंसत दै तारी ॥५॥ एक आलिंगन देत लेत एक रही जो वदन निहार । एक अधर रस पान करत एक सर्वस्व डारत वार ॥६॥ एक मगन रस भुज प्रीतम की लेत आपु उर धारी । धनि ब्रजयुवती भाग्यन पूरन यह रस विलसनहारी ॥७॥ मच रह्यो गहगड सिंहद्वार पै सकत न कछू समारी । भींजे खेलरेलपेलन में 'श्रीविट्ठल' गिरिधारी ॥८॥ ❀ ७०० ❀ राग सारंग ❀ होरी खेले नंदलाल । प्यारो नंदमहर की पौरि ठाडो संग लिये ब्रज-बाल ॥१॥ बेनु बजावे मधुरे गावे और उघटावे ताल । हरे-हरे युवतिन मे धसिके चुंबन दै भजे गाल ॥२॥ बदन उघारे बिंदुली निहारे तिलक बनावे भाल । कबहुक आलिंगन दे भाजे आय मिले ततकाल ॥३॥ कबहुक ढिंग व्है अचरा खेंचे छुवावे नीरज नाल । कबहुक आय बलैया लैलै पहिरावे वनमाल ॥४॥ कबहुक नाचे भाव दिखावे कबहू बजावे ताल । कबहू अबीर अरगजा लेके और उडावे गुलाल ॥५॥ कबहुक हाथाजोरी नाचे मंडल मधि प्रतिपाल । श्रीवल्लभपद-कमलकृपा ते गावे 'रसिक' रसाल॥६॥❀७०१❀ भोग संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ सब दिन तुम ब्रज में रहो हरि होरी है । कबहू न मथुरा जाओ अहो हरि होरी है । परव करो घर आपुने हरि होरी है। कुसल केलि निबाहो अहो

हरि होरी है ॥१॥ परवा पिय चलिये नहीं सब सुख को फल फाग । प्रगट करो अब आपनो अन्तर को अनुराग ॥२॥ मानों द्वैज दिन सोध के भूपति कीनो काम । ससि रेखा सिर तिलक दे सब कोउ करे प्रनाम ॥ ३ ॥ कनक सिंहासन बैठि के युवतिन के उर आन । अलक चमर अंचल ध्वजा घूंघट आतपत्रान ॥ ४ ॥ फागुन मदन महीपति इहि विधि करिहैं राज । पंद्रह तिथि भरि बरनहूँ सादर क्रिया समाज ॥ ५ ॥ तीज तिहूंपुर प्रगटियो अपनी आन नरेस । सुनि मग-मग डफ दुंदुभी सोई करिये सब देस ॥६॥ चौथ चहूँदिस चालिये यह अपनी इक रीति । मेरे गुन कहे निर्लज ह्वै छांडि सकुच कुलनीति ॥ ७ ॥ पांचे परमित परहरो चलहु सकल इक चाल । नारि पुरुष एकत्र करो वचन प्रीति प्रतिपाल ॥ ८ ॥ छठि छै राग छै रागिनी ताल तान बंधान । चटुल चरित्र रतिनाथ के सिखवो अति अभिधान ॥ ९ ॥ सातें सुनि सब सजि चले राजा की रुचि जान । करत क्रिया तेसी सबें आयुष माथे मान ॥ १० ॥ आठें डर उन मान के सबन मतो मत्यो एक । नृपजु कहे सोई कीजिये क्यों राखिये विवेक ॥ ११ ॥ नवमी नवसत साजिके कर सुगंध उपहार । मानों चले मिल मेर के मनसिज भवन जुहार ॥ १२ ॥ दसें दसो दिन सोंधि के बोले राजा राय । जग जीत्यो बल आपने ज्ञान वैराग्य छुड़ाय ॥१३॥ सुनि आई एकादसी बोले सब सिर नाँय । ढोल भेर डफ बाँसुरी पटह निसान बजाय ॥१४॥ देखि भले भट आपने द्वादसी घोस बिचार । काज करो रुचि आपने ह्वै निसंक नर नार ॥१५॥ रथ रावक पावक सजे खरन भये असवार । धूर धातु घट रंग भरे करन यंत्र हथियार ॥ १६ ॥ जहाँ तहाँ सेना चली मुक्त कच्छ सिर केस । आप-आप सूझे नहीं राजा रंक आवेस ॥१७॥ जहाँ सुनत तप संयमी धर्म धीर आचार । छिरके जाय निसंक ह्वै तोरे पकरे किवार ॥ १८ ॥ जे कबहू देखी नहीं कबहू सुनी नहिं कान । तिन कुल बधू नारीन के लागे पुरुष परान ॥१९॥

धाय धरे बल कुलबधू पर पुरुष नहीं पहिचान । मात-पिता पति बंधु की छूटि गई सब कान ॥ २० ॥ भस्म भरे अंजन करे छिरकत चंदन वारि । मर्यादा राखे नहीं कटिपट लेहिं उतारि ॥ २१ ॥ तेरस चौदस मास मे जग जीत्यो डर-डार । सठ पंडित वेस्या वधू सबे भये एक सार ॥ २२ ॥ पून्यो प्रगट प्रताप ते दुरे मिले पाँलाग । जहाँ तहाँ होरी लगी मानों मवासिन आग ॥ २३ ॥ सब नाचे गावे सबै सबहिं उड़ावे छार । साधु असाधु न पेखहीं वोले बचन बिकार ॥ २४ ॥ अति अनीत मति देख के परवा प्रगटी आन । विमल वसन ज्यों स्याम को मर्यादा की कान ॥ २५ ॥ आवत हीं बिनती करी उठ जोंरे हँसि हाथ । बरन धर्म सब राखिये कृपा करहु रति नाथ ॥ २६ ॥ आज्ञा दई रतिनाथ ने नृप समझो मन मांह । जाय धर्म आपुन चलो बसो हमारी बांह ॥ २७ ॥ 'सूर' कहाँ लगि बरनिये मनसिज के गुन ग्राम । सुनो स्याम यह मास में कियो जु कारन काम ॥२८॥ कान्ह कृपा करि घर रहे बरजे मथुरा जात । सरस रसिकमनि राधिका कही कृष्ण सों बात ॥ २९ ॥ ❀७०२❀

बगीचा (फागुन सुदी १३)

❀ सिंगार दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ हो हो हो कहि बोले, गूजरि जोबन मदमाती । नैनन सैनन बेनन गारी बतियाँ गढ़ि-गढ़ि छोले ॥ १ ॥ यह लँगवार लाल गिरधर की गोहन लागी डोले । गठजोरे की गाँठ 'गोविंद' प्रभु भरुवा होय सो खोले ॥ २॥ ❀ ७०३ ❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ रहसि घर समधिन आई । ये सब जन के मन भाई ॥ ध्रु० ॥ समधिन सों समधोरो कीजे कीरति यह मन आई । नंदगाम ते महरि जसोदा समधिन न्योति बुलाई ॥ १ ॥ समधिन आई सब मन भाई निस समधी संग खेली । खोलि हुलास आय ढिंग बैठी मोहोर न कीसी थेली ॥ २ ॥ अति सुरंग सारी समधिन की लहँगा अति ही सुढार । फाटि रही सगरी समधिन

की चोली जोबन भार ॥ ३ ॥ समधिनकों हाथी को भावे आछो नीको पूरो । रंगरंगीलो ओ चटकीलो हाथ भरे को चूरो ॥ ४ ॥ समधिन तो दियोई चाहे खोलि नारे की गांठ । अपने समधी के नेगन कों हीरा पन्ना बांट ॥ ५ ॥ समधिन की है गली सांकरी समधी आवन जोग । आधो भीतर आधो बाहर बहोत बराती लोग ॥ ६ ॥ समधिन के मेल्योई चाहे गल फूलन को हार । काढन कहे समधिन समधी सों डोला के जु कहार ॥ ७ ॥ यह लीला सुर नर मुनि गाई देखत रहे लुभाय । चिरजीवो दुल्हे और दुलहिन 'सूरदास' बलि जाय ॥ ८ ॥ ❀७०४❀ भोग सरे ❀ राग सारङ्ग ❀ नंदकिसोर किसोरी की जोरी होहोहो कहि खेलत होरी । ग्वाल बजावत डफ मृदंग मोहन मुरली धुनि थोरी ॥ १ ॥ इत ब्रजनारी गारी देत परस्पर रङ्ग बढ्यो दुहूं ओरी । गिरिधर दौरि आय बदन लगावत चंदन वंदन रोरी ॥ २ ॥ बचन बांधिके छल करि लाई गांठ स्याम सों जोरी । तेल चढावत गीत व्याह के सबै सयानी भोरी ॥ ३ ॥ मोरमुकुट को मौर बनायो दई है चंद्रिका मौरी । दूल्हे 'पर्वतसेन' को प्रभु दुलहिनी राधा गोरी ॥४॥

❀ ७०५ ❀ बगीचा में भोग आये

❀ राग सारङ्ग ❀ हरि खेलत ब्रजमें फाग अति रसरंग बढ्यो । ब्रजयुवतिन मन अनुराग प्रबल अनंग चढ्यो ॥ ध्रु० ॥ उतते आई सकल साज सिंगार हार वर । गेंदुक हाथ उछारत लेत परस्पर । निडर भई डोले सबै हो राखत कछू न समार । मानो मद गज विपिन में हो मातो करत विहार ॥१॥ इत गिरिवरधर संग लिये गोपन कों आये । तेसोई बन्यो भेख भये हलधर मनभाये । कसे फेंट निकसे सबै हो लेत गुलाल अबीर । हिचकी हैं वे नायका हो देखत उनकी भीर ॥२॥ तब बोली मुरि तरकि करकि चंद्रावली तिनमें । हमें कछू वे कहे नाहिं ऐसो कोऊ उनमें । कुसुमन की डांडी गहे हो चलो क्यों न मिलि धाय । एक एक को पकरिके हो राखो बांध बंधाय ॥ ३ ॥ यह